ब्रज की लोक-कथाएँ :
एक अध्ययन

संकलन तथा संपादन

डा० ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक'

वृन्दावन शोध संस्थान
रमण रेती, वृन्दावन - २८११२१

0
प्रकाशक :
वृन्दावन शोध संस्थान
रमणरेती, वृन्दावन– 281 124

0
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

0

प्रथम संस्करण : 1995

0

मूल्य : सजिल्द : रु 0 180.00
पेपर बैक : रु 0 160.00

0
कम्प्यूटराइज्ड
वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन

0
मुद्रक :
अनुभा प्रिण्टर्स, मथुरा

दो शब्द

वृन्दावन शोध संस्थान ब्रज–संस्कृति की विभिन्न विधाओं को सुरक्षित और संरक्षित करने के लिए अपने प्रयासों में निरन्तर संलग्न है । एक ओर जहाँ इस संस्थान में प्राचीन पाण्डुलिपियों का संग्रहण, संरक्षण, शोध एवं प्रकाशन किया जाता है, वहीं दूसरी ओर ब्रज की सांस्कृतिक परम्पराओं को सुरक्षित रखने और साहित्य एवं संस्कृति–मर्मज्ञों को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न सांस्कृतिक समारोह आयोजित किए जाते हैं ।

संस्थान के संस्थापक–अध्यक्ष डॉ0 रामदास गुप्त ने समय–समय पर अपने संस्थान की ओर से विभिन्न महत् प्रकाशनों को स्वीकृत कर एक महान कार्य किया है । ब्रज की संस्कृति में यहाँ के पारम्परिक और लोक–मंगल की कामना रखने वाले भोले संस्कारों का विशेष महत्व है । ब्रज का लोक–साहित्य भी काफी समृद्ध है । ब्रजांचल के लोक संस्कारों में लोक–कथाओं की विशेष भूमिका है । ये लोक कथाएँ हमारी प्राच्य एवं मूलभूत संस्कृति को उद्घाटित करती हैं । इन कथाओं के महत्व को समझते हुए श्री ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक' को इस कार्य की प्रेरणा दी गई और यह ग्रन्थ प्रणीत किया गया ।

इस कार्य के पूर्ण होने में इस क्षेत्र के विभिन्न विद्वानों का सहयोग रहा है, जो प्रशंसनीय एवं सराहनीय है । इनमें लोक–साहित्य मर्मज्ञ डॉ0 प्रतापपाल जी शर्मा, वृन्दावन शोध संस्थान के श्री गोपाल चन्द्र घोष, श्री वृन्दावन बिहारी गोस्वामी, तथा प्रो0 कैलाश चन्द्र भाटिया, अलीगढ़ एवं डॉ0 नरेश चन्द्र बंसल, कासगंज के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है ।

प्रस्तुत ग्रन्थ को कम्प्यूटर पर प्रौसेस करने में संस्थान कर्मी श्री रजत शुक्ल का अप्रतिम सहयोग रहा है । अतः श्री शुक्ल हमारे धन्यवाद के पात्र हैं ।

आशा एवं विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ से पाठक लाभान्वित होंगे ।

भवदीया

श्रीमती पुष्पा ठकुरैल

पूर्व निदेशक,

वृन्दावन शोध संस्थान,

वृन्दावन

भूमिका

'ब्रज' के मूल में दो भाव हैं–गमन और व्यापि । जहाँ गमनार्थक 'ब्रज' को लिया जाता है वहाँ पर यह अभिप्रेत है कि वह प्रदेश जिसे भगवान श्री कृष्ण ने विभिन्न लीलाओं से पावन बनाया (गमनार्थ जगत् ब्रजत्) । जहाँ भगवान चलते हैं, लीला करते हैं, खेलते हैं, वहीं 'ब्रज' है । ब्रज गमन योग्य है, ब्रज जानने योग्य है, ब्रज ही गति (मोक्ष) है, गन्तव्य है । ब्रज ही प्राप्ति अर्थात् परम फल है । दूसरे व्यावहारिक अर्थ के अनुसार परब्रह्म इस पावन भूमि के अणु–अणु में इस प्रकार व्याप्त हैं, बसे हुए हैं, जिस प्रकार दुग्ध में घृत ।

यह ब्रजभूमि सत् एवं चित् व आनन्द स्वरूप परम ज्योति स्वरूप जीवनमुक्त मनीषी संतों की अहर्निश सेव्यस्थली है । श्रीकृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण ब्रज और श्रीकृष्ण पर्याय ही नहीं, अभिन्न हो गए । आज तक सर्वत्र इसी रूप में मान्य है । भारतवर्ष ही नहीं विश्व 'ब्रज' को इसी भाव से ग्रहण करता है । फलतः जब भक्तजन ब्रजयात्रा के लिए आते हैं तो यात्रा करते हुए पग–पग पर यही अनुभव करते हैं कि वह श्रीकृष्ण की विभिन्न यात्राओं को देखते चल रहे हैं । यही कारण है कि प्रतिभा सम्पन्न कविगण युग–युग से श्रीकृष्ण का गान इस रूप में करते आए हैं जैसे कि श्रीकृष्ण की लीलाओं को प्रत्यक्ष रूप में देखा हो, देख रहे हैं और उनके साक्षी हैं । अनेक उत्सव और त्यौहार जिनको ब्रज में मनाते हैं और उसके साथ कथा–कहानी जुड़ी है उनमें भी यही भाव है ।

ब्रजभूमि वह स्थल है जिसे श्रीभट्ट ने 'मोहिनी' रूप में स्वीकार किया है । जिस ब्रजभूमि में धेनु रूप धारण कर ब्रह्मानन्द प्राप्त कर तपस्वी आनन्द लाभ करते हैं उसका महत्व इस बात से ही सिद्ध हो जाता है कि जीव मुक्ति न चाह कर जनम–जनम तक यहीं रहना, बसना चाहता है :

जनम–जनम दीजौ मोहि याही ब्रज बसिबो ।

यही कारण है कि रसखान जैसे पठान की अभिलाषा यही थी कि अगर पत्थर भी बनूँ तो गिरिराज का अंश बनकर रहूँ :

पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जु कियौ हरि छत्र पुरंदन कारन ।

कोई भी भारतवासी देश के किसी भी कोने में बैठकर जो उत्सव–होली, जन्माष्टमी, अन्नकूट आदि मनाता है, वह यही समझता है कि श्रीकृष्ण के साथ भाव–जगत में सान्निध्य प्राप्त कर रहा है । परिवार में बालक की क्रीड़ाएँ उसे श्रीकृष्ण की क्रीड़ाओं का स्मरण कराती हैं ।

सोलह कलाओं से परिपूर्ण अलौकिक होते हुए भी श्रीकृष्ण सर्वसामान्य के लिए पूर्णतः लौकिक है, तब ही तो सुदामा ने सहज भाव से कह लिया कि–

खेलन में को काको गोसैयाँ ।

इस प्रकार जन–जन में व्याप्त श्रीकृष्ण अपने प्रेम में सबको बाँधे रखते हैं। जिसने श्रीकृष्ण को अपना लिया वह भवसागर से पार हो गया । यही भाव ब्रज के लोकजीवन में व्याप्त हो गया है । लोक–जीवन से संपृक्त समस्त साहित्य, कला, संस्कृति सब कुछ श्रीकृष्णमय है और यही भाव श्रीकृष्ण–रस प्रदान करता है जिसके अभाव में सब कुछ व्यर्थ है । श्रीकृष्ण रस ही ब्रजलोक में लबालब भरा है। जिसको भी श्रीकृष्ण के उस रस का आनन्द लेना है उसे 'ब्रजलोक' से सान्निध्य करना होगा, ब्रजभूमि में संचरण करना होगा, ब्रज की वनयात्रा सम्पन्न करनी होगी ।

ब्रज तो सहज सुख का स्थल है, लौकिक तथा पारलौकिक दोनों दृष्टियों से । जन–जन में समानता का भाव ही श्रीकृष्ण की लीलाओं का संदेश है । श्रीकृष्ण स्वयं गाँव के चरवाहे के रूप में हैं ।

'ब्रज–लोक' में 'लोक' का शाब्दिक अर्थ है–सर्व, सर्वजन, सब लोग अर्थात् वह जन समुदाय जहाँ सब लोग समान रूप से हैं, स्वतन्त्र हैं । सब लोग ही 'सर्व' में समाहित हैं और यही लोकजीवन है । 'सब लोग' जब, जहाँ और जिस रूप में अंतर की उमंग और तरंग को अभिव्यक्त करना चाहें, करें । यही लोकजीवन है । जी–भर के जीने की सहज, उन्मुक्त इच्छा और उसकी सहज अभिव्यक्ति ही लोक में व्याप्त रहती है । इस अभिव्यक्ति में सब ही समान हैं, ऊँच–नीच का भाव, बड़े–छोटे की कल्पना भी नहीं, जाति–धर्म का तो प्रश्न ही नहीं । समानता की यह भावना ही मूलतः लोक का आधार स्तम्भ है । 'लोक' वह है जिसमें व्यक्ति की निजी अस्मिता का कोई स्थान नहीं हैं, अगर है तो भी वहाँ नहीं । 'मैं' का विगलन ही लोक में होता है । लोक में व्याप्त सब कुछ 'लोक संस्कृति' का रूप लेती है ।

लोक में व्यक्ति मात्र का कोई महत्व नहीं, यद्यपि व्यक्ति–व्यक्ति सब लोग मिलकर ही उसका निर्माण करते हैं और उसके सभी क्रियाकलापों में पूरा–पूरा

योगदान करते हैं । यह चैतन्य लोक–चेतना ही सामूहिक सिद्धि की ओर अग्रसर होती है ।

लोक से सम्बद्ध साहित्य 'लोक–साहित्य' कहलाता है । किसी छोटे से क्षेत्र में किसी वर्ग विशेष की छोटी–सी, किंचित् मात्र स्थिति होते हुए भी लोकसाहित्य राष्ट्र की सम्पत्ति बन जाती है क्योंकि उसमें उसकी धड़कन होती है । यह प्रक्रिया इतनी व्यापक होती है कि समग्र मानव जाति की वह विरासत मानी जाती है जिसकी उपलब्धियों का सम्यक् आकलन करना हो तो उसके विभिन्न आयामों का विवेचन करना होता है, नृ विज्ञान, समाज विज्ञान, भाषाविज्ञान आदि अनेक शास्त्रों का सहारा लेना होता है । 'लोक' ही सामूहिक चेतना का स्रोत है । लोक, लोकजीवन, लोक–साहित्य, लोककला की अवहेलना कम से कम लोकतंत्र में संभव ही नहीं ।

लोक–साहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है जिसमें लोकगीत, लोकनृत्य, लोक–नाट्य, लोक–कहानियाँ, लोक–गाथा आदि समाहित हो जाते हैं । कथात्मक स्वरूप तो बहुत विस्तृत है । 'लोक–कथा' तो लोकमानस को प्रतिबिम्बित करती है । लोक–कथा ने मानव–मन और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही है । कथन–कहने का विकास ही 'कथा' है जिसके माध्यम से हम कुछ कहना चाहते हैं । कथाएँ अनेक प्रकार की हो सकती हैं–लोक, पुराण, पशु, परी, वीर, बाल, प्रेम, चौपाल, दादी–नानी, व्यंग्य–विनोद आदि । डॉ0 हरद्वारी लाल शर्मा के अनुसार :

> "लोक–कथा को लोकमानस की सृष्टि मानते हैं, और यह इस मान्यता के भीतर समा जाता है कि–लोक कथा में कथ्य बीज रूप में रहता है , जिसका अंकुरण लोक कथा में होता है, लोक कथा प्रतीकों के ताने–बाने से बनती है । लोक–कथा संस्कृति के गर्भनाल द्वारा समष्टि से जुड़ी होती है । "
>
> (लोकवार्ता विज्ञान, पृ0 335)

प्रतीक–रचना' इसके मूल में विद्यमान रहती है । प्रतीकात्मकता उसका विशिष्ट लक्षण है । जो कुछ सुनाई देता है उसके ऊपरी अर्थ के अंतस्तल में गंभीर अर्थ छिपा रहता है । लोक मानस की अभिव्यक्ति को जब कथ्य के रूप में रखा जाता है तो वह 'लोक–कथा' बन जाती है । लोक–कथाओं में लोक–मानस की अभिव्यक्ति कब किस–किस प्रकार होती है यह बड़ा गंभीर शोध का विषय है । बहुत सी लोक–कथाएँ एक समान लगती हैं पर उनमें बड़ा सूक्ष्म अंतर होता है । 'लोक–कथा' सुनाने वाली महिलाएँ अपनी–अपनी शैली में सुनाती हैं । कथ्य में भी कुछ न कुछ अंतर होता चलता है और अपनी क्षमता के अनुसार सरसता लाने के

लिए शैली में भी । लोक–कथाओं का शैलीगत अध्ययन भी किया जा सकता है जिस पर प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक ने स्वयं शोधकार्य प्रस्तुत किया है ।

'लोक कथा' और 'लोकगाथा' में कई दृष्टियों से अंतर है । यहाँ 'लोक गाथा' पर चर्चा संभव नहीं है । लोकगाथा विस्तृत होती हैं, ब्रज प्रदेश में अनेक लोकगाथाएँ गायी जाती हैं । 'लोक–कथा' कही जाती हैं जिसमें कोई न कोई शिक्षा भी निहित रहती है । लोक–कथाओं का जन्म लोक–जीवन से होता है । इन कथाओं का केन्द्र बिन्दु लोक–जीवन का अनुभव है जिसको नर–नारी अपनी प्रतिभा के अनुसार 'कथ्य' में बुन लेते हैं ।

ब्रजलोक–जीवन में वर्ष भर व्रत तथा अनुष्ठान संपन्न होते रहते हैं । प्रत्येक व्रत व अनुष्ठान के साथ लोक–कहानी तथा लोककला जुड़ी रहती है । डॉ0 सत्येन्द्र ने ब्रजभूमि के व्रतानुष्ठानों पर गहन कार्य संपन्न किया था और गंभीर शोध की संभावनाएँ स्पष्ट की थीं जिनसे प्रेरित होकर आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से सुश्री आशा शर्मा ने 'ब्रजक्षेत्र की व्रतानुष्ठानक कहानियों का अध्ययन' शीर्षक शोध प्रबंध पर सन् 1966 ई0 में पी–एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त की है ।

लोकमानस ने अज्ञात को जानने की चेष्टा की है । आश्चर्य मिश्रित भाव से वह जानने समझने की चेष्टा करता रहा है और इसके फलस्वरूप 'देवकथा–मिथक' का आर्विभाव हुआ । इसके लिए 'अवदान' का प्रयोग भी किया जाने लगा । डॉ0 व्रजवाल ने ऐतिहासिक रस प्रधान कथाओं को 'अवदान' की संज्ञा दी है । 'अवदान' का मूल अर्थ है –प्रशान्त कर्म (बीते हुए अच्छे काम) । अवदान कथाओं का उदय संस्कृति के साथ–साथ उसके नियामकों के प्रशस्त कर्मों के लिए होता रहता है । बुद्ध, महावीर, राम, कृष्ण आदि के साथ न जाने कितनी कथाएँ जुड़ गई हैं । जब इसमें ही कथा तत्व बढ़ा दिया जाता है और प्रतीक गूँथ दिए जाते हैं तो वही 'प्रतीकोपाख्यान' बन जाता है ।

'लोक–कथा' का एक और आवश्यक तत्व है–अभिप्राय (मोटिफ) । अभिप्राय वस्तुतः कला का शब्द है पर लोककथा का अनिवार्य तत्व अब हो गया है । धटना प्रधान लोककथा में अभिप्राय गुँथे रहते हैं । अभिप्राय सनातन होते हैं । स्टिथ थाम्पसन ने तो लोक कथाओं के 'अभिप्राय' पर गंभीर कार्य किया, जिससे प्रेरित होकर डॉ0 सत्येन्द्र ने स्वयं इस दिशा में गहन अध्ययन प्रस्तुत किया और कलकत्ता विश्वविद्यालय से डॉ0 सावित्री सरीन को और क0 मु0 हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा से सुश्री ललिता सिंह को इस दिशा में (अभिप्राय) शोधकार्य करवाये । ब्रज के संदर्भ में "ब्रज लोक कथाओं का कथानक' अभिप्राय" शीर्षक शोध प्रबंध पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सुश्री वीणा गोस्वामी को सन् 1989 में डी0फिल्0 की उपाधि प्राप्त हुई ।

ब्रज लोक–कथाओं के कुछ संकलन भी प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें से डॉ0 सत्येन्द्र का कार्य अग्रणी है । बाद में सस्ता साहित्य मंडल से (आदर्शजैन द्वारा संपादित) तथा भारत सरकार के प्रकाशन विभाग से (डॉ0 सरोजनी कुलश्रेष्ठ द्वारा संपादित) भी प्रकाशित हो चुके हैं । अभी बृहत् संकलन की प्रतीक्षा है ।

प्रस्तुत कृति में श्री चतुर्वेदी ने प्रथम भाग में 'लोक कथाओं का अध्ययन' तथा द्वितीय भाग में संकलन भी प्रस्तुत किया है । आशा है कि सुधी पाठक इससे लाभान्वित होंगे ।

डॉ0 कैलाश चन्द्र भाटिया
पू0 प्रोफेसर तथा अध्यक्ष,
हिन्दी तथा प्रादेशिक भाषाएँ
ला0 ब0 शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी
तथा
भू0 पू0 निदेशक, वृन्दावन शोध संस्थान,
वृन्दावन

प्राक्कथन

प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति प्रारम्भ से ही मुझे अनुराग रहा है । नगरीय सभ्यता की कृत्रिमता से दूर ग्रामीण अंचलों का स्वच्छ सुरभित समीर, निर्मल जल–प्रपातों के कल–कल निनाद तथा सोंधी सुवासित माटी से अंकुरित हरीतिमा की नैसर्गिक सुषमा से घिरा प्रदूषण रहित स्वच्छ पर्यावरण, इस जगत की नश्वरता से कहीं दूर अलौकिकत्व के चिरालोक के चिन्तन की ओर प्रेरित करता है । लोक–साहित्य इसं प्राकृतिकता का सहजोद्रेक है । इसमें औपचारिकता का आवरण नहीं अपितु सहजता का स्वाभाविक सौन्दर्य विद्यमान है । मानव जीवनं की स्वाभाविक मनोवृत्तियाँ तथा चिन्तनशीलता लोक–कथाओं में प्राप्त होती है । आत्मीय जनों को स्वस्थ, प्रसन्न तथा क्लेशमुक्त रखने की कामना तथा लालसा से ही व्रतोत्सवों की उद्भावना हुई है । माहात्म्य के रूप में कथाओं का कहा–सुना जाना इन व्रतोत्सवों में वांछनीय है । लोक मंगल की कामनाओं को आत्मसात् किये रहने के कारण ये कथाएँ पूजनीय, कथनीय तथा श्रवणीय हैं । लोक–कथाओं के इस मंगलकारी रूप ने ही मुझे इस क्षेत्र में अध्ययन करने की प्रेरणा दी ।

ब्रज की लोक–कथाएँ डॉ0 सत्येन्द्र की पुस्तक 'ब्रज का लोक–साहित्य' तथा 'पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ' इत्यादि में प्रकाशित हुई हैं । ब्रज–लोक में कथाओं का अपरिमित भंडार है । मैने अपनी इस पुस्तक में व्रतोत्सव संबंधी लोक–कथाओं को ही लिया है । जहाँ तक मेरे देखने में आया है, ये कथाएँ अन्यत्र प्रकाशित नहीं हो पायी हैं । बारहों महीने के विभिन्न व्रतों और पर्वों पर कही जाने वाली कथाएँ इसमें संग्रहीत हैं । इन कथाओं को पृथक भाग में दिया गया है तथा इनका विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन भूमिका भाग में प्रस्तुत किया गया है ।

यह पुस्तक दो भागों में बाँधी गयी है । प्रथम भाग के प्रथम अध्याय में लोक–साहित्य का परिचय देते हुए लोक–वार्ता और लोक–कथाओं के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । द्वितीय अध्याय में लोक–कथाओं का वर्गीकरण तथा तृतीय अध्याय लोक–कथाओं में प्राप्त सांस्कृतिक चेतना से संबंधित है । चतुर्थ अध्याय में इन कथाओं में उपलब्ध मानवेतर संस्कृति पर तथा पंचम अध्याय में मूल तत्वों या अभिप्रायों पर प्रकाश डाला गया है । छठवाँ अध्याय इन लोक–कथाओं की भाषा और शैली से संबंधित है तथा अन्त में उपसंहार है । द्वितीय भाग में मूल ब्रज–लोक–कथाएँ संग्रहीत हैं ।

प्रस्तुत ग्रंथ में जो लोक–कथाएँ प्रकाशित हैं उन्हें ब्रज के विभिन्न ग्राम्य अंचलों से एकत्र किया गया है । इस हेतु यहाँ के गाँवों की जिन ब्रज–वनिताओं से सहयोग प्राप्त हुआ है, उनका उल्लेख अनिवार्य है । उनमें हैं श्रीमती भू देवी,

नौरंगाबाद, श्रीमती गोपाली देवी, रैपुरा, श्रीमती लक्ष्मी देवी, हाथरस, इत्यादि । ग्राम माँट के श्री सुशील तिवारी से भी मुझे सहयोग प्राप्त हुआ है । मैं उन सभी का हृदय से आभारी हूँ ।

किसी भी ग्रन्थ का सम्पादन उसके प्रकाशन के बिना अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण है, क्योंकि प्रकाशित होने के पश्चात ही जन–सामान्य के अध्ययनार्थ उपलब्ध हो पाने की स्थिति में आ पाता है । वृन्दावन शोध संस्थान के संस्थापक–अध्यक्ष डॉ0 रामदास गुप्त ने इसे प्रकाशित कराने की प्रेरणा दी तथा इस कार्य का श्रीगणेश करवाया । मैं आदरणीय डॉ0 गुप्त के प्रति श्रद्धावनत हूँ ।

वृन्दावन शोध संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो0 कैलाश चन्द्र भाटिया का स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन मेरा आदर्श रहा है । डॉ0 भाटिया जी ने इस पुस्तक की भूमिका लिखी, इसके लिए मेरा उन्हें शत–शत नमन ।

संस्थान की पूर्व निदेशक श्रीमती पुष्पा ठकुरैल ने इस कार्य हेतु समय–समय पर प्रोत्साहित करने के अतिरिक्त अपने अमूल्य 'दो शब्द' लिख कर मुझे अत्यन्त अनुग्रहीत किया है ।

संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ0 नरेश चन्द्र बंसल तथा वरिष्ठ शोध सहायक श्री वृन्दावन बिहारी जी से समय–समय पर प्राप्त हुए मार्गदर्शनों से इसका कलेवर व्यवस्थित हो पाया, आपके प्रति नत मस्तक होना मेरा सौभाग्य है । इस ग्रन्थ के प्रणयन में लोक साहित्य के मनीषी आदरणीय कृष्णानन्द जी गुप्त, गरौठा (झाँसी) के बहुमूल्य पत्रों से तथा आई0ओ0पी0 वृन्दावन के डॉ0 प्रतापपाल शर्मा के निर्देशनों से मैने लाभ उठाया है । आप जैसे साहित्य–साधकों के समक्ष मैं श्रद्धावनत हूँ । इस हेतु पुस्तकालयाध्यक्ष श्री गोपाल चन्द्र घोष का मैं विशेष आभारी हूँ जिनके द्वारा प्राप्त शोधाधार महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथों से यह कार्य पूर्ण हो पाया ।

इस कार्य को कम्प्यूटर पर प्रौसैस करने के अतिरिक्त मुद्रण के समग्र प्रारूप को निर्धारित करने में संस्थान के कार्यकर्ता श्री रजत शुक्ला ने अपना अमूल्य योगदान पूर्ण मनोयोग से दिया, एतदर्थ मैं मित्र रजत जी का आभारी हूँ । अन्त में मैं अपने पिता श्री स्व0 मधुसूदन जी चतुर्वेदी की दिव्यात्मा को सादर नमन करता हूँ, जिनके द्वारा प्रदत्त आशीर्वादात्मक सुसंस्कारों से ही मेरी मनीषा साहित्य की ओर उन्मुख हुई ।

आशा करता हूँ कि अनजानी त्रुटियों को क्षमा कर सहृदय पाठक मुझ अकिंचन को अनुग्रहीत करेंगे ।

–ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक'

ब्रज की लोक–कथाएँ

अनुक्रम

भाग–1 पृ0 सं0

प्रथम अध्याय : लोक–साहित्य का परिचय 1–13

(क) लोक (शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ एवं विश्लेषण)

(ख) लोकवार्ता एवं लोक–साहित्य

(ग) लोक–साहित्य की विभिन्न विधाएँ

(घ) ब्रज की लोक–कथाएँ

द्वितीय अध्याय : लोक कथाओं का वर्गीकरण 14–22

(क) गद्य रूप में प्रचलित लोक–कथाएँ

(ख) पद्य रूप में प्रचलित लोक–कथाएँ

तृतीय अध्याय : ब्रजलोक–कथाओं में मानव–संस्कृति 23–38

(क) मानव–संबंध

(ख) धर्म

(ग) भक्ति

(घ) पूजन–सामग्री

(ड,) रीति–रिवाज

चतुर्थ अध्याय : ब्रजलोक–कथाओं में मानवेतर संस्कृति 39–50

(क) अलौकिक सत्ता

(ख) लौकिक सत्ता

पंचम अध्याय : ब्रजलोक–कथाओं के मूल तत्व (अभिप्राय) 51–58

(क) मूल तत्वों से आशय

(ख) विभिन्न मूल तत्व

षष्ठ अध्याय : ब्रजलोक–कथाओं की भाषा एवं शैली 59–66

(क) भाषा

(ख) शैली

उपसंहार 67–68

भाग–2

विभिन्न ब्रजलोक–कथाएँ 69–90

संदर्भ ग्रंथ सूची 91–93

अध्याय 1.

लोक–साहित्य का परिचय

सम्पूर्ण लोक में परिव्याप्त समग्र सांस्कृतिक परिवेश को चित्रित कर उसका प्रकाशन ही लोक–साहित्य का कार्य है । वस्तुतः लोक–साहित्य मानव–साहित्य का वह पूर्वज है, जिससे साहित्य की विभिन्न विधाओं का क्रमशः प्रणयन,पल्लवन तथा पुष्पन हुआ । इस लोक में जब मानव ने अपनी भावनाओं को कल्पना और यथार्थ के साथ सम्बद्ध कर किसी साहित्यिक विधा का प्रथम सूत्रपात किया होगा, वह आज के मानव कृत समस्त वाङ्मय–जगत् का प्रथम उद्भूत साहित्य रहा होगा । निश्चित ही उस प्रथम अंकुरित साहित्य का सृजन मानव ने अपनी कोमल, भोली, निरविकार और प्रत्यक्षदर्शी बुद्धि द्वारा प्रकृति की निर्मल भावभूमि में किया होगा । मौखिक एवं पारम्परिक रूप से वह साहित्य–धारा अद्यावधि प्रवाहित है । मानव ने अपने मस्तिष्क की चिन्तनशीलता के विकास के साथ ही साथ शनैः शनैः जीवन जगत् की लौकिक–अलौकिक सत्ताओं के तात्विक चिन्तन,गम्भीर मनन तथा दार्शनिक विश्लेषण के परिणामस्वरूप विभिन्न विषयों पर अपनी प्रज्ञा का आलोक उद्दीप्त किया और तब ज्ञान तथा विज्ञान की मीमांसा शोधों, अनुसंधानों तथा आविष्कारों के रूप में प्रकाशमान हुई । साथ ही साथ उसने अपने पूर्वज द्वारा प्रदत्त उस साहित्यिक–निधि की रक्षा भी की, जिसमें गम्भीर तात्विक चिन्तन तथा सूक्ष्म विश्लेषण के स्थान पर वही स्वतः स्फूर्त कोमल, भोली भावनाएँ तथा नैसर्गिक सुषमा–मण्डित, वाद–विवाद रहित स्वाभाविक सौन्दर्य विद्यमान है । इन परम्पराओं में बौद्धिक विश्लेषण के स्थान पर भावनामय रसानुभूति की प्रधानता है । इन परम्पराओं में 'कागज की लेखी' नहीं अपितु 'आँखिन की देखी' है । यह किसी विशेष सीमा से घिरे व्यक्तियों, पंडितों तथा दार्शनिकों अथवा वैज्ञानिकों के ही लिए नहीं, अपितु मानव–मात्र के लिए समान रूप से गृहणीय है । समग्र रूप से कहा जा सकता है कि यह लोक के सम्पूर्ण वर्ग का साहित्य है; इसी कारण यह लोक–साहित्य है ।

लोक–साहित्य के विधिवत् अध्ययन का प्रारम्भ हम 'लोक' शब्द के अर्थ के साथ प्रारम्भ करें तो अधिक उपयुक्त होगा ।

लोक

'लोक' शब्द संस्कृत के लोक् – दर्शन धातु में घञ प्रत्यय करने पर निष्पन्न हुआ है और इसका अन्य पुरूष एकवचन रूप लोकते होगा । इस कारण लोक शब्द का अर्थ देखने वाला होता है और जो जन–समुदाय इस कार्य को करता है अर्थात् देखता है वह लोक कहलाता है । [1]

इसी प्रकार 'हिन्दी शब्द सागर' में लिखा है कि ऐसा स्थान लोक है, जिससे देखने का बोध होता हो । [2] इसी में 'अव ' उपसर्ग लगकर अवलोकन शब्द हुआ है ।

'ऋग्वेद' में एक स्थान पर लोक शब्द का प्रयोग इस प्रकार हुआ है–

'नाभ्या आसीदंतरीक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन् ॥ [3]

अर्थात् ईश्वर की नाभि से अंतरिक्ष, मस्तक से स्वर्ग, चरणों से भूमि और कान से दिशाएँ व सम्पूर्ण लोकों की सृष्टि हुई।

'लोक' को पूर्ण वैज्ञानिकता से समझने के लिए हम इस विषय में दी गई परिभाषाओं के दो भाग करते हैं–प्रथम भाग वह है, जिसमें लोक को संकुचित अर्थ में प्रयुक्त किया है, दूसरे भाग में 'लोक' की व्याख्या व्यापक रूप में हुई है ।

लोक को संकुचित अर्थ में गृहण करने वालों में डा0 अम्बाप्रसाद 'सुमन' की परिभाषा हम लेते हैं । उन्होंने लिखा है –...."लोक शब्द का अर्थ उस अशिक्षित जन–समुदाय से संबद्ध है, जो गाँव अथवा नगर में रहता है और अपना सहज जीवन बहुत कुछ अपनी रूढ़ियों तथा परम्पराओं में व्यतीत करता है । [4]

लोक शब्द की व्युत्पत्ति अंग्रेजी के 'फोक ***Folk***' शब्द से हुई है, जिसे सर्वप्रथम डा0 वासुदेवशरण अग्रवाल ने फोकलोर का हिन्दी रूपान्तर लोकवार्ता शब्द करके प्रारम्भ किया था । [5]

'फोकलोर' शब्द सन् 1846 में विलियम जॉन टामस ने सामान्य जनता के रीति–रिवाज, रहन--सहन व अन्ध–विश्वासों के अध्ययन करने वाले शब्द 'फोक' से प्रारम्भ किया था । [6]

'फोक' शब्द का अर्थ एनसाक्लोपीडिया ब्रिटानिका में आदिम जाति के

उन व्यक्तियों से है , जिनसे उस समाज का निर्माण हुआ है । [7]

फोक शब्द जिसे आज लोक का पर्याय मान लिया गया है , के संबंध में भी साहित्यकारों ने आदिम व ग्राम्य सभ्यता का वाचक कहा है । जर्मन विद्वानों में ग्रिम बन्धु–विल्हेम ग्रिम तथा जैकब ग्रिम फोक को आदिम सभ्यता का ही स्थान स्वीकार करते हैं । [8]

अब हम लोक की व्यापक व्याख्या की ओर दृष्टिपात करेंगे । प्रायः सभी शब्दकोशों में लोक शब्द का अर्थ पृथ्वी लोक, स्वर्गलोक, पाताललोक से है, जिनमें सात हमारे ऊपर और सात नीचे चौदह विभाग हैं । इस प्रकार शब्दकोशों में इसका बड़ा व्यापक अर्थ दिया हुआ है । [9]

डॉ0 कैलाशचन्द्र भाटिया ने लिखा है–'लोक शब्द बड़ा व्यापक है, जिसका प्रचलन प्राचीन काल से मिलता है । परम्परा के साथ विशेषण रुप में इसका प्रयोग होता रहा है–लोक परम्परा और इसकी वैदिक परम्परा से कुछ भिन्न समझा जाता है । [10]

डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि लोक शब्द का अर्थ देहातों से नहीं लगाया जाना चाहिये । लोक तो नगरों और देहातों में बसी समस्त वह जनता है जो स्वतः स्फूर्त ज्ञान रखती है । [11]

डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते हैं– ' लोक हमारे जीवन का समुद्र है, जिसमें भूत–भविष्य व वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है । [12]

डॉ0 सरोजनी रोहतगी ने लोक शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है– "× × × लोक शब्द अंग्रेजी के फोक का पर्याय होते हुए भी उसकी संकुचित भावना से सर्वथा मुक्त है और उसका प्राचीन रुप पूर्व से ही हमारे यहाँ प्राप्त रहा है, जिसमें संस्कृत और परिष्कृत प्रथाओं से मुक्त पुरातन जीवन के दर्शन होते हैं एवं जिसका अपना निश्चित स्वरुप उपलब्ध होता है । [13]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि लोक शब्द का अर्थ विभिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से लगाया गया है । लोक के देखने वाले रूप को हम यहाँ इसलिये स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि यहाँ लोक शब्द को स्थान के रूप में

देखना है । प्रश्न यह है कि लोक को संकुचित दृष्टि से देखा जाय अथवा विस्तृत दृष्टिकोण से । जैसा कि प्राचीन काल से धर्म–ग्रन्थों में लोक का प्रयोग होता आया है और लोक एक सम्पूर्ण रूप माना गया है, चाहे वह पृथ्वीलोक हो, पाताल अथवा आकाश । हमारे सामने लोक शब्द एक सम्पूर्णता का नाम है, उसमें ग्राम्य सभ्यता या अशिक्षित जन–समुदाय ही नहीं नगरीय और शिक्षाविदों का भी निवास होता है । और यदि अंग्रेजी के फोक का अर्थ ग्राम्य जीवन से संबंधित है, तो मेरी दृष्टि में लोक 'फोक' का रुपान्तर भी नहीं हो सकता । यह बात अलग है कि लोक शब्द के अर्थ–संकोच के कारण आज ऐसा माना जाने लगा है ।

लोक तो एक सम्पूर्णता का नाम है, लोक तो जन–सामान्य के रहने के स्थान का नाम है, लोक तो उस चिर पुरातन विरासत का नाम है, जो जन–जन के उपयोग के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त है ।

लोकवार्ता व लोक–साहित्य

जैसा कि हम लोक का अर्थ स्पष्ट करते समय लिख चुके हैं कि लोकवार्ता शब्द 'फोकलोर' शब्द के लिए डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल ने चौरासी वैष्णवन की वार्ता तथा दो सौ बामन वैष्णवन की वार्ता के आधार पर निश्चित किया था । आज लोकवार्ता शब्द भी साहित्यकारों को 'फोक–लोर' का सही अनुवाद प्रतीत नहीं होता । लोक–वार्ता अंग्रेजी के 'फोकलोर' का रुपान्तर भी नहीं है । श्रीकृष्णानन्द गुप्त ने लिखा है– "अब पंचों को यह शब्द त्रुटिपूर्ण जान पड़े तो लोकशास्त्र अथवा कोई दूसरा शब्द चुन लिया जाना चाहिये । मैं सबसे पहले इसके लिए अपना वोट दूँगा ।[14]

अस्तु, हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि लोक–वार्ता शब्द अपने आप में क्या अर्थ रखता है । 'लोक–वार्ता' शब्द विशद अर्थ रखता है । इसके अंतर्गत वह समस्त आचार–विचार की सम्पत्ति आ जाती है, जिसमें मानव का पारम्परिक रुप प्रत्यक्ष हो उठता है और जिसके स्रोत लोक–मानस में होते हैं, वे लोक–मानस जिनमें परिमार्जन अथवा संस्कार की चेतना काम नहीं करती होती । लौकिक धार्मिक विश्वास, धर्म–गाथायें तथा कथायें, लौकिक–गाथाएँ तथा कथाएँ, कहावतें, पहेलियाँ आदि सभी लोक–वार्ता के अंग हैं ।[15]

लोक–वार्ता वस्तुतः आदिम मानव की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है, चाहे वह दर्शन, धर्म, विज्ञान तथा औषधि के क्षेत्र में हुई हो, चाहे सामाजिक संगठन तथा अनुष्ठानों में अथवा विशेषतः इतिहास, काव्य और साहित्य के अपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेश में ।[16]

'पितृ परम्परागत जीवन–यात्रा की पद्धति, जिन सामाजिक अनुष्ठानों, विश्वासों , विचारों तथा वाङ्मय से अपने अलौकिक प्रकाश को प्राप्त करती है, वह अंग्रेजी में "फोकलोर" है ।[17]

Legendry traditions which prevail among the people regarding themselves and their original beliefs and practices.

अर्थात मानव के प्राकृत विश्वास और प्रथाओं को यहाँ फोकलोर' माना गया है ।

लोक–वार्ता का ही एक अंग लोक–साहित्य है । क्योंकि लोकवार्ता मानव के स्वतः प्रेरित समस्त कार्य–कलाप, प्रक्रिया, विश्वास और मानसिक विचारों का समूह है और लोक–साहित्य मनुष्य की परम्पराओं और स्थूल अनुभवों की ऐसी अभिव्यक्ति है, जिसे कोई सीधा सादा या निरक्षर व्यक्ति समझ सके । वस्तुतः यह किसी वर्ग विशेष का साहित्य नहीं, यह तो जन–सामान्य का साहित्य है । भेदक रेखा तो अब खींच दी गई है, अन्यथा कभी तो यही साहित्य था तब, जबकि मानव ने स्वतः स्फूर्त ज्ञान प्राप्त किया होगा । आज से सहस्रों वर्ष पूर्व तो यही साहित्य सब कुछ था । वास्तविकता तो यह है कि लोक–साहित्य ही आज के साहित्य का जन्मदाता है । उस साहित्य का, जिसे शिष्ट–साहित्य माना जाता है ।

विलियम जॉन टॉमस तथा जर्मन विद्वान ग्रिम बंधु आदि ने लोक–साहित्य को गाँव के व्यक्तियों का साहित्य, अशिष्ट साहित्य, असभ्य लोगों का साहित्य कहा है ।

यद्यपि लोक–साहित्य मात्र ग्रामीणों का साहित्य नहीं है, तथापि यह तो कहेंगे कि लोक–साहित्य का अर्थ आज उसी पुरातन समय के साहित्य से लिया जाता है, जब आज की तार्किकता– वैज्ञानिकता नहीं थी । परन्तु यदि ऐसा

है, तो हमारे समक्ष लोक–साहित्य के दो पक्ष उभर कर आते हैं । पहला वह पक्ष जिसमें मानव के पुरातन विश्वास, प्रथाएँ इत्यादि जीवित हैं। दूसरे वह लोक–साहित्य जिसमें समयानुसार मँहगाई, बेरोजगारी, स्थानीय समस्याएँ आवश्यकताएँ एवं देश–भक्ति इत्यादि की समस्त भावनाएँ जुड़ गई हैं और इस कारण लोक–साहित्य प्रथाओं व परम्पराओं से मुक्त होने के साथ–साथ ग्रामीणता को व अनपढ़पन को पूर्णतः नकार चुका है । आज वह लोक–साहित्य मात्र भाषा और पद्धतियों के आधार पर अमुक क्षेत्र का लोक–साहित्य है, ऐसा जाना जाता है ।

इस प्रकार लोक–साहित्य लोक में फैला वह साहित्य है जो लोक–जीवन को पूरी आस्था और विश्वास के साथ उसके प्राचीनतम रूपों की रक्षा करता हुआ अभिव्यक्त करता है । वैसे यह भी एक सत्य है कि लोक–साहित्य आज ग्राम्य–साहित्य के रूप में रूढ़ हो चुका है ।

लोक–साहित्य की विभिन्न विधाएँ

मानव में जब चेतना ने जन्म लिया, जब से वह अपने मस्तिष्क का खुले रूप में उपयोग करने लगा, तब से ही उसका चिन्तन भी प्रारम्भ हुआ और इसी चिन्तन ने शनैः शनैः जो रूप ग्रहण किया, वही आज लोक–वार्ता व लोक–साहित्य के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हुआ । लोक–साहित्य गद्य व पद्य दोनों रूपों में प्राप्त होता है ।

इसकी विधाओं को इस प्रकार समझा जा सकता है

(अ) लोक–गीत

(ब) लोक–कथा

(स) लोक–नाट्य और

प्रकीर्ण (मुहावरे, लोकोक्ति, कहावतें, पहेलियाँ आदि)

(अ) लोक–गीत

लोक–मानस से परम्परागत स्वतः स्फूर्त गीत लोक–गीत कहलाते हैं । ये लोक–गीत लोक–साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति मौखिक व परम्परा से चलते हैं । समाज के विभिन्न लोगों द्वारा विभिन्न अवसरों पर गाये जाते हैं । बच्चे के जन्म से मृत्यु पर्यन्त सोलह संस्कारों के गीत व अन्य यथासमय मनोरंजन आदि के गीत होते हैं, जिनको क्रमबद्ध रूप से वर्गीकृत किया जा सकता

है–

संस्कार गीत– बच्चे का जन्म होते ही उसके साथ संस्कार जुड़ जाते हैं । नामकरण, छठी, मुण्डन, यज्ञोपवीत, सगाई, लग्न, विवाह, गौना, सुहागरात इत्यादि संस्कारों पर लोक–गीत भी उसी प्रकार के गाये जाते हैं ।

धार्मिक अवसरों पर– धार्मिक अवसरों के गीत भिन्न प्रकार के होते हैं । इनमें त्यौहार व व्रत–उपवास आदि से संबंधित गीत गाये जाते हैं ।

मनोरंजन के गीत– इन गीतों के द्वारा लोक–मानस अपने विश्राम के क्षणों को मनोरंजन व आह्लादपूर्ण बनाता है । रसिया, ढोला, आल्हा व अन्य प्रकार के लोकगीत इस श्रेणी में आते हैं ।

वीर–गाथा– प्राचीन वीरों के वीरतापूर्ण कार्यों के गीत इस श्रेणी में लिए जा सकते हैं ।

ऋतुओं के गीत– फागुन, श्रावण इत्यादि के अवसरों पर ऋतु–गीत गाए जाते हैं । इन गीतों में उस ऋतु का वर्णन किया जाता है ।

राष्ट्रीय चेतना के गीत– समय व परिस्थितियाँ बदलने के साथ ही लोकगीतों के स्वरुप में परिवर्तन व सुधार हुआ है । अब लोकगीतों में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती है ।

विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले अन्य गीत – इस श्रेणी में आते हैं वे गीत जिन्हें समाज के विभिन्न समुदायों द्वारा विभिन्न सम–सामयिक अवसरों पर गाया जाता है । इनमें भीख माँगने, चक्की से पीसने, अन्य श्रम कार्य करने, खेलने, बच्चों को सुलाने के समय लोरी के रुप में गाए जाने वाले, मेलों व अन्य अवसरों के गीत सम्मिलित किये जा सकते हैं ।

(ब) लोक–कथा–

लोक–मानस जो कुछ करता, देखता, सुनता है, उन्हीं परिस्थितियों व घटनाओं को कल्पना व भावना से जोड़कर कथात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है इसे ही लोक–कथा कहा जाता है । इनका विवरण आगे दिया जा रहा है ।

(स) लोक–नाट्य–

लोक–गीत व लोक–कथाएँ गायी व कही जाती हैं, जबकि लोक–नाट्यों में गीत, संगीत, नृत्य आदि के साथ अभिनय भी किया जाता है । लोक–

नाट्यों में संवाद अधिकांश गेय होते हैं । भाषा उसी क्षेत्र की रहती है । लोक–नाट्यों के निम्नलिखित प्रकार होते हैं–

1–धार्मिक लोक–नाट्य

(अ) रास लीला

(ब) राम लीला

(स) अन्य धार्मिक नाट्य

2–श्रृंगारिक लोक–नाट्य

(अ) स्वांग

(ब) नौटंकी

(स) नाच

3–अन्य सामाजिक लोक–नाट्य

इन समस्त लोक–नाट्यों में मानव के परम्परागत स्वरूप के दर्शन होते हैं । यदि वह धार्मिक लोक–नाट्य है, तो रासलीला (कृष्णलीला) व रामलीला (मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की लीला) इत्यादि के रूप में भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है । यदि श्रृंगारिक लोक–नाट्य है तो अनुशासनहीन स्वच्छन्द रूप से मनोरंजन होता है और यदि सामाजिक व अन्य प्रकार का लोक नाट्य है तो उसमें राजा–रानी या ऐतिहासिकता लिए हुए अन्य पात्रों की कहानियाँ देखने को मिलती हैं ।

प्रकीर्ण साहित्य–

लोक–साहित्य की चतुर्थ विधा के रुप में प्रकीर्ण रूप से प्राप्त मुहावरे, लोकोक्तियाँ, कहावतें, पहेलियाँ इत्यादि सम्मिलित किये जा सकते हैं । मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि विभिन्न अवसरों पर प्रयुक्त किये जाते हैं । प्रहेलिकाओं का अपना विशेष महत्व होता है, जिन्हें विश्राम के क्षणों में लोग आपस में एक दूसरे की बुद्धि की परख करने के लिए पूछते हैं । इसके अतिरिक्त प्रकीर्ण रूप में जादू–टोना, जन्तर–मन्तर व लोक में प्रचलित अन्य रूढ़ियाँ व विश्वास सम्मिलित किये जा सकते हैं ।

इस प्रकार मनुष्य के जीवन पर आधारित सभी पक्षों का निरूपण

लोक–साहित्य की इन विधाओं में हमें दृष्टिगोचर होता है । यही लोक–मानव के हृदय से स्वतः स्फूर्त चिन्तन के लोक–वार्ता रुपी वृक्ष की शाखा–प्रशाखाएँ हैं, जिनमें कहीं भावात्मकता है, कहीं लोक–मंगल की कामना विद्यमान है, तो कहीं ऐसे अन्धविश्वास भी है, जिन्हें प्राचीन काल में किसी प्रकार मान लिया गया हो, आज के धरातल पर अवश्य हानिकारक व अनावश्यक प्रतीत होते हैं । वैसे यह तो मानना ही होगा कि इनमें सभी स्थानों पर मानव मात्र की भलाई सन्निहित है ।

लोक–कथाएँ–

हमारे पूर्वज आदि मानव ने जब अपनी विकास यात्रा प्रारम्भ की तो वह जीवन के हर क्षेत्र को ध्यानपूर्वक समझने लगा और अपनी उस समझ को कुछ सत्य और कुछ भावनाओं व कल्पनाओं का सहारा लेकर एक–दूसरे से अभिव्यक्त करने लगा । इसी प्रकार अपनी कल्पनाओं को एक मनोरंजक दिशा देकर सत्य से जब उसने जोड़ा तो वे कहानियाँ या कथाएँ कहलायीं । इनमें लोक की बातों का ही उल्लेख होता था । सूक्ष्म वैचारिक अभिव्यक्ति इनमें नहीं थी । अतः हमने इन्हें लोक–कथाओं का नाम दिया ।

हमारे देश में अनेक प्रकार की लोक–कथाएँ हमें प्राप्त होती हैं, जो प्राचीनकाल से अब तक कई मोड़ों को पार करती अनेक रूपों में विभक्त होती हुई विपुल संख्या में देखी जा सकती हैं । लोक–कथाओं की प्राचीनता को ढूँढते हुए अन्वेषक ऋग्वेद के उन सूक्तों तक पहुँच कर रुक गये हैं, जिनमें कथोपकथन के माध्यम से सम्वाद सूक्त कहे गये हैं ।[18] 'वेद' विश्व साहित्य की प्राचीनतम पुस्तक है । तो यह तो सहज ही सिद्ध हो जाता है कि कथाओं का प्रारम्भ भारत में ही हुआ । पाश्चात्य जगत के प्राचीन कथा–साहित्य से परिचित विद्वानों को यह बताने की आवश्यकता नहीं।[19] इसी भारत भूमि के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद से ही पुराणों, उपनिषदों, रामायण–महाभारत इत्यादि से क्रमशः यात्रा करती हुई लोक–कथाएँ आज हमारे सामने प्रस्तुत हैं । डॉ0 सत्येन्द्र लिखते हैं कि वेदों की बीज–कहानियाँ ही पुराणों की कथाओं में पल्लवित पुष्पित हुई हैं । इन कथाओं के मूल प्रायः वेदों में देखे जा सकते हैं ।[20] आगे डॉ0 सत्येन्द्र ने लिखा है कि उदाहरण स्वरुप वैदिक बीज

वरुण को ही लिया जाय तो राजा हरिश्चन्द्र (सत्य हरिश्चन्द्र) व आगे चलकर सत्यनारायण की कथा का भी मूल यही वरुण था ।[21] वरुण ब्रज की कथाओं में दानव का रूप लेकर आया है ।

पंचतंत्र, हितोपदेश, वृहद् श्लोक–संग्रह , वृहत्कथा मंजरी, कथा–वेताल, पंचविंशति आदि का मूल लोक–जीवन है । जातक–कथाएँ अत्यन्त प्राचीन हैं और इनकी संख्या भी 550 के लगभग बताई जाती हैं, परन्तु लोक–कथाएँ निर्धारित संख्या में नहीं हैं।[22]

इसके पश्चात् प्राकृत भाषा में जैनियों का प्रथम काव्य स्वयंभू कृत "पउम चरिउ" लिखा गया । इस तरह लिखित रूप में वैदिक संवाद–सूक्तों से प्रवाहित कथाधारा निरन्तर प्रवाहित हो रही है ।

डॉ0 सत्येन्द्र ने अपनी पुस्तक 'ब्रजलोक–साहित्य का अध्ययन' में वैदिक कहानियों से लेकर आज की प्रचलित सभी कहानियों का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया है । इस पुस्तक के अनुसार वैदिक संस्कृत, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश से होती हुई कहानियों ने हिन्दी भाषा में अपना स्वरूप निर्धारित किया । हिन्दी में सिंहासन वत्तीसी, बैताल पच्चीसी, माधवानल काम कंधला, कथा चारदरवेश, हितोपदेश, माधव–विनोद, शुकवहत्तरी प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं ।

इस प्रकार हिन्दी में इन सभी कहानियों का रूपान्तर हुआ और कहानियों व कथाओं के अच्छे खासे संग्रह रसरत्न (1616 ई.) आदि पुराण (1867 ई.) महापद्मपुराण (1766 ई.) कृष्णदत्त रासा (1844 ई.) चित्रावली (सं. 1613) इत्यादि के नाम से हमें प्राप्त होते हैं । प्रत्येक संग्रह में अनेक कहानियाँ हैं।

ये समस्त कथाएँ वेदों से लेकर सभी युगों में यात्रा करती हुई, अनेक परिवर्तनों व विकास के मोड़ से गुजरने के बाद आज हमारे समक्ष लोक–कथाओं के रूप में एक बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित होती हैं । आज लोक–कथाओं की इतनी संख्या है, कि यदि समस्त भारत वर्ष की लोक–कथाओं व कहानियों का संग्रह किया जाय तो एक अति विशाल संग्रह तैयार होगा ।

ब्रज की लोक–कथाएँ

लोक–कथाओं की दृष्टि से ब्रज का बहुत महत्वपूर्ण स्थान लोक–

साहित्य के क्षेत्र में है । जैसाकि हम पहले लिख चुके हैं कि लोक कहानियों की उत्पत्ति भारत में हुई । यहाँ यह भी प्रकट कर देना होगा कि भारत में भी "ब्रज भूमि" ही ऐसा क्षेत्र है, जहाँ से कहानियाँ सम्पूर्ण भारत में व पाश्चात्य देशों में सर्वत्र व्याप्त हुई है । हमारे प्रचलित कहानी ग्रन्थ, पुराण व धर्मशास्त्र इत्यदि समस्त सामग्री को दृष्टिगोचर करने से यही विदित होता है कि ब्रजभूमि ही मौलिक कहानियों की उद्भाविका थी ।[23] तथापि अन्य देशों से भारत में व भारत के अन्य प्रदेशों से भी कथाएँ यहाँ आई हैं ।

ब्रज का क्षेत्र काफी विस्तृत है व अनेक प्रकार की लोक–कथाएँ व कहानियाँ यहाँ सुनी जा सकती हैं । भाषा–परिवर्तन के स्थानों के मध्य व दूसरे प्रदेशों से मिली सीमाओं पर कुछ अन्तर इन कहानियों में हमें दृष्टिगोचर होता है, परन्तु फिर भी यह बड़ा सूक्ष्म अन्तर होता है, इसके मूल में निहित सारांश लगभग एक सा ही रहता है ।

लोक–कथाएँ लोक–साहित्य के अन्तर्गत आती हैं और लोक साहित्य लोक–वार्ता का एक अंग है । लोक में जो कहा सुना जाता है, जैसी उस लोक की अर्थात् उस स्थान की परम्परा होती है, वे सभी लोक–साहित्य के माध्यम से लोक–गीत, लोक–गाथा, लोक–कथा व लोक–मंच इत्यादि के रूप में हमें दृष्टिगोचर होती हैं । लोक–कथाओं के द्वारा हम उस स्थान विशेष की जो विशेष परम्परायें होती हैं, उनका अवलोकन करते हैं । ब्रज की लोक–कथाओं में हमें इसी लोक–जीवन के अनेक प्रकार के रूप सुनने को मिलते हैं ।

जैसा कि हिन्दी विश्वकोश में लिखा है–

"लोकगीतों की भाँति लोक–कथाएँ भी किसी सीमा को स्वीकार नहीं करती । अंचलों की बात को जाने दीजिए, कथाएँ देशों और महाद्वीपों की सीमाएँ पार कर गई है ।[24] लोक–कथाओं में हर क्षेत्र में लगभग एक सी ही विशेषताएँ होती हैं । लोक–कथाएँ सुखान्त होती हैं, दैविक व प्राकृतिक प्रकोपों का वर्णन इनमें मिलता है । नायक को इनमें कथनी के आंरम्भ से ही प्रकट कर दिया जाता है । मनोरंजन व समन्वय का एक गहरा मिश्रण वहाँ मिलता है, जहाँ पशु–पक्षी व जीव–जन्तुओं की भाषा मानवों जैसी हो जाती है । इस प्रकार की सभी विशेषताएँ हमें ब्रज की लोक–कथाओं में भी प्राप्त होती हैं । लोक–कथाओं के

बीच–बीच में श्रोतागण 'हूँकारी' देते हैं । एक बात यह है कि इन लोक–कथाओं की (व्रत व पूजन के संबंध में) समाप्ति पर वक्ता यह कहता है कि "जैसौ अमुक कूँ भयो (अच्छा परिणाम) वैसौ सबकूँ होय ।" श्रीकृष्णानन्दजी गुप्त के अनुसार ऐसी प्रत्येक कहानी लोक–कथा के स्वरूप को प्राप्त नहीं कर सकती । उनके अनुसार –"अधिकांश कथाओं को तोड़मरोड कर व्रतों के अनुकूल बना लिया गया है । यानि हम जो विशेष कामना करते हैं उसकी पूर्ति होती हुई उस कथा में दिखाई जाती है, जैसा कथा में व्रत विशेष को रखने से हुआ, वैसा सबको हो. यह सब लोक–पुजारियों की गढ़ी हुई चीजें हैं ।[25] किन्तु मेरा विनम्र मत इस बात के सर्वथा भिन्न है । वस्तुतः लोक–कथाओं की रचना, उनका कथन एवं श्रवण करना, ये समस्त पक्ष इन्हें लोक की भावनात्मक संस्कृति से सम्बद्ध करते हैं । लोक–विश्वास, लोक मान्यताएँ–परम्पराएँ और श्रद्धाभक्ति समन्वित रीतियाँ इत्यदि का सम्बन्ध भी मानव की उन भावनाओं से होता है, जिनमें अपनी, अपने समाज की, अपने अंचल की और अपने क्षेत्र–विशेष की सुख–समृद्धि की स्वस्तिक–कामना उसके मनोजगत में रहती हैं, इसलिए वह अपनी भोली और विकार रहित बुद्धि से उसके ऊपर मँडराने वाली व्याधाओं के निवारणार्थ धार्मिक आयोजन करता है । इस प्रकार इन आयोजनों के साथ संबंधित देवता की कथा सुनाकर परिणाम के अनुसार अपनी मंगल–कामना का उद्घोष कर वह उस देवता से यह निवेदन करता है कि "हे देव ! मेरी व मेरे समस्त समाज की, अपितु सभी की रक्षा ऐसे ही कीजिए जैसे प्रस्तुत कथा में आपने अमुक की रक्षा की है । " ये परम्परागत नैष्ठिक भावनाएँ हैं, लोक–पुजारियों की गढ़ी हुई चीजें नहीं हैं ।

पाद–टिप्पणियाँ

1. डॉ0 सरोजनी रोहतगी–अवधी का लोक साहित्य., पृ0–1
2. श्याम सुन्दर दास–हिन्दी शब्द सागर, भाग–8, पृ–4319
3. दामोदर सातवलेकर–ऋग्वेद संहिता, 10/90/14, पृ–707
4. भगवान सहाय पचौरी–ब्रज–भारती, पृ0–25
5. डॉ0 सत्येन्द्र–ब्रजलोक–साहित्य का अध्ययन, पृ0–1
6. श्याम परमार–भारतीय लोक–साहित्य, पृ0–13
7. डॉ0 सरोजनी रोहतगी–अवधी का लोक–साहित्य, पृ0–2
8. वही
9. महेन्द्र चतुर्वेदी व भोलानाथ तिवारी–व्यावहारिक हिन्दी अंग्रेजी कोश पृ0–681
10. भगवान सहाय पचौरी–ब्रजभारती, पृ0–13
11. जनपद त्रैमासिक, अंक–1, पृ0–66
12. सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति विशेषांक, पृ0–65
13. डॉ0 सरोजनी रोहतगी–अवधी का लोक साहित्य , पृ0–3
14. श्री कृष्णानन्द गुप्त, ब्रजभारती, लोक–साहित्य विशेषांक, पृ0–13
15. डॉ0 सत्येन्द्र– ब्रजलोक–साहित्य का अध्ययन, पृ02
16. श्याम परमार–भारतीय लोक–साहित्य, पृ0–14
17. जे0कॉल्सन–एनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी, पृ0–1055
18. रामप्रसाद त्रिपाठी–हिन्दी विश्वकोश,भाग–10,पृ0330
19. बलदेव उपाध्याय–वैदिक कहानियाँ, पृ0–7
20. डॉ0 सत्येन्द्र–ब्रजलोक–साहित्य का अध्ययन,पृ0356
21. रामप्रसाद त्रिपाठी–हिन्दी विश्वकोश,भाग–10, पृ0330
22. डॉ0सरोजनी रोहतगी–अवधी का लोक–साहित्य, पृ055
23. डॉ0सत्येन्द्र–ब्रजलोक–साहित्य का अध्ययन,पृ0381
24. डॉ0सत्येन्द्र–ब्रज की लोक–कहानियाँ (भूमिका से)
25. श्री कृष्णानन्द जी गुप्त द्वारा भेजे एक पत्र से (निज–संग्रह)

अध्याय 2.

लोक–कथाओं का वर्गीकरण

किसी भी साहित्य के क्रमबद्ध व व्यवस्थित अध्ययन के लिए वर्गीकरण एक महत्वपूर्ण साधन है । वस्तुतः किसी भी विषय के विवेचनात्मक अध्ययन में वर्गीकरण का महत्वपूर्ण योगदान रहता है । जिस प्रकार किसी यन्त्र को पूर्णरूपेण समझने के लिए उसके समस्त पुर्जों को खोलकर उसका विभाजन करना पड़ता है, उसी प्रकार साहित्य के मूल उद्देश्य को गहराई तक समझने के लिए अनिवार्य है कि उसे वर्गीकृत करके जाना, समझा जाय ।

ब्रज–लोक–कथाओं के वर्गीकरण के संबंध में बहुत–सी बातें कही जा सकती हैं । अब तक लोक–कथाओं का जो वर्गीकरण विभिन्न विद्वानों द्वारा किया गया है, वह इस प्रकार है ।

हिन्दी विश्वकोश में लोक–कथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है [1]

(1) उपदेशात्मक (2) सामाजिक
(3) धार्मिक (4) प्रेम–प्रधान लोक–कथाएँ
(5) मनोरंजन संबंधी (6) जातीय कथाएँ

डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय लोक–कथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार करते हैं [2] –

(1) उपदेश कथा, (2) व्रत कथा,
(3) प्रेम कथा, (4) मनोरंजन कथा,
(5) सामाजिक कथा और (6) पौराणिक कथा

डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी ने स्थूल रूप से कहानियों का वर्गीकरण अग्रलिखित प्रकार से किया है[3] –

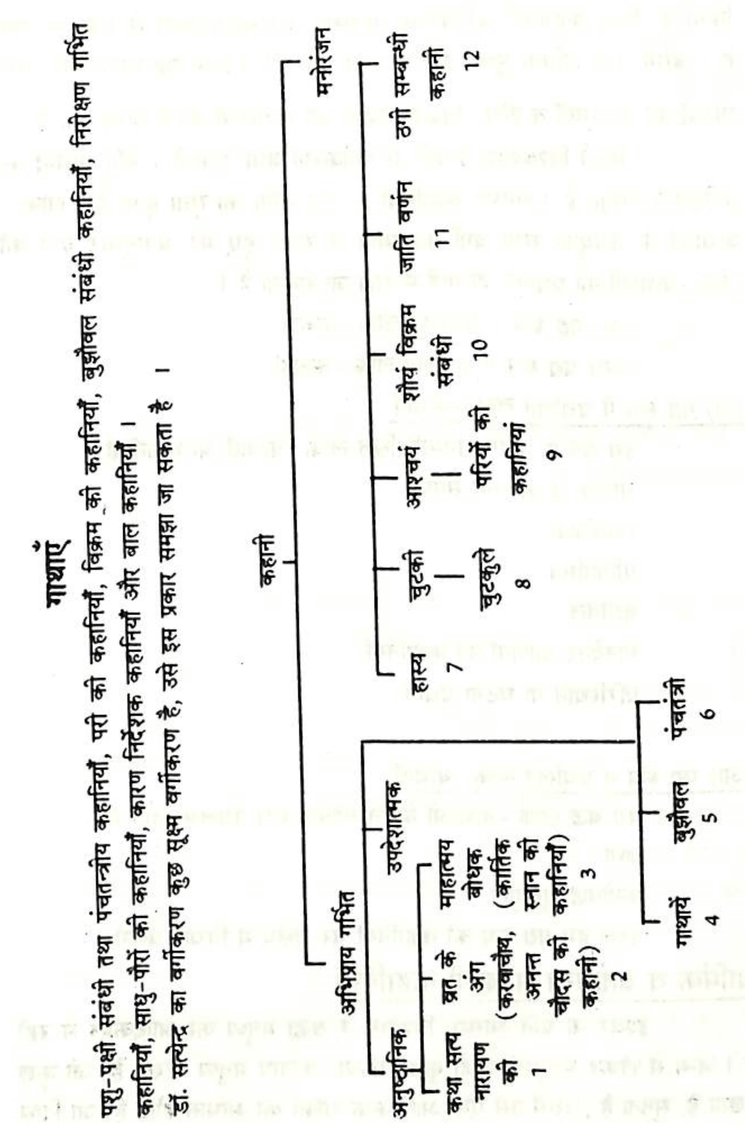

गाथाएँ

पशु-पक्षी संबंधी तथा पंचतन्त्रीय कहानियाँ, परी की कहानियाँ, बुझौवल संबंधी कहानियाँ, निरीक्षण गर्भित कहानियाँ, साधु-पौरों की कहानियाँ, कारण निर्देशक कहानियाँ और बाल कहानियाँ ।

डॉ. सत्येन्द्र का वर्गीकरण कुछ सूक्ष्म वर्गीकरण है, उसे इस प्रकार समझा जा सकता है ।

इस वर्गीकरण के अतिरिक्त डॉ0 सत्येन्द्र ने एक वर्गीकरण और प्रस्तुत किया है, जिसे कहानियों की वयस्क अवस्था और बाल्यावस्था से समझाया गया है । इसमें कुछ अधिक सूक्ष्म रूप देने का प्रयास है । इसमें यह वर्गीकरण गाथा, परियों की कहानियाँ व शौर्य–विक्रम इत्यादि की कहानियाँ करके दिया गया है ।[4]

हिन्दी विश्वकोश इत्यादि में वर्गीकरण बँधा हुआ है । डॉ0 सत्येन्द्र का वर्गीकरण विस्तृत है । लगभग कहानियों की हर सीमा को छूता हुआ है । लोक–कथाओं के उपर्युक्त सभी वर्गों को ध्यान में रखते हुए मेरे मतानुसार ब्रज की लोक–कथाओं को प्रधानतः दो वर्गों में रखा जा सकता है ।

(अ) गद्य रूप में प्रचलित लोक–कथाएँ

(आ) पद्य रूप में प्रचलित लोक–कथाएँ

(अ) गद्य रूप में प्रचलित लोक–कथाएँ:

इस वर्ग के अंतर्गत निम्नलिखित लोक–कथाएँ आ सकती हैं–

धार्मिक व व्रतोत्सव संबंधी

सामाजिक

ऐतिहासिक

बुझौवल

मानवेतर प्राणियों की कहानियाँ

परिस्थिति या घटना प्रधान

(आ) पद्य रूप म प्रचलित लोक–कथाएँ

पद्य बद्ध लोक–कथाओं के निम्नांकित रूप उपलब्ध होते है –

गाथा

छन्दोबद्ध चुटकुले

पहले हम गद्य रूप की कहानियों पर संक्षेप में विचार करेंगे ।

धार्मिक व व्रतोत्सव सम्बन्धी कहानियाँ

ईश्वर के प्रति आस्था, विश्वास व श्रद्धा मनुष्य को आदिकाल से रही है । जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जो कुछ क्रिया–कलाप मनुष्य करता है, जो कुछ देखता है. सुनता है., उसमें उसे ऐसी अलौकिक शक्ति का आभास होता है, जो दिव्य

और शाश्वत है तथा मनुष्य उसी के हाथ का एक खिलौना है । इसी मानसिक विचार–समूह से ईश्वर को केन्द्र विन्दु बनाकर कथाएँ तैयार कर ली गयीं । धार्मिक कहानियाँ उपदेशात्मक होती हैं और दान, पुण्य, तीर्थ इत्यादि का इनमें वर्णन होता है । इसी से संबंधित एक कहानी है–'पुन्न की जर हरी' । इस कहानी में पुण्यात्मा को कैसा फल प्राप्त होता है, इसका वर्णन है । धार्मिक ग्रन्थ, पुराण आदि इनके आधार होते हैं । देवी–देवताओं की कहानी भी इसी के अंतर्गत आती हैं ।

डॉ0 सत्येन्द्र की पुस्तक 'ब्रज की लोक कहानियाँ' में देव कहानियाँ दी गई हैं, जिनमें कर्म–लक्ष्मी कौ बाद, नारद, धर्म व शनिश्चर इत्यादि की कहानियाँ संग्रहीत हैं ।[5]

व्रतोत्सव संबंधी कथायें शुभ–अशुभ परिणामों व कामना पूर्ति से संबंधित होती हैं । ये कथाएँ भी उपदेशात्मक होती हैं । इनकी चर्चा विस्तृत रूप से अगले अध्यायों में की जा रहीं है।

सामाजिक कहानियाँ

समाजिक कहानियाँ समाज के सम्पूर्ण क्रिया–कलापों को लेकर चलने वाली कहानियाँ हैं । इन कहानियों में राजा व रानी अधिकतर दिखाई देते हैं । किसी राजकुमार को देश निकाला दे दिया जाना व किसी साधु महात्मा द्वारा कोई मन्त्र इत्यादि बतलाना, फिर उस राजकुमार का किसी अन्य देश की राजकुमारी से विवाह करके लौटना इनमें देखा जा सकता है ।

समाज के नित्यप्रति के क्रिया–कलापों को विविध रूप से प्रस्तुत किया जाता है । किसी स्त्री द्वारा अपने देवर को ताना मारना और फिर उस देवर का किसी अत्यन्त सुन्दर युवती से विवाह का निश्चय करके निकल पड़ना भी इनमें दृष्टिगोचर होता है ।

ऐतिहासिक

इतिहास की घटनाओं को कथा रूप देकर जो कहानियाँ कही जाती हैं, वे ऐतिहासिक कहानियाँ होती हैं । इन कहानियों में इतिहास सम्मत कोई घटना होती है । एक राजा का किसी दूसरे के साथ युद्ध, राज्य हड़पना इत्यादि का वर्णन इस

प्रकार की कहानियों में प्राप्त होता है । लम्बे कथानक वाली विभिन्न घटनाओं की लम्बी कहानियों के अतिरिक्त छोटे–छोटे चुटकुले जैसी कहानियाँ भी इसी वर्ग में आती हैं । जैसे अकबर और बीरबल और के हँसी–मजाक के छोटे–छोटे चुटकुले । इन कहानियों में ऐतिहासिक राजा–महाराजा नायक व पात्र होते हैं ।

बुझौवल

बुझौवल शब्द की उत्पत्ति 'बूझ' शब्द से है । बूझ का अर्थ होता है, बूझना अर्थात जानना । इन कहानियों में कुछ समस्याएँ दी होती हैं, जिनका समाधान अपेक्षित होता है । कहानी के ही किसी पात्र द्वारा कोई समस्या उठाकर उसमें से कुछ प्रश्न उठाये जाते हैं, जिनका समाधान उसी कहानी के किसी अन्य पात्र द्वारा कराया जाता है । इन कहानियों को एक प्रकार की पहेली के रूप में भी लिया जा सकता है ।

डॉ0 सत्येन्द्र बुझौवल–कहानियों में युधिष्ठिर और सारस यक्ष की पौराणिक कहानी की चर्चा करते हैं । 'इस घटना में युद्धिष्ठिर एक यक्ष द्वारा पूछी गई पहेली को बताकर अपने भाइयों को पुनरूज्जीवित करवाते हैं । ब्रज में एक बुझौवल संबंधी छोटी–सी कहानी कही जाती है, जिसमें एक स्त्री दुकानदार से उड़द के भाव मालूम करना चाहती है, जबकि उड़दसिंह उसके पति का नाम होता है । पति का नाम नहीं ले सकने के कारण वह संकेत द्वारा कहती है–

"स्याम बरन मुख उज्जल कैते । "

अर्थात् श्याम रंग के सफेद मुख वाले पदार्थ का क्या भाव है, तो दुकानदार इसे समझकर उत्तर देता है –

"रामन सीस मन्दोदरी जेते । "

अर्थात रावण के दस सिर, एक मन्दोदरी का सिर अर्थात् ग्यारह सेर एक रुपये के हैं । वह स्त्री इसे समझ कर कहना चाहती है कि मैं इनको फटक कर खरीदूँगी–

"हनुमान पिता कर लऊँ । "

हनुमान पिता अर्थात पवन, तो मै इन्हें पवन में उड़ाकर, साफ करके लूँगी, तो दुकानदार ने भी शर्त रखी कि यदि ऐसा है तो मैं भी इन्हें दस सेर एक

रूपये में दूँगा–

"राम पिता कर दऊँ"

राम के पिता दशरथ अर्थात् दस सेर के ही मिल पायेंगे । इसी प्रकार अन्यान्य कहानियाँ इस वर्ग के अन्तर्गत आती हैं, जिनमें कुछ समझने का, कुछ बूझने का भाव होता है ।

मानवेतर प्राणियों की कहानियाँ

इन कहानियों के दो भाग किये जा सकतें हैं–

पशु–पक्षी, जीव–जन्तु इत्यादि संबंधी

अलौकिक शक्तियों, परी, दाने इत्यादि संबंधी पशु–पक्षियों की कहानियाँ अधिकतर बच्चों को बहलाने के लिए कही जाती हैं, इन कहानियों में तोता, चिरइया, चैंटी, कुत्ता , बिल्ली इत्यादि की कहानियाँ होती हैं । इन कहानियों का प्रारभिक दिग्दर्शन प्राचीन पंचतंत्र की कहानियों में ही हो जाता है । पंचतंत्र की कहानियाँ उपदेशात्मक भी हैं । इसी प्रकार इन में भी अधिकांश कहानी कोई शिक्षा देकर जाती हैं ।

इन कहानियों में से कुछ ऐसी भी हैं, जिनके आधार पर कहावतें तक चल निकलती हैं । ब्रज में एक कहावत है–" जब स्यार की मौत आवै, तौ बो सहर में भागै" इस कहावत की पृष्ठभूमि में एक कहानी है, जिसमें कुत्तों द्वारा सियारों को जंगल में भगा दिया जाता है, व यदि वे शहर में वापस आने का प्रयत्न करते हैं, तो कुत्ते उन्हें भगा देते हैं ।

मानवेतर प्राणियों में परी, दाने इत्यादि अलौकिक शक्तियों से पूर्ण जीव भी आते हैं । किसी–किसी कहानी में मनुष्यों को दाने से लड़ता हुआ बताया जाता है, जिसमें दाने को हरा दिया जाता है । किसी कहानी में कोई राजकुमार परदेस जाता है तो दो राक्षसियाँ उसे मक्खी बनाकर अपनी दीवार पर चिपका देती हैं । कहीं–कहीं राक्षस की आत्मा किसी पक्षी में बन्द हो जाती है और जब उस पक्षी अथवा पशु को मारा जाता है, तो वह राक्षस भी समाप्त हो जाता है । इसी प्रकार परियों इत्यादि की कहानियाँ भी कही जाती हैं ।

परिस्थिति तथा घटना प्रधान कहानियाँ

सामयिक घटनाओं व विभिन्न परिस्थितियों से सम्बद्ध कहानियाँ इस

वर्ग में आती हैं । इस वर्ग में हास्य, ठगी, वीरता, इत्यादि से संबंधित कहानियों को शामिल किया जा सकता है ।

ठगी से संबंधित एक कहानी ब्रज में प्रचलित है । जिसमें तीन ठग नौ कत्थकों को नचाते हैं, कत्थक नाचते तो हैं, परन्तु अपनी गायकी से मस्त हुए ठगों की पिटाई करके भाग जाते हैं । नाचते व गाते समय कत्थकों द्वारा यह कहा जाता है –

"बैरगिया नालौ जुलम जोर ।
नौ कथक नचामत तीन चोर ॥
जब तबला बाजै धीन–धीन ।
तब एकु–एकु पै तीन–तीन ॥"

अर्थात् नौ कत्थकों को तीन चोर बैरगिया नाले में नचा रहे हैं । जब तबला बजता है तभी नौ कत्थक उन तीनों चोरो (ठगों) पर कूद पड़ते हैं । एक–एक ठग को तीन–तीन कत्थक दबोच कर मारते हैं । इस प्रकार वे ठगों से छुटकारा पाते हैं ।

(ब) पद्य रूप

कहानियों के गद्य रूप के बाद कुछ ऐसी कहानियाँ भी होती हैं, जिनमें गेयता होती है । ऐसी दो प्रकार की कहानियाँ होती हैं ।

(1)लोक–गाथाएँ (2) छन्दोबद्ध चुटकुले

लोक गाथाओं को अंग्रेजी में बैलेड कहा जाता है । यह होती तो कहानी ही है, परन्तु इनमें गेयता रहती है । इन्हें एक प्रकार का खण्डकाव्य अथवा महाकाव्य माना जा सकता है ।

लोक–गाथाओं में प्रेम–संबंध, वीरता, व अद्‌भुत तत्वों से सम्बद्ध कोई कथानक होता है । अधिकतर राजा–रानी इनके नायक या पात्र होते है । यह गाथायें अपने आप में सम्पूर्णता को लेकर चलती हैं । जिकड़ी तथा ढोला इत्यादि इसी के अंतर्गत आते हैं । जिकड़ी तथा ढ़ोला आदि लोक परम्पराएँ लोक साहित्य की सशक्त एवँ पर्याप्त लोकप्रिय विधाएँ हैं तथा स्वयं में अलग से शोध की अपेक्षा रखती हैं । देवी जागरण की प्राचीन परम्परा के अतिरिक्त राँझा, तथा जोगी गीत

आदि भी कथात्मक रूप में ही गाये जाते रहे हैं । वैसे स्वांग या भगत भी गाथा का एक प्रकार माना जा सकता है । इनमें अमरसिंह राठौड़, गोपीचंद–भरतरी इत्यादि प्रसिद्ध हैं ।

लोक–गाथाओं के अतिरिक्त दूसरी पद्य रूप की जो कथाएँ होती हैं, उनमें छन्दबद्ध चुटकुले आते हैं । इनमें पात्र आपस में छन्दों में बात करते हैं । अधिकांश बच्चों के मन बहलाव की होती हैं । उदाहरणार्थ एक कहानी के अंर्तगत एक राजा के द्वारा किसी बच्चे को एक केसर के फूल के बदले उसकी बहन को ले जाकर बगुली बना देने पर उसका भाई कहता है–

"ऐं री ऐं री बगुली ताल की,
तेरौ रोबै राजकुमार ।
कित ऊगै, कित आँथियै,
कहाँ तुम्हारौ गाम ।
तब वह बगुली अपने भाई से कहती है–
ऐं रे ऐं रे भइया पापिया,
तैनै माँग्यौ केसर फूल ।
दीनी राजा भोज कूँ,
जो पटकी ऐसे तीर ।

इसके पश्चात् उसके भाई द्वारा बगुली के सिर में ठुकी कील निकाल देने पर वह पुनः लड़की बन जाती है । इसी प्रकार आपस में छन्दमय अभिव्यक्ति करने वाली अन्य कहानियाँ लोक में प्रचलित हैं ।

पाद टिप्पणियाँ

1. रामप्रसाद त्रिपाठी–हिन्दी विश्वकोश, भाग–10,पृ0332
2. कृष्णदेव उपाध्याय–लोक–साहित्य की भूमिका,पृ0 129,
3. डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी–ब्रज–लोक साहित्य और संस्कृति, पृ0 52
4. डॉ0 सत्येन्द्र–ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन,पृ0 76–77
5. डॉ0 सत्येन्द्र–ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन, पृ0 428

अध्याय 3.

ब्रजलोक कथाओं में मानव–संस्कृति

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है । जो कुछ गतिविधि समाज की होती है, तत्संबंधित साहित्य में हमें ज्यों की त्यों दृष्टिगोचर हो जाती है । व्रतों व पर्वोत्सवों की कथाएँ उस क्षेत्र के समस्त रीति–रिवाज, रहन–सहन, संस्कृति, आतिथ्य, धर्म, भक्ति और आमोद–प्रमोद इत्यादि को अपने आप में आत्मसात् करती दिखाई पड़ती है । मानव अपने जीवन में जो कुछ करता है, जो कुछ उसकी भावनाएँ और उसके विचार होते हैं, उन्हीं की कुछ ऐसी अनुभूति उसके मानस पटल पर होती है कि उसके मस्तिष्क में एक घटना को जोड़ता हुआ उसका मानचित्र तैयार हो जाता है । उसी मानचित्र को जब घटनाओं की क्रमबद्धता के साथ वह किसी के समक्ष उपस्थित करता है, तो उसे कहानी कहा जाता है । धार्मिक मान्यताओं व अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति किसी कामना विशेष के साथ जिन कहानियों में होती है, उन्हें व्रत–कथा कहा जाता है । मनुष्य ने जो कुछ भी किया होगा, वही उस कथा का सूत्र होगा । जिस प्रकार बच्चे अपने बड़ों को कुछ कार्य करते देखते हैं तो उसी से संबंधित उनके आपस में खेल होते हैं । कोई राजा बनता है, कोई रानी अथवा एक वर बनकर दूसरी बच्चों को कन्या बनाकर आपस में विवाह के खेल खेलते हैं । उस समय बच्चों के मस्तिष्क में अपने देखे–सुने कार्यों का एक मानचित्र सा रहता है, उसी को एक टूटी–फूटी घटना बनाते हुए अपने खेलों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं । इसी प्रकार मनुष्य अपनी कामना–भावना को तृप्त करने के लिए अपनी ही प्रवृत्तियों को क्रमशः सूत्र में पिरोता हुआ एक कथा तैयार करता है । मानव–जीवन और उसकी संस्कृति के सभी तत्व इनमें विद्यमान रहते हैं ।

मानव–संबंध

मानव–समाज में व्यक्तियों के आपस में विभिन्न प्रकार के संबंध होते हैं । परिवार या कुटुम्ब के सभी सदस्य आपस में किसी न किसी संबंध से एक दूसरे मे जुड़े होते हैं । जैसे–पिता–पुत्र, माता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–बहन, सास–बहू, देवर–भाभी इत्यादि । लोक–कथाओं में कहीं इन संबंधों में मधुरता, प्रगाढ़ता व आत्मीयता देखी जा सकती है, तो कहीं ईर्ष्या–द्वेष, जलन इत्यादि की भावनाएँ व्यक्त होती हैं । कहीं–कहीं तो पूरी की पूरी कहानी संबंधों के ऊपर ही आश्रित देखी जा सकती हैं । इनका हम निम्नवत् अध्ययन करेंगे ।

भाई–बहिन का संबंध

ब्रज की लोक–कथाओं में भाई–बहिन के संबंधों को लेकर बहुत–सी कथाएँ प्राप्त होती हैं । इन कथाओं में भैया–दूज, नागपंचमी आदि पर्वोत्सवों पर कही जाने वाली कथाएँ अतिशय महत्वपूर्ण हैं । भाई अपनी बहिन को बहुत प्यार करता है तथा बहिन भी भाई पर प्राण उत्सर्ग के लिए तैयार रहती है । अधिकांश कहानियों में भाई व बहिन आपस में इतनी दूर रहते हैं कि मिले हुए बहुत समय व्यतीत हो जाता है । मिलने पर बहिन भाई का स्वागत–सत्कार करती है, फिर एक नागिन के क्रोधित होने पर भाई की सुरक्षा के लिए ढाल की तरह से उसके साथ–साथ रहती है । हर आने वाली कठिनाइयों, विपत्तियों से अपने भाई का बचाव करने के लिए स्वयं को पागल घोषित कर देती है । इकलौते भाई की पूरी सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेती है ।[1]

भइया–दौज की कथा के अतिरिक्त करवा चौथ की कथा में भी भाई–बहिन के प्रेम का उल्लेख आता है । भाई अपनी बहिन को इतना चाहते हैं कि उसके बिना खाना नहीं खाते । करवा चौथ के दिन बहिन का व्रत होने पर भी उसे एक चलनी में दीपक रखकर घने पेड़ के पीछे से चंदा दिखाना चाहते है, फिर इसी कारण व्रत–भंग होने पर उस बहिन का पति यद्यपि मर जाता है । नाग पंचमी की कथा में एक सर्प की प्राण रक्षा करने के कारण वह सर्प उस स्त्री का धर्म–भाई बन जाता है । उसकी हर प्रकार से सहायता करता है । समय पड़ने पर उसे मायके बुलाता है ।[2] इसी प्रकार बहिन भैया पाँचैं की कहानी में भी नाग को ही

भाई मानती है । उसकी झूठी सौगन्ध कभी नहीं खाती । बहिन का अपने भाई से गहरा व अटूट प्रेम हमें देखने को मिलता है । भावनात्मक पृष्ठभूमि पर आधारित इस प्रेम का बड़ा उच्च स्वरूप इन कथाओं में मिलता है । इनके अतिरिक्त कहीं–कहीं किसी कहानी में इसका विपरीत संबंध भी देखने को मिलता है । एक कहानी ब्रज में प्रचलित है, बुझौवल संबंधी । उसमें कहा जाता है–" होते की बहन, अनहोते कौ भइया" अर्थात् समृद्धि होने पर ही बहिन भाई से प्रेम करती है अन्यथा नहीं । गाज की कथा में यह बात चरितार्थ होती है ।[3] इस कथा में राजा पर रानी के गाज न धारण करने पर विपत्ति आती है । उसका धन–धान्य समाप्त हो जाता है तो वह जंगल में निकल जाता है । इस दशा में वह अपनी बहिन के यहाँ पहुँचता है तो वह बहिन उसे पिछले दरवाजे से अन्दर बुलाती है । खाने को बाजरे की रोटी देती है । तात्पर्य यह है कि वह अपने भाई से उतना प्रेम नहीं रख पाती जितना उसके समृद्धशाली होने पर था । इस प्रकार भाई–बहिन के आपसी संबंधों के हर रूप सुने जा सकते हैं । तथापि बहिन व भाई का शुद्ध सात्विक प्रेम अधिकतर कथाओं में व्यक्त किया होता है ।

मामा–भान्जे का संबंध

अधिकतर मामा का अपने भान्जे के प्रति विशेष अपनत्व रहा है । ऐसा इन कहानियों का अध्ययन करने से पता चलता है । शिव–पार्वती की सोमवार की एक कहानी में इस प्रकार की ही कथा है ।[4] इसमें एक बच्चे को उसका मामा काशी पढ़ाने ले जाता है । इसी से काफी कुछ मिलती–जुलती हरछट की भी कहानी कही जाती है । दोनों कथाओं में मामा का भांजे के प्रति बहुत स्नेह दृष्टिगोचर होता है ।

सास–बहू का संबंध

सास बहू का संबंध अत्यन्त सम्मानपूर्ण व वात्सल्यमय होता है किन्तु यह एक कटु सत्य है कि सास और बहू की आपस में कम ही निभ पाती है । इनके संबंधों में अधिकतर दरार पाई जाती है । बहू सास को खुशहाल नहीं देख सकती व सास बहू को । वे आपस में एक दूसरे को परेशान करने में लगी रहती हैं । लोक–कथाओं में भी यह बात देखने को मिलती है । भैया पाँचै की कथा में

अपने नाती द्वारा झाड़ू की सींकें फैला दिये जाने के कारण सास बहू को ताना मार कर कहती है कि क्या तेरा भाई दे जायगा सोने की सींक । फिर एक सर्प उसका भाई बन कर उसकी सहायता करता है । इसी प्रकार शनिवार की कहानी में एक बहू सास को गाय के खूंटे पर तेल चढ़ाने से रोकती है । सास घर से निकल जाती है । कार्तिक स्नान की एक कहानी में तो बहू सास के कार्तिक स्नान के लाभ से ईर्ष्या कर अपनी माँ को कार्तिक स्नान के लिए प्रेरित करती है । परन्तु उसकी माँ भगवान से कपट करने के कारण शूकरी बन जाती है ।[5] वैसे कहीं–कहीं अच्छा संबंध भी देखने को मिलता है ।

दौरानी–जिठानी का संबंध

दौरानी व जिठानी का संबंध एक ऐसा संबंध होता है, जिसमें पूर्वकाल से अब तक कहीं–कहीं ही मधुरता दिखाई दी हो । इसका एक कारण रहा है । भारत में हमेशा से संयुक्त परिवार की प्रथा रही है । इस प्रथा में कुटुम्ब के सभी परिवार एक साथ रहते, खाते–पीते हैं । जैसे किसी कुटुम्ब में चार भाई हैं तो चारों के पत्नी–बच्चे इत्यादि साथ ही रहें । इसमें होता यह था कि हर व्यक्ति एक दूसरे के साथ एक तालमेल वाली स्थिति नहीं बना पाता, जिसके कारण पूरा तारतम्य बिगड जाता है । कभी काम के ऊपर, कभी पैसे के ऊपर लोगों में अनबन रहती है । कहीं–कहीं असंयुक्त परिवार में भी यह दुर्भावना बनी रहती है । अधिकतर दौरानी व जिठानी में खींचतान होती है । ब्रज लोक–कथाओं में भी यह दृष्टिगोचर होता है । आपस में ताने देना इन लड़ाइयों की मुख्य जड़ होती है । जब कोई छोटी सी बात भी अपने प्रतिकूल होती दिखाई देती है तो जलन–कटन भरे ताने आरोपित किए जाते हैं । अहोई अष्टमी की कथा में एक स्त्री से भूल से स्याहू के अण्डे बच्चे कट जाते हैं । स्याहू भी हर बार उसके बच्चे ले जाती है । वह स्त्री बेचारी दुखी रहती है, रोती है तो उसकी दौरानी–जिठानी बजाय उसे सान्त्वना देने के उससे सदरोमनी कहके ताने–मारने लगती हैं । नाग पंचमी की कथा में भी एक स्त्री के कोई भाई नहीं था । एक सर्प उसका भाई बन जाता है । उसे खूब धन–धान्य देता है, उसकी जिठानी यह सहन नहीं कर पाती और उसे ताने देती है कि अगर तेरा भाई ऐसा ही है तो उससे सोने की झाड़ू मंगवा । वह भाई सोने की झाड़ू भी उसे लाकर देता है ।

सकट चौथ की कथा बड़ी मनोरंजक और दौरानी–जिठानी के आपसी मतभेद का एक अच्छा उदाहरण है । इस कथा में जिठानी अमीर और दौरानी निर्धन थी । दौरानी अपनी जिठानी के घर चौका–बासीदे का काम करती । सकट चौथ पर गणेश जी की उसके ऊपर कृपा होती है तो वह जिठानी भी जल–भुनकर अगली सकट को ढोंग रचाकर निराहार उपवास करने का नाटक करती है । गणेश जी द्वारा उसे इसका दण्ड मिलता है ।

बुआ–भतीजे का संबंध

बुआ–भतीजे का खून का रिश्ता होता है । बुआ पिता की बहन होती है । दूर अपनी ससुराल में रहती है । कभी–कभी अपने मायके जाने पर ही भाई–भतीजों से मुलाकात हो पाती हैं । दूर रहने पर वैसे भी स्नेह का आधिक्य रहता है । लोक–कथा में भी इस संबंध को आत्मीयता का द्योतक माना गयां है । दूबरी सातें की एक कथा में बुआ द्वारा अपने भतीजे की हर आने वाली व्याधा को रोकने की कहानी है । इसमें एक बुआ को किसी स्त्री (दूबरी) द्वारा बतलाया जाता है कि उसके भतीजे को विवाह के समय कई बार बाधाओं से गुजरना पड़ेगा । बुआ सभी आने वाली बाधाओं पर तीक्ष्ण दृष्टि रखते हुए अपने भतीजे को इससे बचाती है ।

पति–पत्नी–संबंध

पति–पत्नी का आपसी संबंध ब्रज की व्रतोत्सव संबंधी लोक–कथाओं में बहुत आत्मीय मिलता है । अपने पति को उसकी पत्नी बहुत चाहती है । विपत्ति आने पर उसका साथ देती है । कहीं–कहीं तो पत्नी का पातिव्रत धर्म इतना उच्चकोटि का हो जाता है कि पति की मृत्यु होने पर भी उसको पुनः जीवित कर देती है । प्राचीनकाल में सावित्री ने अपने पति सत्यवान को जीवित कर लिया था । इसी प्रकार ब्रज की करवा चौथ की कथा में भी वह पत्नी अपने पति को पुनः जीवन–दान दिला देती है । ".यही कथा देश के अन्य भागों में भी प्रचलित है । सोमवार की कथा में भी इसी प्रकार एक धोबिन,अपना सुहाग दूसरी स्त्री को दे देती है । इसके पश्चात वह पातिव्रत धर्म के प्रभाव से अपने पति को जीवित कर लेती है ।[7] पत्नी द्वारा पति की रक्षा व उसके मरने पर अपने पतिव्रता होने के प्रभाव

द्वारा पति को धर्मराज के पास से भी ले आना इन कथाओं का अपना एक आदर्श होता है । सोमवार की कथा में शिव–पार्वती की पूजा–आराधना करके सौभाग्य प्राप्ति का उल्लेख है । पृष्ठभूमि में यह है कि पार्वती जी सौभाग्य प्रदात्री हैं । इसी को मानकर महिलाएँ सावन के सभी सोमवार के व्रत रखती हैं । हर सोमवार की अपनी एक अलग कथा कही जाती है ।

मुख्य बात यह है कि इन व्रत–कथाओं की स्त्रियाँ अपने पति पर आने वाली हर मुसीबत का सामना करने को तैयार रहती हैं । पति को परमेश्वर मानने की उनकी एक परंपरा व प्रथा ही रही है । पति का अपनी पत्नी के प्रति कहीं–कहीं अच्छा रूख नहीं । पत्नी की भाँति पति उसके कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकता । पत्नी को स्वयं से हीन समझने, मारने–पीटने की परंपरा काफी पूर्व से ही था, ऐसा लगता है । पत्नी अपने पति की पूरी सहायता करती है । अपना जीवन तक उसकी खुशी में समर्पित कर देती है, परन्तु पति महाशय पत्नी की जरा सी भूल–चूक का उससे निर्दयता पूर्वक बदला लेते हैं । अधिकतर कथाओं में ऐसा दृष्टिगोचर होता है । सकट चौथ की कथा इसका प्रमाण है । पत्नी अपने पति की गरीबी की वजह से कहीं नौकरी करती है, पर जरा सी भूल उसकी पिटाई का कारण बन जाती है ।[8]

इसके अतिरिक्त एक व्यक्ति के दूसरे से अन्य कई प्रकार के सबंधों की भी विवेचना देखने को मिलती है । राजा के अपनी प्रजा के साथ अधिकतर अच्छे संबंध मिलते हैं । आसमाई की कथा में राजकुमार द्वारा स्त्रियों के मटके फोड़ देने के कारण प्रजा को दुखी न देख सकने वाले राजा ने उसे देशनिकाला दे दिया । फिर आसमाई के आशीर्वाद से वह सम्पन्न होकर वापस लौटा था । कार्तिक स्नान की कथा में एक बुढ़िया के कृष्ण भगवान के साथ पुत्रवत्संबंध होते हैं । कृष्ण भगवान को वह अपना बेटा मानती है ।

धर्म

धर्म वह मूल तत्व अथवा धारा है, जिससे यह समस्त सृष्टि संचालित हो रही है । व्यापक रुप से धर्म में समन्वय और सामंजस्य भी होता है और विविधता भी । जीव मात्र के अपने–अपने विविध धर्म होते हैं । यहाँ पर हमारा तात्पर्य मानव धर्म से है । जो कथाएँ मानव धर्म की स्थापना और पुष्टि करते हुए

लोक की भाषा में हमें रंजित और निदेशित करती हैं, ये वे लोक–कथाएँ हैं । अतः धर्म इन कथाओं का आधारभूत तत्व हैं । हम जिन लोक–कथाओं का अध्ययन कर रहे हैं, वे व्रत–पूजन व पर्वोत्सव से संबंधित लोक–कथाएँ है । कोई भी व्रत रखा जाता है तो उसमें एक कामना निहित होती है । उस कामना की पूर्ति किसी अलौकिक देवता द्वारा कराई जाती है । किसी आध्यात्मिक या धार्मिक लक्ष्य से किसी कामना की पूर्ति के लिए कोई विशेष दृढ़ निश्चय करने तथा कुछ विशेष वस्तुओं के त्याग का नाम व्रत है । प्रायः अन्न त्याग को ही लोग व्रत मान लेते हैं किन्तु यह तो उपवास है और व्रत का एक पहलू मात्र है । अतः अलग–अलग व्रतों में अलग–अलग प्रकार का एक निश्चय कर लिया जाता है । उस समय उस व्यक्ति में धार्मिक भावना रहती है, उस कामना विशेष की पूर्ति हेतु वह संबंधित देवता से प्रार्थना करता है कि मेरा अमुक कार्य हो जाय । इसके लिए किसी व्रत में दिन–भर निराहार रहना होता है, किसी में एक समय भोजन करना होता है । किसी व्रत में नमक नहीं खाया जाता तो किसी व्रत में यह निश्चय करना पड़ता है कि रात्रि को चन्द्रमा अर्थात् चन्द्र देवता के दर्शन करके उसे अर्घ्य देकर भोजन किया जायगा इत्यादि । अधिकतर महिलाएँ ये व्रत करती हैं । इसमें मनुष्य की भावना मुख्य भूमिका निभाती है । यदि धार्मिकता की भावना मनुष्य में होगी तो वह सारे नियमों का पालन करके उस व्रत को रखेगा, परन्तु जहाँ धार्मिक भावना का अभाव होगा, वहाँ व्यक्ति नियमानुसार भक्ति व श्रद्धा के साथ व्रत नहीं कर पायेगा और तब लाभ के बजाय देवता के रूष्ट होने पर हानि की अधिक सम्भावना रहती है। लोक–विश्वास है कि भगवान को कभी धोखा नहीं दिया जा सकता । सकट चौथ की कथा में दौरानी की देखादेखी उसको धन–दौलत प्राप्त होने के कारण जिठानी धार्मिकता की भावना से पृथक होकर उस व्रत को करती है, तो उसे उसका बुरा परिणाम भुगतना पड़ता है ।

ईश्वर व अलौकिकत्व के प्रति श्रद्धा एंव विश्वास से धार्मिक भावना का उदय होता है । ईश्वर से श्रद्धा एंव उसके अस्तित्व व उसकी शक्ति और प्रभावशीलता के प्रति विश्वास होने पर ही मनुष्य उसे पूजता है, उसकी भक्ति करता है । जब इसी श्रद्धा, आस्था व भक्ति का चरम उत्कर्ष होता है, तब धार्मिकता का उच्च स्वरूप निर्धारित होता है । उस समय मनुष्य ईश्वर के प्रेम में

इतना डूब जाता है कि अपना जीवन उसको अर्पित कर देता है ।

व्रतों व धार्मिक पर्वोत्सवों का भी प्रारम्भ इसी भावना की पराकाष्ठा के कारण हुआ होगा । जब मानव ने अपनी समस्याएँ भी ईश्वर से सुलझानी प्रारम्भ कर दी होंगी । यदि पुत्र नहीं है तो अमुक व्रत नियम पूर्वक करके पुत्र प्राप्ति कर लेना, यदि सौभाग्य प्राप्ति का प्रश्न है तो अमुक देवता से प्रार्थना की कि हम यह व्रत लेते हैं, हमारा यह कार्य हो जाय । इसी प्रकार अन्यान्य सभी बातों को धार्मिकता से जोड़–लिया गया । लोक–कथाओं में धार्मिक क्रिया, व्रतों के लिए निश्चित पूजन सामग्री के साथ भक्ति की जाय तब यह अनुष्ठान सफल होता है ।

(ग) भक्ति

श्रद्धा, सम्मान व आत्मीयता, इन तीनों को अगर भावना के साथ गहरे तक जोड़ दिया जाय, तो वह भक्ति कहलाती है । भक्ति मनुष्य की वह भावना है जो किसी के प्रति उसे इतना विवश कर दे कि उसका हर व्यापार उसे सुखद प्रतीत हो । ईश्वर की अनादि शक्ति का स्वरूप मनुष्य के मन में चिरन्तन काल से समाया हुआ है । ईश्वर एक अलौकिक सत्ता को माना जाता है, जो सर्वशक्तिमान है, जिसकी आद्योपान्त कोई सीमा नहीं है । लोक–मानस हमेशा–हमेशा से अपने हर कार्य को ईश्वर के साथ प्रगाढ़ रूप से जोड़ता आया है । इसी को ईश्वर–भक्ति कहा जाता है । लोक की भावनाएँ मनुष्य को उस अलौकिक सत्ता के कोप भाजन से बचने हेतु उसका स्मरण, चिन्तन व कीर्तन कराती है ।

श्रीकृष्ण की क्रीड़ास्थली होने के कारण ब्रज मंडल की संस्कृति भावनामय रही है । यहाँ की सांस्कृतिक परम्पराओं में भक्ति सदैव से ओतप्रोत रही है । यही कारण है कि इस ब्रज वसुन्धरा में अनेक भक्त हुए हैं । इसके अतिरिक्त प्रायः सभी भक्तगणों ने इस पावन भूमि की यात्रा की है । यहाँ निवास किया है । ब्रज की इस परम्परा से ही यहाँ का लोक–साहित्य भी भक्ति भावना से भरा हुआ है । यहाँ की लोक–कथाओं में ईश्वर के विभिन्न रूपों के प्रति भक्ति देखने को मिलती है । वस्तुतः लोक–मनुष्य अर्थात् वह मनुष्य जो आज भी प्राचीन भावनाओं व आध्यात्मिकता से जुड़ा है, इतना सीधा होता है कि वह "एकै साधै, सब सधै" वाली बात तो सपने में भी नहीं सोच सकता । जहाँ उसे विपत्ति दिखाई दी, बस ! उसी देवता की आराधना करनी उसने प्रारम्भ कर दी । चाहे वह विष्णु हों, शंकर

हों, शक्ति हों, गणेश हों ,अथवा अन्य अलौकिक शक्तियाँ भूत–प्रेतादिक हों ।

यहाँ की लोक–कथाओं में हम जिन देवताओं के प्रति भक्ति–भावना देखते हैं, उनमें विष्णु, शंकर, गणेश व शक्ति के विविध रूप देखने को मिलते हैं । उन देवताओं के द्वारा कोई कामना पूर्ण कराने हेतु उनकी भक्ति–भावना से आराधना की जाती है । उन कथाओं में 'सत्यनारायण देव की कथा' का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । उस कथा के प्रारम्भ में ही जब नैमिषारण्य में अठासी हजार ऋषि सूतजी से वेद विद्या रहित मनुष्यों के लिए प्रभु भक्ति प्राप्त होने की बात पूछते हैं, तो सूतजी द्वारा विष्णु भगवान का कहा हुआ सत्यनारायण भगवान का व्रत बतलाया जाता है । सत्यनारायण स्वामी भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं । विष्णु भगवान सबका पालन करने वाले हैं इसलिए जो व्यक्ति उनकी पूजा व व्रत करता है, उसे उसकी समस्याओं से मुक्ति दिलाते हैं । इस कथा में भक्ति का स्वरूप स्वामी–सेवक का है । जिस प्रकार सेवक अपने स्वामी को खुश करने में लगा रहता है, उसी प्रकार सत्यनारायण भगवान का भक्त उनकी पूजा–आराधना करता है, जिससे प्रसन्न होकर वे उसे वरदान दे दें । इस सम्पूर्ण कथा में इस व्रत का माहात्म्य दृष्टिगोचर होता है । माहात्म्य द्वारा यह बताने की चेष्टा है कि यह व्रत क्यों करना चाहिए ।

आराध्य के प्रति अपना सम्पूर्ण समर्पण भक्ति का आवश्यक तत्व है, इसमें साधना आवश्यक भूमिका निभाती है । मंगलवार की एक कथा में एक महात्मा जब एक बुढ़िया के घर जाता है तो मंगलवार के कारण बुढ़िया गोबर का चौका नहीं लगाती है, वह महात्मा बिना चौका लगे आँगन में भोजन नहीं बनाता, महात्मा के कहने पर बुढ़िया अपने पुत्र को औंधा लिटा कर उसकी पीठ पर अँगीठी बनाकर भगवान से प्रार्थना करती है । महात्मा बच्चे के ऊपर बनी अँगीठी में खाना बना लेता है । बाद में उसका बच्चा जीवित हो उठता है । इसमें वह महात्मा ही भगवान् का स्वरूप होता है । बुढ़िया का अटल नियम और विश्वास भगवान् की परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरता है । इस प्रकार ईश्वर के प्रति अटल आस्था का इसमें समावेश है । यह बात दूसरी है कि आज के धरातल पर यह बात कपोल–कल्पना ही प्रतीत होती है, परन्तु साधना व नियम की परिपक्वता द्वारा लक्ष्य प्राप्त होना इसमें चरितार्थ है ।

सकट चौथ की कथा में गणेश जी के प्रति वात्सल्य रूप की भक्ति दर्शायी गई है । इसमें ऊपरी व दिखाऊ भक्ति करने का दुष्परिणाम भी स्पष्ट किया हुआ है । करवा चौथ में आराध्य को शक्ति स्वरूप में प्रकट किया गया है । करवा चौथ माता है और जो स्त्री इसकी पूजा करती है, उसे सौभाग्यवती होने का वरदान मिलता है । इसी प्रकार अहोई अष्टमी भी देवी का स्वरूप मानी जाती है । अहोई माता स्याहू के रूप में आती है और उस स्त्री को सन्तान देती है ।

सोमवार की कथा में शंकर भगवान् व पार्वती जी के प्रति भक्ति दिखाई गई है । इस कथा में एक धोबिन के अपने सतीत्व के बल से एक बालिका को सौभाग्य देने व इसके कारण स्वयं के पति के मर जाने पर शिव पार्वती का स्मरण कर उसके पुनः जीवित कर देने का उल्लेख हुआ है ।

कार्तिक स्नान की कहानी में एक बुढ़िया द्वारा कृष्ण भगवान् की भक्ति करने की कथा है । वह बुढ़िया कार्तिक स्नान करती है व कृष्ण भगवान् के आने पर उन्हें बालक रूप में लडडू खिलाती है ।

इन सभी कथाओं में अधिकांश रूप से भक्ति किसी न किसी प्रयोजन के लिए की गई है । कहीं न कहीं कोई स्वार्थ इन कथाओं की भक्ति में देखने को मिलता है । निस्वार्थ भक्ति कहीं–कहीं ही देखी जा सकती है । सत्यनारायण की महत्वपूर्ण कथा में तो पहले ही यह स्पष्ट कर दिया जाता है कि मनोरथपूर्ण होने के लिए यह पूजन व व्रत किया जाता है । परन्तु यह भी साथ ही साथ स्पष्ट है कि कलियुग के लिए ऐसा व्रत सोचा जा रहा है, अर्थात् कलयुग के व्यस्त व्यक्ति के लिए यदि इतना भी बन पड़े तो कल्याण हो जायगा । अन्य सभी कथाओं में कलियुग वाली बात तो नहीं है क्योंकि वे कथाएँ पुरातन काल से चली आ रही हैं । परन्तु सभी में भक्ति का उतना उकृष्ट कोटि का स्वरूप हमें दृष्टिगोचर नहीं होता क्योंकि सभी कामनापूर्ति के हेतु आराध्य को प्रसन्न करने के लिए पूजा–वन्दना व व्रत इत्यादि करते हैं ।

(घ) पूजन–सामग्री

व्रत करते समय व उस देवता की पूजा करते समय जो पदार्थ प्रयोग किये जाते हैं, वे भी अपनी अहम भूमिका अदा करते हैं । इन सामग्रियों से रहित पूजन अधूरा माना जाता है, व देवता प्रसन्न नहीं होता ऐसी मान्यता है । कहीं–

कहीं तो पूजन की किंचित सामग्री अधूरी रह जाने पर देवता रूष्ट तक हो जाते हैं । व्रत व पूजन के समय काम आने वाली सामग्रियाँ इस प्रकार से हैं–

गोबर

गाय का ताजा गोबर किसी भी पूजा के लिए सर्वप्रथम आवश्यक वस्तु होती है । स्त्रियाँ, जिस स्थान पर पूजा होती है, वहाँ गोबर से चौका लगाती हैं, लीपती हैं । उसी के ऊपर देवता अथवा देवी की स्थापना की जाती है । परन्तु वृहस्पतिवार की कथा में यह भी बताया गया है, कि वृहस्पतिवार के दिन चौका नहीं लगाना चाहिये किन्तु यह नियम तभी लागू होता है, जब कि बृहस्पतिवार के दिन कोई पर्व या त्योहार नहीं है । यदि गुरुवार के दिन ही कोई त्योहार भी पड़ता है तो चौका लगाया जाना अनिवार्य हो जाता है। क्योंकि ब्रज में कहावत है "बार बड़ौ कै त्यौहार!" अर्थात् त्योहार वार से अधिक महत्वपूर्ण है । दिन (वार) विशेष के नियम त्यौहारों पर लागू नहीं होते । अन्य सभी वारों में बिना गोबर का चौका लगे व्रत का पूजन पूर्ण नहीं माना जा सकता ।

आम के पत्ते

लोक–कथाओं की पूजन सामग्री में आम के पत्तों का बहुत महत्व होता है, इन पत्तों को एक सुतली में बाँधकर बन्दनवार बनाया जाता है और उसे दरवाजे पर बाँध दिया जाता है । हरितालिका तीज की कथा में यह स्पष्ट है । आम के पाँच पत्तों को एक पीतल अथवा ताँबे के कलश पर रखकर उनके ऊपर एक नारियल रखा जाता है । पूजा के समय देवता के आगे स्थापना कर उसकी कथा कही जाती है । इसे मंगल कलश कहा जाता है । कहीं–कहीं देवता की प्रतिमा अथवा चित्र के दोनों ओर आम के पत्तों के छोरों को बाँधना शुभ माना जाता है ।

वैसे मंगल कलश में पंच पल्लव रखे जाते हैं । जिनमें आम्र पल्लव के अतिरिक्त पीपल, बड, गूलर तथा अशोक के पत्ते भी सम्मिलित हैं । इनके अभाव में आम्र–पल्लव पर्याप्त माने जाते हैं ।

केला

व्रत व पूजन की सामग्रियों में अन्य फलों की अपेक्षा केला अधिक महत्वपूर्ण फल माना जाता है । सत्यनारायण की कथा में केले के खम्भों को पूजन

करते समय देवता के दोनों ओर रखने का वर्णन है । नैवेद्य की सामग्री में भी कदलीफल मुख्य होता है । कहीं–कहीं यह भी वर्णित है कि केले के पत्तों पर ही प्रसाद वितरित किया जाय ।

रोली व चावल

देवता की पूजा करते समय तिलक लगाने के लिए रोली की आवश्यकता होती है । रोली (रोरी) के ऊपर चावल लगाये जाते हैं । चावल का आटा बनाकर उसका सतिया बनाया जाता है । कहानी कहते समय कथावाचक सभी श्रोताओं के हाथ में कुछ दाने चावल के रख लेता है । अन्त में जब कथा खत्म होती है तो या तो तत्संबंधित देवता की जय बोलकर अथवा यह कहकर कि "जैसौ वाकूँ (अमुक कूँ) भयौ बैसौ सबकूँ होय ।" चावल धरती पर विसर्जित कर दिये जाते हैं ।

सुपाड़ी व पान

यहाँ ऐसी मान्यता है कि सुपाड़ी के ऊपर कलाया लपेट दिया जाय, तो वह गणेश जी का स्वरूप हो जाती है । इसलिए साबुत सुपाड़ी पर कलाया पूरी तरह से लपेट कर उसे चावलों पर रखकर गणेश जी के रूप में पूजा जाता है व इसे मंत्रों से अभिषिक्त भी कराया जाता है । देवता की पूजा करते समय स्नान कराने को नोंकदार पान प्रयोग में लाया जाता है । पान को जल में डुबाकर छींटे दिये जाते हैं ।

कलाया

कच्चे सूत का रंग–बिरंगा बटा हुआ यह धागा कलाया कहलाता है । कथा प्रारम्भ करने के पूर्व इसे वस्त्र स्वरूप देवता को समर्पित किया जाता है तथा प्रसाद स्वरूप कथा वाचक तथा सभी श्रोताओं के हाथ में इसे बाँधा जाता है ।

इन वस्तुओं के अतिरिक्त कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं, जिनकी संख्या व मात्रा निश्चित होती है । जिन वस्तुओं को गिना जा सकता है अर्थात् गणनीय वस्तुएँ ऊनी होती हैं अर्थात् अविभाज्य संख्याएँ । इस प्रकार की ऊनी संख्याओं का इन कथाओं में बहुत महत्व होता है । जैसे संख्या तीन, पाँच, सात, नौ इत्यादि । सत्यनारायण देव की पूजा करते समय नवग्रह की पूजा की जाती है । गणेश जी की

कहानी में गणेश जी तीन चावल के दाने लेकर खीर बनवाते घूमते हैं।[9] इसी प्रकार परिमाण वाली वस्तु सवायी होती है । सत्यनारायण की कथा में सवाये आटे का चूरमा बनाया जाता है । सवाये ही फल इत्यादि होते हैं। इसके अतिरिक्त गंगाजल, यमुनाजल, तुलसीदल, धूपबत्ती, कपूर, दीपक आदि भी पूजन व व्रत के समय बहुत काम की वस्तुएँ है ।

किसी भी देवता का व्रत उपवास करते समय उसकी जो पूजा की जाती है उसमें भक्त को इन पूजन सामग्रियों को विधिवत् श्रद्धा के साथ यथास्थान यथासमय प्रयोग में लाना पड़ता है । वैसे तो कहा जाता है भगवान भावना के भूखे हैं, भक्ति भाव से "पत्रं, पुष्पं, फलं इत्यादि" सभी कुछ स्वीकार्य है । परन्तु उपलब्ध होने पर इन सामग्रियों के साथ भगवान की भक्ति करने में अधिक फल प्राप्त होता है । ऐसी मान्यता बतायी जाती है ।

(ड.) रीति–रिवाज या प्रथाएँ

ब्रज–लोक–कथाओं में यहाँ के सभी रीति–रिवाज देखने को मिलते हैं । रीति–रिवाजों व प्रथाओं का नियमानुसार पालन करना इन कथाओं में आवश्यक बतलाया जाता है । ये प्रथाएँ कहीं न कहीं मनुष्य की धार्मिक भावना के साथ जुड़ी होती हैं । प्राचीन परिपाटी के साथ अनादिकाल से चली आ रही इन प्रथाओं का महत्व धार्मिक दृष्टि से होता है, इन्हें न मानने वाले व्यक्ति को इन रीति–रिवाजों का दृढ़ता से पालन न करने पर गम्भीर परिणाम भोगते हुए बताया जाता है ।

हिन्दू धर्म के इन नियमों से मनुष्य जन्म लेते ही बँध जाता है और मृत्यु पर्यन्त किसी–न–किसी रूप में ये रीति–रिवाज मनुष्य के साथ जुड़े रहते हैं । ब्रज में कार्तिक के महीने में महीने भर स्नान करने की मान्यता है । जिस स्थान पर यमुना इत्यादि कोई नदी होती है, वहाँ नदी पर अन्यथा घर में ही ब्रह्म मुहूर्त में स्नान किया जाता है । ऐसी भावना रहती है कि जो स्त्रियाँ महीने भर कार्तिक स्नान सदभावना से करती है उन्हें स्वयं कृष्ण भगवान् साक्षात् प्रकट होकर दर्शन देते हैं । कार्तिक स्नान पर जो कथा कही जाती है, उसमें इसका विवरण है । कथा में एक बुढ़िया को इस स्नान के करने से लाभ होता है तो दूसरी कपटपूर्ण होकर व लालच से यह स्नान करती है, इसलिए उसकी दुर्गति होती है ।

भाई–दौज की कथा में भी स्नान का महत्व बताया गया है ।[10] इस दिन मथुरा के विश्राम घाट पर भाई व बहिन हाथ पकड़ कर स्नान करते हैं । इस पर्व को कथा में यह बताया गया है कि जो भाई व बहिन हाथ पकड़ कर इस दिन यमुना में स्नान करते हैं, उन्हें यमदूत पकड़कर नहीं ले जाते । इसीलिए इस दिन को यमद्वितीया भी कहा जाता है । इस दिन भाई अपनी बहिन के घर ही भोजन करता है व उससे तिलक करवाने के बाद उसे कुछ उपहार स्वरूप भेंट करता है ।

स्नानों के अतिरिक्त अन्य कई प्रथायें व मान्यतायें देखने को मिलती हैं । करवा चौथ की कथा में दिन भर निराहार रह कर रात्रि में चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन करने का वर्णन है। प्रायः सौभाग्यवती स्त्रियाँ इस व्रत को करती हैं । इस कथा में एक छोटी–सी बालिका जिसका विवाह हो गया था, के भाई चलनी में दीपक रखकर पेड़ के पत्तों की आड़ में से उसका प्रकाश दिखाते हैं । बहिन, बच्ची होने के कारण उसे ही चन्द्रमा समझकर अर्घ्य दे देती है और भोजन कर लेती है । यहाँ व्रत भंग हो जाता है और बच्ची का पति मर जाता है । चन्द्रमा को देवता मानकर उसे ही साक्षी के रूप में जल चढ़ाना इस व्रत का मुख्य उद्देश्य है । इस लोक–कथा के माध्यम से लोक में प्रचलित बाल–विवाह की प्रथा का भी दिग्दर्शन किया जा सकता है ।

शुक्रवार की लोक–कथा में निश्चित समय पर ही पत्नी को विदा कराकर लाने की मान्यता बतायी जाती है ।[11] इस कथा में यह उल्लेख है कि सूक (शुक्र) डूबने पर पति को अपनी पत्नी की विदा कराके नहीं लाना चाहिये लोक में यह अशुभ माना गया है ।

बृहस्पतिवार की कथा में इस दिन बाल कटवाना निषेध बताया गया है ।[12] इसी कथा में यह भी है कि खाद्यान्न को पका कर चूल्हे के पीछे नहीं रखा जाता है और रात्रि को दीपक देर से नहीं जलाना चाहिये । अनन्त चौदस की कथा में एक धागे में कुछ गाँठें लगाकर स्त्रियों के हाथ में बाँधने का रिवाज बतलाया गया है । गाज की कहानी में एक ब्राह्मणी को गाज के रूप में आने वाली विपत्तियों से बचने के लिए समा के चावल देने का उल्लेख है । इसी प्रकार नाग की पूजा करने का यहाँ की कथाओं में बहुत वर्णन मिलता है । नाग–पंचमी व भैया पाँचैं

तो नाग की ही कहानियाँ हैं ।

वारों के ही नाम पर अपनी सन्तान का नाम रखने की प्रथा भी इन कथाओं में देखने को मिलती है । जैसे सोमवार को उत्पन्न लड़की का नाम सोमा, मंगल के बच्चे का नाम मंगलिया व बुद्ध को उत्पन्न हुई लड़की बुद्धो हो जाती है । इसका भी मूल कारण अनिष्ट–निवृत्ति से संबंध रखता है । ग्रहों का विपरीत प्रभाव अपनी सन्तान से दूर करने हेतु लोक–मानस अपने बच्चों के नाम उसी के अनुरूप रखता है । जिस दिन बालक का जन्म हुआ है वह देवता, वह ग्रह उस बालक की आने वाली आपदाओं को दूर करे । हर प्रकार से उसकी रक्षा करे, कष्टों का निवारण करे यह भावना इसके मूल में निहित रहती है । प्रायः सभी वारों के नाम पर बच्चों का नामकरण किया जाता है, किन्तु लोक–मानस ने शुक्र व शनि के नाम पर कभी भी नामकरण नहीं किया । शुक्र असुरों के गुरू थे अतः आसुरी वृत्ति के भय से यह नाम नहीं रखा जाता तथा शनि को अत्यधिक कुपित होने वाला ग्रह माना जाता है । इस कारण शनि का नाम भी लेना कष्ट व दुखः का आगमन सूचक माना जाता है । वैसे शनिवार का व्रत रखना और इस दिन हनुमान जी की पूजा–अर्चना करना नियत है, क्योंकि लोक–विश्वासानुसार हनूमान जी की पूजा अर्चना से शनि का कोप कम हो जाता है । इसके विषय में ब्रज में एक लोक कथा भी प्रचलित है।[14]

पाद टिप्पणियाँ

1. देखें भाग–2, कहानी संख्या 8
2. वही 14
3. वही 13
4. वही 2
5. वही 7
6. वही 14
7. वही 8
8. वही 15
9. वही 16
10. वही 17
11. वही 6
12. वही 5
13. वही 28
14. वही 29

अध्याय 4.

ब्रज–लोक–कथाओं में मानवेतर संस्कृति

मनुष्य अपने जीवन में जो भी महसूसता, देखता, सुनता व कहता है, वही उसकी संस्कृति, वही उसका साहित्य और वही उसका इतिहास बन जाता है । कहानी साहित्य का ही अंग होती है । पूर्व–काल में मनुष्य आज की तरह वैज्ञानिक साधनों से सम्पन्न नहीं था, उसके पास सीमित साधन थे । इसी प्रकार अपने मष्तिष्क का प्रयोग भी वह सीमित दायरे में ही करता था । सीमित क्षेत्र की स्थूल बातों को ही दृष्टिगोचर कर वह जीता था, कहता था, सुनता था । प्राकृतिक बातों का वह आनन्द लोता था । अलौकिक शक्ति की धारणा प्रकृति की नियामक सत्ता के रूप में उसने आदिकाल में ही कर ली होगी । तब उस सत्ता को अपने साथ जोड़कर उसने अन्य सभी लौकिक जीवों को भी अपनी संस्कृति के साथ जोड़ लिया । उसका स्थूल व भावनात्मक मस्तिष्क इस बात को सोचने का व इसकी गहराई में जाने का साहस न कर सका कि कहानियों में पशु–पक्षियों का मनुष्य की आवाज में बात करना मात्र कपोल कल्पना ही है । अस्तु हमारा कहने का उद्देश्य मात्र इतना ही है कि इन लोक–कथाओं में मनुष्य जाति के अतिरिक्त मानव से पृथक् अन्य जीवों को भी वर्णित किया गया है । यह सब भोले–भाले पुरातन लोगों की अपनी संस्कृति थी, जिसे हम आज भी सुनते–सुनाते चले आ रहे हैं । लोक–कथाओं (व्रतोत्सव संबंधी) में मानवेतर संस्कृति के दर्शन दो रूपों में हमें होते हैं –

(अ) अलौकिक सत्ता

(ब) लौकिक सत्ता

(अ) अलौकिक सत्ता

जैसा बताया जा चुका है, मनुष्य ने अलौकिकत्व को प्रारम्भ से ही स्वीकारा है । यह मानव मन का एक नियम रहा है कि वह अपनी किसी भी समस्या को धार्मिकता के साथ जोड़ता आ रहा है । यदि कोई समस्या वह स्वयं नहीं सुलझा पाया, तो उसे संबंधित देवता सुलझायेगा, ऐसी मान्यता रही है । यही मान्यता देवताओं के प्रति निष्ठा व सम्मान को जन्म देती है । इसी से ये व्रत इत्यादि साधनात्मक कार्य किये जाते हैं कि हमारी अमुक कामना की पूर्ति अमुक देवता कर दे ।.ब्रज के त्योहारों व व्रतों में अलौकिक रूप से निम्नांकित देवी–देवताओं ने अपना स्वरूप प्रतिस्थापित किया है–

विष्णु

ब्रह्माण्ड को संचालित करने के लिए तीन देवता अपनी मुख्य भूमिका का निर्वाह करते हैं–ब्रह्मा, विष्णु व महेश । भगवान विष्णु अनादि देव हैं और सर्व कारण के कारण हैं वैसे इनका कार्य है सृष्टि का पालन–पोषण करना । मनुष्य के जीवन में जब उसे कोई कठिनाई प्रतीत होती है, तो वह विष्णु भगवान् की आराधना करता है । विष्णु मुख्य देवता है जिनके अन्य अंश कृष्ण, राम इत्यादि भी मनुष्यों की कामना पूर्ति करते हैं । विष्णु भगवान् का ही एक रूप सत्यनारायण का है, जो लोक के मुख्य देवता माने जाते हैं । कोई कठिनाई अथवा समस्या होती है, तो भगवान सत्यनारायण की पूजा करके उससे छुटकारा पाया जा सकता है । सत्यनारायण की कथा (माहात्म्य) में वर्णित है कि मनुष्यों की इच्छा निश्चय ही पूरी होती है यदि इनका व्रत किया जाय तो इस कथा में एक ब्राह्मण का दारिद्र्य पूजा करने से दूर हो जाता है। वह ब्राह्मण अत्यन्त निर्धन था, परन्तु जब सत्यनारायण भगवान् की पूजा करने की सोचकर भिक्षा माँगने गया तो उसे बहुत धन प्राप्त हुआ । उसके पश्चात् उसी से सुनकर एक लकड़हारा भी पूजा करके सन्तुष्ट हुआ । फिर उल्कामुख नामक राजा ने ही यही व्रत अपनी सन्तान प्राप्ति के लिए किया, उसी से सुनकर एक वैश्य भी यह व्रत सन्तानेच्छा से करने को तत्पर हुआ, परन्तु वह सन्तान उत्पन्न होने पर भी बार–बार कोई न कोई बहाने लगाकर व्रत को टाल देता था । अन्त में सत्यनारायण भगवान् क्रोधित हो जाते हैं । उसके दामाद को पानी में डुबो देते हैं । परन्तु फिर पूजा करने से ही प्रसन्न होते

हैं । इस सम्पूर्ण कथा में यह ध्यान देने वाली बात है कि किसी कार्य को करने का निश्चय तभी करना चाहिए जब वह बन पड़े । इसमें सत्यनारायण भगवान् के स्वभाव की भी जानकारी मिलती है । अन्त में तुंगध्वज नामक राजा की कथा है, वह भगवान के प्रसाद को ग्वालों का होने के कारण त्याग देता है तो उसे अपने सौ पुत्रों से हाथ धोना पड़ता है । पुनः प्रसाद लेने पर ही वह अपने पुत्रों को जीवित पाता है ।

सत्यनारायण के अतिरिक्त अनन्त भगवान भी शेषषायी विष्णु के ही रूप हैं । अनन्त का अर्थ निकलता है, जिसका कोई अन्त नहीं (न विद्यते अन्तो यस्य सः अनन्तः)। यद्यपि भगवान अनन्त शेषनाग के रुप में हैं तथापि विष्णु भगवान ही सृष्टि के नियामक हैं, अर्थात् वे ही अनन्त हैं (इसी अध्याय के अंतर्गत अलौकिक सत्ता के क्रम में देखिये सर्प संबंधी विवेचन) । अनन्त चौदस की कथा में वर्णन है कि ये देवता भी अपना अपमान होने से संबंधित राजा को दण्ड देते हैं ।[1]

कार्तिक स्नान की कथा में कृष्ण भगवान् का वर्णन है, वे एक वृद्धा को स्वस्थ कर देते हैं । कार्तिक स्नान का इसमें प्रभाव दिखाया गया है । उसकी मनोकामना पूर्ण होते देख जब उसकी बहू की माँ भी कपटपूर्ण व्रत करती है, तो उसकी अधोगति हो जाती है । फिर भगवान् से क्षमा माँगने पर ही उसका उद्धार होता है ।

शंकर जी

जिस प्रकार विष्णु भगवान पालन करने वाले देवता हैं, उसी प्रकार शंकर सृष्टि का संहार करते हैं ये अनादि–अनन्त देव हैं । अतः इनकी जीवन–दान देने के लिए आराधना की जाती है । जिस कथा में शंकर भगवान् का वर्णन है, उसमें कहीं–कहीं इनको सौभाग्य प्राप्ति के लिए पूजा जाता है । कहीं–कहीं इन्होंने सन्तान भी दिलाई है । सोमवार शंकर जी का ही वार माना जाता है । सोमवार की कथा में वह पतिव्रता धोबिन अपने पति को जीवित करने के लिए शिव–पार्वती का ही स्मरण करती है ।[2] सोमवार की ही एक अन्य कथा में शंकर जी द्वारा एक स्त्री को बारह वर्ष के लिए पुत्र दिलाया जाता है ।[3] ब्रज में शंकर

भगवान का एक नाम भोले बाबा भी है । कहा जाता है कि ये बहुत भोले होते हैं । शिव रात्रि की कहानी में एक चोर शिव–लिंग पर चढ़ जाता है तो वे रूष्ट होने के बजाय उस पर प्रसन्न होकर उसे वरदान दे देते हैं।[4] शंकर भगवान् की मान्यता ब्रज में बहुत अधिक है । विवाह के समय भी यहाँ बूढ़े बाबू के नाम से कढ़ी चावल का भोग लगाकर इनकी पूजा की जाती है ।

गणेश जी

गणेश जी शंकर जी के पुत्र हैं । किसी भी अनुष्ठान के प्रारम्भ में गणेश–पूजा का विधान माना जाता है । प्रत्येक मंगल–कार्य के प्रारम्भ में गणेश–पूजा अनिष्ट–निवृत्ति कारक होती है । गणेश जी की कथा सकट चौथ के दिन कही जाती है । इनको वात्सल्य रूप से पूजा जाता है । सकट चौथ की कथा में गणेश जी एक स्त्री को धन–धान्य से पूर्ण करते हैं । इस कहानी में दौरानी–जिठानी की आपसी फूट का दुष्परिणाम भी दिखाया जाता है । अपनी दौरानी की गणेश जी (सकट देवता) की कृपा से बढ़ती हुई सम्पन्नता जिठानी सहन नहीं कर पाती है व ढोंग रचाकर नकली व आडम्बर पूर्ण पूजा करती है, तो गणेश जी उसे उसका दण्ड देते हैं ।[5] इसी प्रकार बच्चे के रूप में गणेश जी एक कहानी में चावल व दूध लेकर खीर बनवाने के लिए घूमते हैं, एक बुढ़िया के खीर बना देने पर उसे बहुत धन–धान्य दे देते हैं ।[6] गणेश जी मुख्यतः संकटहरण करने वाले देवता माने जाते हैं ।

हनूमान जी

हनूमान जी बल व पौरूष के देवता हैं । मंगलवार हनूमान जी का दिन माना जाता है । इस दिन व्रत रखा जाता है व हनूमान जी की पूजा करके उनकी कहानी कही जाती है ।[7] इस दिन हनूमान जी के व्रत में दिन भर निराहार रहकर एक समय अन्न का भोजन किया जाता है, बिना नमक का अथवा बेसन का मीठा पदार्थ खाने की भी परम्परा रही है । पुरुष ही मंगलवार का व्रत रखते हैं; महिलाओं के लिए ये निषिद्ध माना जाता है । हनूमान जी उनको बल प्रदान करते हैं, ऐसा माना जाता है । क्योंकि ये भगवान राम के भक्त हैं, अतः भगवान राम की आराधना से भी वे सन्तुष्ट होते हैं, ऐसी मान्यता है ।

सूर्यदेव

ब्रज–लोक कथाओं में सूर्य को देवता रूप में जाना जाता है । सूर्य की कथा रविवार को कही जाती है । रविवार सूर्य का ही दिन होता है । सूर्य के प्रति लोक–विश्वास यह है कि दिन में तो सूर्यनारायण भगवान् प्रकाश करते हैं और रात्रि को सो जाते हैं । इसी बात को रविवार की एक कहानी में बताया गया है । जिसमें सूर्यदेव अपनी पत्नी के पास रात को बाबाजी के वेष में आते हैं । पश्चात् को अपने पुत्र के उत्पन्न होने पर गंगासागर की धार में से निकल कर अपना बेटा स्वीकार करते हैं ।

शुक्रदेव

शुक्रवार के दिन शुक्र देवता की कहानी कही जाती है । शुक्र देवता पति–पत्नी के संबंधों को लेकर चलते हैं शुक्र को यौन–देव माना जाता है । लोक मान्यता है कि शुक्रास्त के समय पत्नी की विदा नहीं कराई जा सकती । शुक्रवार की कथा में एक लड़का अपनी पत्नी को विदा कराने ससुराल जाता है । परन्तु तब शुक्र का उदय न होने के कारण शुक्रदेव रास्ते में उसे नर–वेष में मिल जाते हैं और पत्नी को उसे नहीं ले जाने देते हैं ।

शनिदेव

शनिश्चर देव की पूजा शनिवार को की जाती है । ये देवता तेल (सरसों) से प्रसन्न रहते हैं । शनिवार के दिन जो व्यक्ति सरसों का तेल व लोहेकी कील गाय के खूँटें पर चढ़ाते हैं, उससे ये प्रसन्न होते हैं ।[8] काले कपड़े व काले तिल भी इनको प्रिय हैं ऐसा माना जाता है ।

चन्द्रमा

सूर्य की तरह चन्द्रमा की भी पूजा–आराधना की जाती है । चन्द्रमा का ब्रज की लोक–कथाओं में काफी महत्व है । करवा चौथ, सकट चौथ, हरितालका तीज इत्यादि कथाओं को सुनने के पश्चात् चन्द्रमा को जल चढ़ाया जाता है जिसे अर्घ्य देना कहते हैं । करवा चौथ की कथा में तो नकली चन्द्रमा देख लेने पर एक बच्ची का पति ही मर जाता है । सोमवार चन्द्रमा का ही वार होता है । सोम अमृत को कहते हैं । समुद्र मंथन के समय समुद्र से चन्द्रमा और अमृत दोनों निकले थे ।

कहते हैं कि अमृत चन्द्रमा में भी समाया हुआ था । चन्द्रमा वैसे भी अमृत का भाई बताया जाता है, एक ही स्थान समुद्र से उत्पन्न होने के कारण । इसलिए अमृत व चन्द्रमा का गहरा संबंध है । सोमवार को चन्द्रवार भी कहते हैं । अंग्रेजी में भी इसे मन–डे कहा जाता है । मन, मून से बना है और मून का अर्थ चन्द्रमा होता है । अतः सोमवार चन्द्रमा का ही दिन (वार) होता है । सोमवार की कहानी में एक धोबिन द्वारा एक स्त्री को सुहाग देने का वर्णन है । धोबिन का नाम "सोमा" होता है ।[9]

शक्ति

देवताओं के अतिरिक्त लोक–कथाओं में शक्ति की आराधना का वर्णन आता है । शक्ति स्त्री का स्वरूप होती है । शक्ति की मान्यता कई रूपों में की जाती है । इनके निम्नांकित रूप मिलते हैं–

करवाचौथ

करवाचौथ की कथा में इस देवी की पूजा की जाती है । इसमें सौभाग्य प्राप्ति के लिए करवा चौथ मइया की पूजा का प्रावधान है । इसकी कथा में स्त्रियाँ दिन भर उपवास करती हैं, फिर रात को चन्द्रमा को अर्घ्य देकर पूजा करके खाना खाती हैं ।

अहोई अष्टमी

अहोई माता स्याहू के रूप में आती हैं । अहोई अष्टमी की कहानी में स्त्री व्दारा स्याहू के अण्डे बच्चे कट जाने पर अहोई मइया रूष्ट हो जाती हैं, फिर उस स्त्री के प्रार्थना करने पर प्रसन्न होती है ।[10]

लक्ष्मी जी

दीपावली की कथा में लक्ष्मी जी का वर्णन मिलता है । लक्ष्मी जी विष्णु भगवान की पत्नी हैं । धन व ऐश्वर्य इनकी पूजा से प्राप्त होता है । दीवाली की कथा में एक भाट भाटनी को इनकी पूजा करने से धन–सम्पत्ति प्राप्त होती है ।

आसमाता

आसमाता की कथा में यही शक्ति अर्थात् देवी आसमाई के रूप में आयी है । एक राजकुमार को प्रसन्न होकर यह माता निहाल कर देती हैं । आस आशा से कहते हैं । आशा के बल पर ही संसार टिका हुआ है । निराश व्यक्ति संसार में जी नहीं सकता । आसमाता की कथा में राजकुमार भूख, प्यास, नींद, सभी को छोड़कर आसमाता को ही नमन करता है ।[11]

पार्वती

शंकर भगवान् की पत्नी पार्वती जी सौभाग्य, प्रदात्री हैं । हरितालिका तीज की कहानी में पार्वती जी की पूजा की जाती है । गनगौर भी पार्वती जी का ही त्योहार है। राजस्थान में हरितालिका तीज व गनगौर का त्योहार अधिक मनाया जाता है । ब्रज में इसका प्रचलन कम है । वैश्य लोग कहीं–कहीं इसकी पूजा करते हें । गौरा (गनगौर) की पूजा सुहाग रक्षा के लिए की जाती है ।

दूबरी मैया

दूबरी सातैं को दूबरी मइया की कहानी कही जाती है । यह अनिष्ट के निवारण की कहानी है । इस कथा में एक वृद्धा दूबरी मैया के रूप में एक बुढिया को मिलती है । वह उस बुढिया के भतीजे के अनिष्ट की आशंका से उसे सूचित करती है व उसका उपाय भी बताती है ।[12]

ये सभी देवी–देवता अलौकिक रूप से इन कथाओं में आये हैं । इनकी पूजा व आराधना करने से मनोकामना की पूर्ति होती हुई दिखाई जाती है । इन्हीं देवता व देवी माता की पूजा व आराधना के लिए कोई व्रत अथवा कोई नियम लिया जाता है । जब नियम पालन करते समय उस देवता की पूजा की जाती है तो उस समय ये कथाएँ कही जाती हैं । देवता सभी ब्रह्म के स्वरूप माने जाते हैं और सभी देवियों में शक्ति की उपासना की जाती है । स्त्री शक्ति का ही स्वरूप मानी जाती है ।

(ब) लौकिक सत्ता

मानवेतर संस्कृति की लौकिक सत्ता में लोक में प्रत्यक्ष जो कुछ भी है उस का वर्णन किया जाता है । प्रकृति में मानव से परे भी अनेक जीव हैं, जिनका अस्तित्त्व ऐसा होता है, कि चाहे वे मानव की तरह बौद्धिक न हों, तथापि कहीं–कहीं मनुष्य को उन्हें साथ लेकर चलने की आवश्यकता का अनुभव होता है । लोक–साहित्य चूँकि लोक का ही साहित्य होता है, इसमें मानव और मानव के विचार–क्षेत्र में आने वाले सभी अन्य जीवों को भी जोड़ दिया गया है । वैसे पंचतन्त्र की कथाओं में भी पशु–पक्षियों को सुना जा सकता है ।

सर्प

सर्प का भारतीय आध्यात्मिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है । आदि काल से सर्प को देवता माना जाता रहा है । गीता के विभूतियोग (दशम अध्याय) में श्रीकृष्ण ने कहा है (अनन्ताश्चास्मि नागानाम तथा सर्पाणामस्मि वासुकिः) अर्थात मै नागों में अनन्त तथा सर्पों में वासुकि हूँ । ब्रजलोक में अनन्त चर्तुदशी की कथा भी प्रचलित है जिसमें स्त्रियाँ नाग का प्रतीक चौदह गाँठों वाला कच्चा सूत हाथ में बाँधती हैं । इससे प्रतीत हैता है कि समस्त सृष्टि की विभूति को दर्शाने के लिए भगवान ने भी सर्प जाति पर विशेष बल दिया है । अतः उन्होंने दो प्रकार के सापों का उल्लेख किया है । हमने प्रायः शेष नाग और वासुकि की पौराणिक कथाओं को सुन रखा है जिससे यह बहुत स्पष्ट है । सर्प यद्यपि लौकिक जीव होता है, परन्तु उसे देवता मानकर पारलौकिकता के साथ सम्बद्ध किया जाता रहा है । यह कटु सत्य है कि सर्प एक हिंसक प्राणी है; यदि वह किसी को डस ले, तो उसके जीवन का अन्त ही हो जाता है । उसके रस्सी जैसे बिना हाथ–पैर वाले शरीर में इतना विष होता है । लोक–मानस ने उसे (विशेषकर काले सर्प को) इसलिए पूजा, ताकि कदाचित् वह उनसे कुछ न कहे। वैसे भी सर्प के काट लेने पर ओझा मंत्रादि से उसे ठीक करता है। मंत्रों में आध्यात्मिक, तांत्रिक, और अलौकिक शक्तियाँ होती है

और इसीलिए लोक–मानस ने सर्प को आध्यात्मिकता के साथ जोड़कर देवता मान लिया । पंचतंत्र में भी सर्प को देवता समझने की एक कथा है । नाग पंचमी पर नाग देवता की पूजा होने लगी । नाग पंचमी की कथा में नाग को भाई मानकर पूजा की जाती है । इस कथा में ही यह वर्णित है कि वह स्त्री जिसे नाग अपनी बहन बना लेता है, उस नाग के घर अर्थात् अपने पीहर को जाती है , तो वहाँ उसे नाग ही नाग दिखाई देते हैं । वहाँ पर सभी से वह अपना सम्बन्ध जोड़ लोती है । चूँकि वह वहाँ की बेटी थी, अतः किसी को भइया, किसी को चाचा, किसी को बाबा इत्यादि कहती है । अपने नाम के आगे सम्बोधन लगा होने के कारण सभी नाग उसे अपनी बहन–बेटी मान लेते हैं, उससे कुछ नहीं कहते ।[13]

लोक मान्यतानुसार नाग काले सर्प को कहा जाता है । ऐसा माना जाता रहा है कि यदि भूल–चूक से भी वह किसी से मर जाय, तो उसकी नागिन उस मारने वाले व्यक्ति से उसका बदला लेने जाती है । भाई दौज की कथा में इस प्रकार का वर्णन आता है । बहन के घर जब उसका भाई आता है तो वह लडडू बनाने के लिए आटा पीसती है । आटा पीसते समय उसके साथ साँप पिस जाता है । बहिन को मालूम होता है, तो इस डर से कि कहीं उसके भाई ने वे लडडू खा लिये तो मर जायेगा वह भागी–भागी जाती है । भाई के पास रखे सभी लडडुओं को उठा लाती है । वहाँ उसे मालूम होता है कि वह नागिन उसके भाई को विवाह के दिन फेरे के समय डसेगी, तो वह स्वयं उसकी रक्षा में लग जाती है और अन्त में उसके मृत छहों भाई नागिन द्वारा जीवित कर दिये जाते हैं । [14]

दूबरी सातैं की कथा में एक स्त्री के भतीजे मर जाते हैं । अन्त में जो एक मात्र रह जाता है, उसकी भी दूबरी माता द्वारा सर्प दंश से मृत्यु बतायी जाती है । जब साँप उसे काटने आता है तो वह स्त्री उससे अपने सभी छहों भतीजे जीवित करवा लेती है । भाई दौज की कथा में और इस दूबरी सातैं की कथा में जो साम्य दिखाई देता है वह यह कि दोनों में मरे हुए भाई व भतीजों को सर्प द्वारा ही

जीवित करवाया जाता है ।[15]

अहोई अष्टमी की कथा में एक स्त्री द्वारा एक स्याहू के अण्डे बच्चे मिटटी खोदते समय मर जाते हैं । स्याहू को भी नागिन माना है । डॉ0 सत्येन्द्र ने स्याहू को स्याँप–स्याँपु–स्याँऊ–स्याहू इस प्रकार भाषा–परिवर्तन के कारण भिन्नता दर्शाते हुए बताया है ।[16] वैसे यह सर्प ही है । इस दिन जो पूजा की जाती है । उसमें भी सर्प आकृतियाँ बनाई जाती हैं । इस कथा में वह स्त्री स्याहू की तुरपुती (कानों के बाले) माँगकर उससे अपने बच्चे जीवित करवाती है ।

भैया पांचै की कथा में भी नाग एक स्त्री का भाई बनकर आया है ।[17] इस कथा में सास द्वारा बहू को परेशान करने के कारण बहू दुखी रहती है, सर्प उसका चचेरा भाई बनकर उसकी सहायता करता है । नाग–पंचमी और भैया पाँचै में नाग को भाई बतलाया गया है । वह अपनी बहिन को बहुत प्यार करता है । आने वाली सभी विपत्तियों से उसे बचाता है ।

<u>कुत्ता</u>

बुधवार की कथा में कुत्ते को वर बतलाया गया है । इस कथा में एक बुढ़िया अपनी पुत्री पर गुस्सा होकर उसका विवाह कुत्ते के साथ कर देती है ।[18] उसकी पुत्री ईमानदार और सदाचारिणी थी अतः वह कुत्ता भी मानव बन जाता है । इस कहानी में यह दिखाने की चेष्टा है कि ईमानदारी से नियमपूर्वक व कर्तव्यनिष्ठा के साथ चलने से मनुष्य विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना लेता है ।

<u>शूकर</u>

मानवेतर जीवों में शूकर बहुत ही गंदा घृणित और निकृष्ट जानवर माना जाता है । जब कोई व्यक्ति किसी पर क्रोधित होता है तो गाली के रूप में भी इस शब्द का प्रयोग करता है । किसी बुद्धिहीन गन्दे व असभ्य व्यक्ति को भी सूअर

कह दिया जाता है । कार्तिक स्नान की ब्रज–लोक–कथा में भी इस जीव का आगमन हुआ है ।[19] एक स्त्री अपनी सास को सम्पन्न व सुखी होते देख अपनी माँ को भी कार्तिक स्नान का व्रत रखने को कहती है । परन्तु उस स्त्री की माँ कपटपूर्ण व अनियमानुसार व्रत रखने के कारण भगवान की कोप–भाजन बनती है और शूकरी बना दी जाती है । फिर उस स्त्री की सास के न्हांवन (नहाने से बचे हुए जल) के जल से नहाने पर ही उसका उद्धार हो पाता है ।

जंगली शूकर गंदा होने के अतिरिक्त बलिष्ट भी होता है । पंचतंत्र की कथा में यह देखा जा सकता है ।[20]

पाद टिप्पणियाँ

1. देखें भाग–2, कहानी संख्या 18
2. वही 2
3. वही 10
4. वही 19
5. वही 15
6. वही 16
7. वही 3
8. वही 7
9. वही 2
10. वही 20
11. वही 22
12. वही 22
13. वही 12
14. वही 8
15. वही 8
16. डॉ0सत्येन्द्र–ब्रज लोक–साहित्य का अध्ययन, पृष्ठ–411
17. देखें भाग–2, कहानी संख्या 23
18. वही 4
19. वही 11
20. श्यामा चरण पाण्डेय–पंचतंत्र (विष्णु शर्मा कृत) पृ0 275

अध्याय 5.

ब्रज लोक कथाओं के मूल तत्व (अभिप्राय)

मूल तत्व अथवा अभिप्राय शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान ब्लूमफील्ड ने किया था ।[1] यह शब्द अंग्रेजी के "मोटिफ" शब्द का हिन्दी अनुवाद है । अभिप्राय वे मूल तथ्य होते हैं, जो अनेक स्थानों पर एक ही रूप में हमें प्राप्त होते हैं । थोड़े से स्वरूप–परिवर्तन के अन्तर से अधिकांश क्षेत्रों में हम एक ही अभिप्राय देख सकते हैं । इससे मानव की भावनाओं की समरूपता का भी पता लगता है । यह भी ज्ञात होता है कि ये कथाएँ एक ही स्थान से कितने विस्तृत क्षेत्र में अपना विस्तार कर लेती है । ये प्रमुख बिन्दु इस प्रकार हमारे सामने आते हैं कि हम कुछ सोचने को विवश होते हैं, या जिनके बारे में हमें यह जानने की उत्सुकता रहती है कि यह क्या है ? किसी भी लोक कथा में ऐसे कुछ तथ्य लोक–कथाकारों ने आज हमारे सामने जो रखे हैं, उन्हें अभिप्राय, मूलतत्व इत्यादि के नाम से जाना–समझा जाता है ।

डॉ0 सत्येन्द्र की "ब्रजलोक–साहित्य का अध्ययन" नामक पुस्तक में ब्रज में प्रचलित लोक–कथाओं के इकतालीस अभिप्राय दे रखे हैं । परन्तु लोक–कथाओं में इन अभिप्रायों की कोई गणना नहीं है । जितनी कथाएँ होती हैं, उनमें से हर एक कथा में अनेक ऐसे मूलतत्व हमें प्राप्त हो सकते हैं । हमारी विवेच्य व्रतोत्सव संबंधी कथाओं में आये कुछ ऐसे तत्व यहाँ दिये जा रहे हैं ।

सात भाइयों में एक बहन

लोक–कथाओं में सात भाइयों में एक बहन अथवा सात भाइयों की पत्नियों की कहानियाँ देखने को मिलती है। लोक–कथाकारों या लोक–चिन्तकों को सात संख्या में कुछ विशेषता दिखाई दी है, ऐसा प्रतीत होता है। व्रतोत्सव संबंधी कथाओं में करवा चौथ में सात भाइयों के बीच एक बहन होने का उल्लेख होता है । इसी प्रकार अहोई आठैं की कथा में भी सात दौरानी–जिठानी होती हैं । व्रत संबंधी कथाओं के अतिरिक्त अन्य कई कथाओं में भी अधिक भाई, अधिक बहन इत्यादि दिखाने हों तो लोक–कथाकारों द्वारा सात की संख्या ही अधिकता की सूचक होती है । ब्रज में ही करौली–भरतपुर क्षेत्र में एक सात सुनारों की लोक–कहानी प्रचलित है, जिसमें सात बेरोजगार सुनार एक राजा के यहाँ नौकरी करते हैं व राजा, जो कि राक्षस होता है, की मायावी बकरी स्वरूपा राक्षसी की माया के शिकार होकर मारे जाते हैं । उनमें से एक किसी प्रकार बच निकलता है, जो उसी मायावी राक्षसी को मूर्ख बनाकर अपने छहों साथी जीवित कर लेता है । इसी प्रकार अन्य भी कई प्रकार की कहानियाँ प्राप्त होती हैं, जिनमें सात संख्या महत्वपूर्ण मानी जाती है ।

वस्तुतः सात संख्या को अधिकतम अथवा सम्पूर्णतम की द्योतक माना जाता है । लोक विश्वास व कहावतों में "सात समुन्दर पहली तीर" कहावत का भी प्रचलन है, यहाँ माना गया है कि सात समुद्र होते हैं अर्थात् समुद्र के सात भाग हैं, जिसके पार समुद्र की सीमा समाप्त हो जाती है । यहाँ सात स्थान की दृष्टि से सम्पूर्णता का द्योतक है ।

यदि समय की दृष्टि से भी समझने का प्रयत्न किया जाय तो सात की संख्या का हमें महत्वपूर्ण अर्थ देखने को मिलता है । सप्ताह सात दिनों का ही होता है, अर्थात् सातवें वार (शनिवार) के पश्चात् दिन गणना पुनः प्रारम्भ होती है । अर्थात् यहाँ भी सात संख्या चरमोत्कर्ष के रूप में हमें देखने को मिलती है । सात

संख्या का महत्व हमें तब और भी दृष्टिगोचर होता है, जब आकाश में सप्त–ऋषि–मण्डल हम देखते हैं, सात ऋषि मुख्य माने गये हैं और यह भी कि सात ऋषियों की ही सन्तान सातों जातियाँ मानी जाती हैं, यहाँ भी सात सम्पूर्णता को ही प्रकट करता है ।

वस्तुतः सात भाई यदि किसी बालिका के हैं तो लोक की मान्यतानुसार वह बालिका अत्यन्त लाडली समझी जाती है । लोक में सात की संख्या को अधिकतम के रूप में स्वीकार किया जाता है ।

राजा–रानी का प्रजा के धन पर हस्तक्षेप करना

लोक–कथाओं में जहाँ भी यह होगा कि किसी व्यक्ति के यहाँ यकायक किसी चमत्कारादि के द्वारा धन–सम्पत्ति बढ़ी है तो वहाँ उस सम्पत्ति को वहाँ के राजा द्वारा हथियाना प्रायः अवश्य दृष्टिगोचर होगा । यहाँ उस राजा की लोलुपता भी देखने को मिलती है व कहीं कहीं वास्तविक राजनीति का चित्रण भी माना जा सकता है । नाग पंचमी की कथा में राजकुमारी द्वारा उस स्त्री का हार मँगवाना एक स्त्री–हठ व धन के लालच का परिचय देता है, तो गणेश जी की कहानी में गणेश जी द्वारा बुढ़िया को प्रदान की गई सम्पत्ति को राजा द्वारा हड़पना राजा की कुशलनीति को भी प्रकट करता है कि इतने निर्धन के यहाँ इस प्रकार अचानक सम्पत्ति बढ़ जाना कहीं इस बात का तो परिणाम नहीं कि उन्होंने चोरी वगैरह की हो । इस प्रकार रविवार की कहानी में भी राजा द्वारा बुढ़िया की हीरे–पन्नो का गोबर करने वाली गाय को हथियाने का उल्लेख मिलता है ।

बाद में फिर प्रायः उस सम्पत्ति का वह राजा उपयोग नहीं कर पाता व संबंधित व्यक्ति से क्षमा माँगनी पड़ती है ।

खटपाटी लेकर सोना

खटपाटी लेकर सोने की यह परम्परा प्राचीनकाल से ही चली आ रही है । जब किसी स्त्री को कोई कार्य कराना होता है तो वह खटपाठी लेकर सो जाती

है । रानी अथवा राजकुमारी को जब अपनी इच्छा की पूर्ति करानी है, तो वे कोपभवन में जाकर खटपाटी लेकर सो जाते हैं, खटपाटी लेने का तात्पर्य एक प्रकार का "अनशन" भी हो सकता है । कहीं–कहीं खटपाटी के स्थान पर अपनी बात मनवाने के लिए भूमि पर ही पड़े रहने का उल्लेख है । इस प्रकार का उल्लेख 'रामचरित मानस' में कैकेयी द्वारा राम को वनवास व भरत को राज्य दिए जाने की कामना करने पर आता है, जहाँ कैकेयी ने कोप–भवन में धरती पर ही आभूषण उतार कर पड़ने का स्वांग रचा था । [2]

भैया पाँचै की कहानी में इस प्रकार का प्रसंग है कि जब उस लड़की का धर्म भाई नाग उसे हार देता है, तो उसे देखकर लेने की इच्छा से राजकुमारी खटपाटी लेके सो जाती है ।

दूबरी सातैं की कहानी में राजकुमार द्वारा धरूआपाती बनाने वाली लड़की से विवाह करने के लिए खटपाटी लेके सोने का वर्णन है । इस प्रकार शनि देवता की कथा देखिए । [3]

खूँटी द्वारा हार निगलना

किसी व्यक्ति को विपदा की स्थिति में दुर्भाग्य के चमत्कार द्वारा यदि आगामी आपत्ति की सूचना देनी हो तो मोर के आकार की बनी खूँटी उस पर टंगे हार को निगलने लगती है । गाज की कथा में यह प्रसंग आता है । गाज के अतिरिक्त शनिदेव की एक कथा में भी यह प्रसंग आया है, जिसमें राजा विक्रमादित्य पर शनि की दशा होने पर उनके व्यापारी मालिक के घर की खूँटी भी व्यापारी की पत्नी के हार को निगलती है, जिसका आरोप राजा विक्रमादित्य पर लगाया जाता है और वह कष्ट झेलता है। [4]

धनवान का अहंकारी होना

कहते हैं, जिस पर लक्ष्मी की कृपा हो जाती है, वह उल्लू बन जाता

है । लक्ष्मी का वाहन भी उल्लू होता है, अतः प्रतीकार्थ में धनाधिक्य होने पर अहंकार होने से भले बुरे का विचार करने का स्वयं से नियंत्रण समाप्त हो जाता है विवेक नहीं रहता; ऐसी लोक–धारणा है।

लोक–कथाओं में लोक–विचारकों ने यही सोचकर इस स्थिति का चित्रण किया है । गाज की कथा में राजा के निर्धन हो जाने पर उसकी बहन जो खूब सम्पन्न है, राजा को उचित सम्मान नहीं देती है, मोटी–मोटी रोटियाँ खिलाती है, पिछले दरवाजे से अन्दर बुलाती है, इत्यादि ।

गाय के बछड़ों को राँधना (पकाना)

ओघ द्वादशी की कथा में एक सास द्वारा अपनी बहू को धानूरा–पानूरा (धान इत्यादि) अर्थात् चावल राँधने का निर्देश देकर जाने पर बहू द्वारा धानूरा–पानूरा नामके ही उनके दो बछड़ों को काटकर राँधने का उल्लेख मिलता है। [5] यहाँ बहू का मूर्ख होना बताया गया है । राजस्थान में भी यह कहानी कही जाती है, परन्तु वहाँ इसके स्वरूप में थोड़ा अन्तर है । वहाँ की कहानी में बछड़ों के नाम धानूरा–पानूरा के स्थान पर गेहुआँ–धानियाँ होते हैं ।

बलि देना

ओघ द्वादशी की कथा में एक तालाब में पानी लाने के लिए एक राजा के राजकुमारों की बलि देने का उल्लेख मिलता है । इसके अतिरिक्त सकट चौथ की एक कथा में भी बच्चे की बलि देकर कुम्हार के आवे को पकाया जाता है ।

बलि का प्रचलन प्राचीनकाल से प्राप्त होता है, कहीं तालाब में पानी के लिए नर बलि तो कहीं देवी के समक्ष बकरे व भैंसे की बलि दी जाती है । नर बलि का वीभत्स रिवाज प्राचीन अन्धविश्वासों को प्रकट करता है, जो आज के वैज्ञानिक युग में असम्भव प्रतीत होता है ।

पड़ौसिनों द्वारा बहकाना

जहाँ कोई पड़ौसन किसी स्त्री को बहकाकर उसके अहित का कार्य कराती है वहाँ ईर्ष्या व द्वेष की भावना का पर्दाफाश होता है। भाई दौज की कहानी में एक पड़ौसन उस स्त्री को तेल का चौका व घी में चावल बनाने की सलाह देती है । इसी प्रकार दूबरी सातैं की कथा में एक पड़ौसन उस स्त्री के इतना पीछे पड़ जाती है कि उसका पति जो नाग का स्वरूप होता है, उससे अलग चला जाता है ।

उँगली में अमृत

करवा चौथ की कहानी में लड़की का पति मर जाता है, तो करवा चौथ माता उससे कहती हैं कि तेरी सबसे छोटी भाभी की उँगली में अमृत है । तब वह भाभी अपनी उँगली चीरकर उसका रक्त मृत देह पर छिड़कती है तो वह जीवित हो उठता है । इस प्रकार के उदाहरण ब्रज की अन्य कहानियों में भी पाये जाते हैं ।

ताना मारना

भैया पाँचै की कथा में ताना मारने का प्रसंग आता है । एक बुढ़िया की बहू का पुत्र जब झाड़ू की सींक फैला देता है तो उसकी सास उसे ताना देती है कि क्या तेरा मामा सोने की सींक दे जायगा जो तूने सींके फैला दीं । अन्य कहानियों में भी यह सुना जाता है ।

हाथ लगाने से कार्य होना

छूने से कार्य की सिद्धि होने जैसे प्रसंग भी इन लोक–कथाओं में सुनने को मिलते हैं । बुधवार की एक कथा में साहूकार का लड़का बैलगाड़ी के हाथ लगा दैता है, तो अड़ी हुई बैलगाड़ी आगे बढ़ जाती है ।

बैमाता द्वारा रहस्योद्घाटन

बैमाता कई कथाओं में एक स्त्री या बुढ़िया के रूप में देखने को मिलती हैं । "बैमाता" को "विधना" या विधाता भी कहा जाता है । "जो बिधना नें लिखि दिए छठी रात के अंक, राई घटै न तिल बढ़ै रहि रे जीव रिसंक ।" वाली उक्ति के अनुसार लोक–विश्वास है कि जो कुछ विधाता के द्वारा मनुष्य के कपाल पर लिखा जाता है, वह हर परिस्थिति में होकर ही रहता है । हिन्दू धर्मग्रन्थों के अनुसार भी मनुष्य के भाग्य में उसकी समग्र जीवन यात्रा के निर्देशक संकेत अंकित रहते हैं । भइया दौज की कथा में उस बहिन को रास्ते में बैमाता मिलती है, और उसे बताती है कि अमुक स्थान पर उसके भाई को स्यौंपिन काटेगी । और वह अमुक तरीके से बच सकता है । "बैमाता" यही विधना है ।

पाद टिप्पणियाँ

1. डॉ0 राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी–ब्रज–लोक–साहित्य और संस्कृति पृ0 131
2. भूमि सयन पटु मोर पुराना । दिए डारि तन भूषन नाना।। –रामचरितमानस (अयोध्याकाण्ड)
3. देखिये, भाग–2 कहानी संख्या 27
4. वही 27
5. वही 23

अध्याय 6.

ब्रज लोक–कथाओं की भाषा एवम् शैली

भाषा

मनुष्य में जब से सभ्यता का विकास हुआ, जब से मनुष्य ने अपनी बुद्धि व मस्तिष्क का उपयोग करना प्रारम्भ किया, तभी से उसे अपने जीवन में नित्य–नूतन आवश्यकताओं का अनुभव होने लगा । अपनी आवश्यकताओं को, अपने विचारों को व अपनी समग्र भावनाओं को एक–दूसरे से व्यक्त करने का एक सुव्यवस्थित ढंग उस समय तक मनुष्य के पास नहीं था । कहते हैं, आवश्यकता आविष्कार की जननी है, बस, तभी मानव ने अपनी भावनाओं व विचारों को ध्वनि–संकेतों से प्रकट करना प्रारम्भ किया और इस प्रकार इन ध्वनि–संकेतों के व्यवस्थित रूप को भाषा के रूप में जाना गया ।

डॉ0 मंगल देव शास्त्री ने महाभाष्य के आधार पर मनुष्य के उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चरित वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा विचारों के प्रकटीकरण को भाषा माना है ।[1]

मनुष्य के जीवन में भाषा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है । जीवन के सम्पूर्ण क्रिया–कलापों को भाषा के बिना पूरा नहीं किया जा सकता मनुष्य अपने मन में जो भी अनुभूति करता है, उन्हें व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता चाहे वह प्रसन्नता की अनुभूति हो, अथवा किन्हीं अन्य भावनाओं की । इसी प्रकार जीवन के प्रत्येक सोपान पर हमें भाषा की उपयोगिता का ज्ञान होता है ।

लोक भाषा

भाषा के दो रूप हमें दृष्टिगोचर होते हैं । एक वह भाषा जो साहित्य से संबंधित होती है । इस भाषा का प्रयोग अधिकांशतः तत्सम शब्दावली युक्त होता है और साहित्यिक क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी इसका उपयोग किया जाता है , जैसे औपचारिक व सम्मान सूचक वार्तालाप करते समय । इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकार की भाषा को हम लोक भाषा के नाम से अभिहित करते हैं । यह भाषा प्रायः अनौपचारिक वार्तालापों की सीधी–सरल भाषा होती है । इसमें साहित्यिक व तत्सम शब्दों का तद्भव रूप देखने को मिलता है और यह परिवर्तनशील होती है । समय के अनुसार इस लोक–भाषा में परिवर्तन होते रहते हैं । लोक–भाषा का प्रयोग अधिकतर ग्रामीण अंचलों में किया जाता है । यह भाषा ही लोक–साहित्य की भाषा मानी जाती है । सरल शब्दावली से युक्त इस भाषा में मनुष्य की प्राकृत अनुभूतियों की झलक मिलती है । गालियों तथा असभ्य शब्दों का प्रयोग भी इसमें सामान्य बात है । इसमें कुछ भी औपचारिक नहीं है ।

ब्रजभाषा अपने आप में पूर्ण भाषा है। यह हमें साहित्यिक व लोक–भाषा दोनों रूपों में प्राप्त होती है । भक्तिकाल , रीतिकाल इत्यादि की काव्य रचनाओं में तत्सम शब्दावली युक्त साहित्यिक ब्रजभाषा का बाहुल्य है । सूर आदि की भाषा में ब्रजभाषा का उच्च साहित्यिक रूप देखा जा सकता है ।

(अ) ब्रज–लोक–कथाओं की भाषा

ब्रज की लोक–कथाओं की भाषा ब्रज की लोकभाषा है । लोक–कथाओं में उपलब्ध आम बोलचाल की भाषा के विविध रूप देखे जा सकते हैं । किसी भी लोक भाषा की एक विशेषता यह होती है कि वह किसी बन्धन को स्वीकार नहीं करती । हमने पूर्व में स्पष्ट किया है कि यह अनौपचरिक भाषा है । 'लोक' अपनी सुविधा और सहजता के आधार पर इसका प्रयोग करता है ।

ब्रजभाषा का जो प्रयोग लोक–कथाओं में मिलता है, वह पूर्णतः व्यावहारिक प्रयोग

है । जैसी भाषा व्यवहार में बोली जाती है वही इन लोक–कथाओं में भी प्रयुक्त की जाती है । इसका व्यावहारिक स्वरूप बड़ा ही सहज और सरल है । ब्रज–लोक–कथाओं की भाषा के बारे में कु0 विनीता शर्मा ने लिखा है कि यह भाषा बनावटीपन से परे है व इसका साहित्य रसमय व आनन्द–विभोर करने वाला है ।[2]

इस भाषा में पुरुष ध्वनियों का उच्चारण न किया जाना इसकी सहजता का प्रमाण है । उदाहरणार्थ–

ब्रजभाषा में 'ण' की ध्वनि का उच्चारण नहीं किया जाता, अपितु कोमल ध्वनि 'न' का प्रयोग इसके स्थान पर किया जाता है । 'गणेश' को यहाँ 'गनेश' कहा जाता है । इसीप्रकार 'भूषण' को 'भूसन' , 'रावण' को 'रामन' बोला जाता है ।

कुछ अपवादों को छोड़कर 'य' वर्ण का उच्चारण ब्रजभाषा में 'ज' हो जाता है । उदाहरणार्थ–'यमुना' का 'जमुना', 'यद्यपि' का 'जदपि' इत्यादि ।

तालव्य 'श' और मूर्धन्य 'ष' दोनों ध्वनियों का उच्चारण दन्त्य 'स' ही हो जाता है । उदाहरणार्थ–'शनि' का उच्चारण 'सनी' व 'षटकोण' का 'सटकोन' आदि ।

'क्ष' वर्ण दो ध्वनियों के मेल से बना होने के कारण ब्रजभाषा के सरल व माधुर्यमय रूप के प्रतिकूल पड़ता है । परिणामतः 'क्ष' को 'छ' बोला जाता है । 'लक्ष्मी' को 'लछमी', 'अक्षत्' को 'अच्छत्' इत्यादि ।

कहीं–कहीं 'ड़' वर्ण 'र' बनकर उच्चरित होता है । जैसे–'गुड़' का 'गुर' और 'कीड़ा' का 'कीरा' इत्यादि ।

(ब) शब्द

ब्रज–लोक–कथाओं में प्रयुक्त ब्रज–भाषा के शब्दों में तत्सम के बजाय तद्भव शब्द अधिक प्रयुक्त होते हैं । लोक–कथाओं में प्रयुक्त शुद्ध ब्रज–भाषा के कुछ शब्दों को यहाँ दिया जा रहा है –

अबेरौ	देर से, विलम्ब से
आवा	मिट्टी के बर्तन पकाने की भट्टी

कन्नी–उँगरिया	अनामिका उँगली
करनी	भाग्य, किस्मत
काजै	हेतु,
खसम	पति
खंडतु	खंडित
खोंचि	हथेली को मोड़कर पानी अथवा तरल वस्तु लेने की पद्धति
गस्सा	ग्रास, टुकड़ा (रोटी का)
चौंटी	तर्जनी उँगली व अँगूठे को मिलाकर किसी वस्तु का पकड़ना
जान जुगारी	टोने–टोटके, तंत्र–मंत्र में विश्वास रखने वाली महिला
जापौ	बच्चे होने (जनने) की प्रक्रिया
जैंगरा	बछड़ा
जोरैं	निकट
धौताएँ	सवेरे
नौनौ	मक्खन
न्यारी	अलग
पहल–पलौठी	पहली बार का
पेट से	गर्भवती
पोत	बार, समय, दफा
पौनौ	रूई
बइयर	स्त्री
बखत	समय
बाँबी	बिल (सर्प का)
बिटौरा	कंडे रखने का स्थान
बिहा	विवाह
भायेलौ	मित्रता
भैना,भैनी	बहन
भौजाई	भाभी
भिट्टौ	बिल
भुकभुकौ	प्रभात

मोचड़ी	जूती
ल्हास	मृत देह, लाश
रांधनौ	पकाना
रिस्याय	क्रोधित
सिगरौ	सम्पूर्ण
सीरौ	बासी
सीक	लगभग
सूक	शुक्र
सोग	शोक

(स) सूक्ति प्रयोग

कथा या कहानी कहते समय वक्ता उस कहानी के अनुरूप सूक्तियों का प्रयोग यत्र–तत्र कर देता है ।

जैसे पुन्न की जर हरी और सोमवार की कथा में बाबाजी के माध्यम से वक्ता कहता है– "धर्म बढ़ै, बेटी गंगा स्नान" और सकट चौथ की कहानी में दौरानी की देखा–देखी जिठानी कपटपूर्ण व्रत रखती है, तो उसे उसका कुपरिणाम भुगतना पड़ता है । उस समय वक्ता के मुख से कहानी के अंत में निकलता है – "काऊ ऐ देख कें जरबे कौ जेई नतीजा होय" इसी प्रकार अन्यत्र स्थानों पर सूक्तियों का प्रयोग देखा जा सकता है ।

ब्रजलोक–कथाओं की शैली

"शीलमेव स्वार्थेष्यड़ ड़ीपि य लोपः" [3]

अर्थात् शील धातु में ष्यड़ और ड़ीपि प्रत्ययों के योग से शैली शब्द बना है । इसी प्रकार शैली का अर्थ हुआ शील को अभिव्यक्त करने की पद्धति । शैली द्वारा मन के भावों की गहराई तक पहुँचा जा सकता है । लोक–कथाओं में वक्ता बिना किसी अतिरिक्त सजावट के कथानक की माँग के आधार पर वास्तविक व स्वतः स्फूर्त शैली में कथा कहता है । ब्रज की व्रतोपासना संबंधी कथाओं में जिन शैलियों का प्रयोग मिलता है, वे इस प्रकार हैं –

घटनामूलक शैली

ब्रज की लोक–कथाओं में अधिकांशतः घटनामूलक शैली का प्रयोग मिलता है । इस शैली में कहानी के कथानक की घटनाओं को क्रमबद्धता के साथ ज्यों का त्यों चित्रित कर दिया जाता है । इसमें वक्ता अपनी ओर से कुछ भी जोड़कर नहीं चलता । नाग पंचमी की कथा का एक उदाहरण प्रस्तुत है –

"सात द्यौरानी जिठानी हीं । एकु दिना कहा भयौ कै वो सब लीपबेकूँ मट्टी खोदबे गई । म्वां पै खोदते में एक स्यापुँ निकरि आयौ । बड़ी भऊ बाय मारबे लगी तौ सबते छोटी भऊ नें वो स्याँपु बचाय लियौ । स्यांपु बापै खुस है गयौ ।[4]

इसमें द्यौरानी व जिठानियों का लीपने के लिए मिट्टी खोदने जाना, वहाँ सर्प का निकलना और छोटी बहू का उसे बचा लेना, यह सब एक घटना के रूप में वर्णित कर दिया गया है । इसके द्वारा श्रोता की आँखों के सामने सभी घटनायें एक–एक करके आती चली जाती हैं ।

कथोपकथन शैली

लोक–कथाओं का वक्ता जब कथानक के पात्रों के माध्यम से बात करता है तो वहाँ कथोपकथन अथवा संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं । लोक–कथाओं की इस शैली में यह विशेषता होती है कि इसमें पत्रानुकूलता का बड़ा सुन्दर प्रयोग देखने को मिलता है । यदि संबंधित पात्र नायक सीधा व्यक्ति है तो वह उसी शैली में बात करेगा और यदि वह खलनायक या किसी को हानि पहुँचाने वाला पात्र है तो वहाँ उसकी कथोपकथन की शैली भी कटु व यहाँ तक कि गाली गलौजपूर्ण हो जाती है । भाई दौज की कथा का एक अंश इस संदर्भ में द्रष्टव्य है, जिसमें भाई दौज के त्योहार पर भाई अपनी माँ से बहिन के बारे में पूछता है –

"अम्मा–अम्मा, मेरी भैनि कहाँ पै रहै ?"

तो उसकी माँ उत्तर देती है–

"बेटा, तेरी भैनि तौ यां ते भौत दूरै । "

इसी प्रकार बुद्धवार की एक कथा में एक माँ अपनी पुत्री से इस कारण से रूष्ट हो जाती है कि वह ईमानदार थी । वह अपनी पुत्री से क्रोधित होकर कहती है–"दारी , तेरौ ब्याहु कुत्ता के संग कर दुँगी ।" इस बात को सुनते ही कटुत्व प्रतीत होता है । (दारी ब्रजभाषा में प्रचलित एक गाली है)

व्यंग्यात्मक शैली

मन में ईर्ष्या व द्वेष की भावना के होने से किसी व्यक्ति की वाणी से किसी के प्रति दुर्भावनापूर्ण शब्द निकलते हैं तो लोक–कथा वक्ता उन शब्दों की अभिव्यक्ति व्यंग्यात्मक शैली में पात्रों के माध्यम से करता है ।

समाज में सास–बहू व दौरानी और जिठानी में आपसी तालमेल न बैठा पाने के कारण अधिकतर मनमुटाव होता है । लोक–कथा में भी इसको देखा जा सकता है । भैया पाँचै की एक कथा में जब एक स्त्री का बच्चा झाड़ू की सींकों को फैला दैता है तो उसकी सास उस बहू से व्यंग्यात्मक भाषा में कहती है–

"तेरौ भइया का सोने की सींक दै जायगौ सो जे ऐसैई फैलाय दईं ।"[5]

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अनौपचारिक, सहज एवं पारम्परिक स्वरूप के आलिंगन में आविष्टित रहने के कारण ब्रजलोक–कथाओं की भाषा भी तद्नुरूप ही है । जहाँ तक शैली का प्रश्न है, लोक कथा को कहने वाला व्यक्ति घटना, परिस्थिति, पात्रानुकूलता तथा देशकाल व वातावरण के आधार पर जहाँ अपनी शैली में विभिन्न शब्द, वाक्य चयन करता है, वहीं विचलित प्रयोगों से उसे आकर्षक भी बनाने का प्रयास करता है । कुल मिलाकर नैसर्गिक भाषिक वातावरण में पली इन कथाओं में श्रोताओं को आकर्षित करने की क्षमता विद्यमानहै ।

पाद टिप्पणियाँ

1. डॉ0 मंगल देव शास्त्री–भाषा विज्ञान, पृ0 5
2. कु0विनीता शर्मा–ब्रज क्षेत्रीय महिलाओं के व्रत और उनकी कथाएँ, पृ0 102
3. डॉ0 वी0एस0 आप्टे–संस्कृत हिन्दी कोश, पृ0 1030
4. देखें भाग–2, कहानी संख्या 12
5. वही 23

उपसंहार

लोक–साहित्य मानवीय जीवन के इतना अधिक सन्निकट है कि उसकी अत्यन्त सूक्ष्म से लेकर स्थूल गतिविधियाँ तक उसमें समाहित रहती हैं । व्रतों और पर्वोत्सवों से संबंधित लोक–कथाएँ, जन–सामान्य के उन विश्वासों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनमें उसके आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक संस्कारों का वर्चस्व निहित है । इन्हें एक प्रकार से समाज के सुरक्षा कवच के रूप में जाना जा सकता है, क्योंकि लोक–मंगल की कामना का इनमें प्राधान्य रहता है ।

भारतीय समाज में नारी को एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया गया है । यह स्थान उसके विभिन्न संबंधों के भावनात्मक स्वरूप के कारण उसे समाज में पूजनीय सिद्ध कर देता है । माता के रूप में, बहन के रूप में तथा पत्नी एवम् पुत्री के रूप में वात्सल्य,स्नेह,आत्मीयता तथा ममत्व के अजस्र स्रोतों से उच्छलित मंदाकिनी को प्रवाहित कर नारी, समाज में अपनी विशेष उपादेयता सिद्ध करती है । यह एक वास्तविकता है कि अपने सम्पूर्ण परिवेश की मंगलमय तस्वीर देखने की अदम्य उत्कण्ठा ही स्त्री को दैविक आराधन की ओर प्रेरित करती है । स्त्री का कोमल और भावनात्मक हृदय पारिवारिक सुख और शान्ति की कामना में प्रतिक्षण समर्पित रहता है । तभी तो इन मंगल–कामनाओं के निमित्त वह प्रत्येक दिन अपने इष्ट को श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हुई आनुष्ठानिक आयोजन करती है । यह सत्य है कि अधिकांश आयोजनों की संयोजना स्त्री के ही द्वारा संपन्न की जाती है । इस अवसर पर संबंधित कामना की पूर्ति हेतु तत्संबंधित देवी अथवा देवता की पूजा–अर्चना के साथ उसका माहात्म्य, कथा के रूप में कहा–सुना जाता है । इसके अन्तर्गत उस देवता–विशेष के द्वारा, दिन–विशेष को किसी विशेष पूजा–पद्धति के करने पर कामना विशेष की पूर्ति होती दिखाई जाती है । कामनाओं की पूर्ति के निमित्त कही जाने वाली इन कथाओं में पारम्परिक विश्वासों और मान्यताओं को पूर्ण मनोयोग के साथ हृदयंगम किया जाता है । कहीं–कहीं अन्धविश्वासों का भी समावेश इनमें हो गया है । अनेक कथाओं में यद्यपि इन अन्धविश्वासों को सहज रूप से ही स्थान प्राप्त हुआ है फिर भी इनकी अनन्यता लोक–मंगल की कामनाओं के ही निमित्त रहती है ।

इन कहानियों के पात्रों में जड़–चेतन सभी दृष्टिगोचर होते हैं । मनुष्यों के अतिरिक्त पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु सभी का अपना महत्व है । लौकिक–अलौकिक समस्त रूपों में इनके पात्रों को स्थान मिलता है । देवी–देवता,

सूर्य–चन्द्रमा, जल–अग्नि तथा वायु इत्यादि अपने अस्तित्व को साक्षात् प्रकट कर मनुष्यों के साथ वार्तालाप करते हैं । यहाँ सभी कुछ चैतन्य है, जड़ होना इन कथाओं की भावना से परे है ।

जहाँ तक वातावरण का संबंध है, परम्परागत और अत्यन्त पुरातन काल से यथारूप प्रवाहमान रहने के कारण इन कथाओं के वातावरण पर पूर्णरूप से ग्राम्य प्रभाव देखा जाता है । ग्रामीण, प्राकृतिक तथा पारिवारिक परिवेश की सुषमा से मण्डित इनका सहज सौन्दर्य बनावट से पूर्णतः पृथक अपना मौलिक अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम है । इनके वातावरण में क्षेत्रीयता स्वाभाविक रूप से मुखर होती हैं । ब्रज–लोक कथाओं में यहाँ का मौलिक परिवेश तथा वातावरण सहज रूप से अपना दिग्दर्शन कराता प्रतीत होता है ।

स्वाभाविक रूप से लोक–साहित्य की भाषा उस क्षेत्र विशेष से संबंधित होती है । ब्रज लोक कथाओं में प्रयुक्त ब्रजभाषा, ब्रजांचल की सामान्य बोलचाल की पारिवारिक भाषा है । इसमें प्रयुक्त शब्दों की अनौपचारिकता, स्वाभाविकता की ओर संकेत देती हुई उन समस्त मुहावरों कहावतों, गालियों इत्यादि को अपने आप में आत्मसात् किये रहती हैं, जिन्हें औपचारिकता के आवरण में ढके शिष्ट साहित्य से ओझल हो जाने को विवश होना पड़ता है । इनका कोई लिखित स्वरूप नहीं होने के कारण प्रायः मौखिक परम्परागत रूप से एक से दूसरे को सुनाया जाता है, अतः प्रत्येक वक्ता द्वारा प्रयुक्त भाषा अथवा शैली में अन्तर आ जाता है । फिर भी कुछ वाक्य इस प्रकार के हैं, जिन्हें प्रत्येक कथा कहने वाले के मुख से तद्नुरूप ही सुना जा सकता है । उदाहरणार्थ मंगल कामना सूचक वाक्य–"जैसौ (अमुक) कूँ भयौ वैसौ सबकूँ होय ।" अथवा (अमुक) पै तौ (अमुक) देवता टूटे हैं।" यह एक ऐसी शैली में कही–सुनी जाती है जो साधारणीकरण की अवस्था को प्राप्त करने की स्वाभाविक सी प्रक्रिया बन जाती है ।

निष्कर्षतः ब्रज की लोक–कथाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि इस पावन पुनीत वसुन्धरा के सर्वांगीण परिवेश को और यहाँ के कृष्णमय वातावरण से निसृत अत्यन्त दिव्य, आध्यात्मिक और साहित्यिक गुणों से इस भावभूमि के चिर निवासियों को संतृप्त करती रही हैं । यद्यपि लोक–वार्ता में कथानक की दृष्टि से प्रायः सार्वभौमिकता ही दृष्टिगोचर होती है तथापि ब्रजांचल की लोक–कथाओं में इस पावन ब्रज वसुन्धरा के कण–कण में रचा–बसा प्रेम–पीयूष इस प्रकार समाहित है कि इन्हें पृथक पहचान के रूप में स्वाभाविक रूप से जाना जा सकता है ।

ब्रज–लोक कथाएँ

(1) सूर्य भगवान की कथा

एक दिना की बात । ऐसौ भयौ कै सूर्जनारान भगवान रात कूँ बिसराम कर रहे हे । उनकी पत्नी हू उनके पास बैठी हीं । उनने सूर्जनारान भगवान ते कही कै महाराज तुम पूरे–पूरे संसार में उजीतौ देऔ, कबहू आराम नाँय करौ, याकौ कहा कारन है । सूर्जनारान भगवान नै कही मैं पूरे संसार कौ भलौ चाहूँ सबै भोजन दऊँ, पानी दऊँ सबनकूँ धूप दऊँ जाते उजीतौ होय । उनकी बहू बोली कै महाराज बहौतेरे जीव ऐसे हू हैं जिनके पास तुम्हारी धूप तक नाँय पहौंच सकें–बाय तुम कैसें दानौ–पानी दियौ करौ । भगवान मैं कही कै जो तोय या बात में संका होय तौ परीख्या लैकै देख लै । मैं सबही कौ भलौ करुं, मोते कोई छुप्यौ नाँय ।

यौं सुन कै उनकी पत्नी नें का काम करौ कै एक चैंटी छोटी सी डिबिया में बन्द करकैं रख दई । सबेरे जब बानैं बो डिबिया खोली तौ का देखै कै बाके मौंह में एक चामर कौ दानौ लग रह्यौ । झट्ट बो सूर्जनारान भगवान की सरन परि गई । बोली, महाराज तूम धन्न हौ, तुम तब जगह पहौंच सकौ, या लियैं आदमी ऐ भगवान के भरोसे पै रहनौ चहिए । बो सबै देय । बोलौ सूर्जनारान भगवान की जै ।

(2) सोमवार

एकु घर में एकु माँ बेटी और बहू हते । म्वाँ पै एकु बाबाजी आयौ करतो । बहू ते तौ वो कहतौ कै बेटी दूधन नहाऔ, पूतन फलौ । बेटी ते कहतौ– धर्म बढ़ै बेटी गंगा अस्नानु । एकु दिना बाकी मइया नें पूछी कै जे कहा कहतुऐ बा नें कही

कै तेरी बेटी कौ सुहाग खंडतुऐ । सोमा धोबिन के घर जो चौका कूड़ौ करै तौ बो ज्याय सुहाग दै कतुऐ । बा दिना ते बो छोरी सोमा धोबिन के घर रोज चुपचाप जाती । एकु दिना बाने देख लियौ. देख लियौ तौ पूँछी कै तू मेरे घर कौ काम च्यौं करौ करै । बा छोरी नें बाबाजी की कही सबरी बात वाय बताय दई । सोमा बोली कै तू चिन्ता मत करै जाके भ्या पै मोय बुलाय लीजों मै जाय सुहाग दुँगी । भ्या के समै बकी मइया बोली, अब बुलाऔ बा धोबिनियाऐ । सोमा बुलाई गई, बानै अपनी माँग में ते छोरी की माँग मैं सिन्दूर भरि दियौ । म्वां पै बाकौ आदमी मरि गयौ । जब वाय बाके घरवारे जाते मिले तौ बानैं बो सब रोकि लिये । संकर पारवती कौ ध्यानु करिकै फिर अपनी उँगरी चीरिकै, बाकौ खून अपने आदमी पै छिरकि दियौ और पीपर की आठ परकम्मा दई । तौ बाकौ पती जिन्दौ है गयौ । जैसे संकर जीनें वाकौ सुहाग दियौ वैसें सबकूँ दैं ।

(3) मंगलवार

एक गरीब बामन हतो । बो मंगलवार कौ वर्त रहतौ । बापै हनुमानजी खुस है गये और वाय बरदान दियो कै तेरे घर सवा पहर कंचनु बरस्यैगौ । जा बात कूँ एक बनिया सुन रह्यौ हो । बनिया बड़ौ कंजूस होय, पूरौ मक्खीचूस । बानें अपने घर ते बा बामन कौ घर बदल लियौ । पर तऊ सौनौ नाँय बरस्यौ । वा बनियाँ ने रिस्याय कै, खैंच कै एक लात हनुमान जी की मूर्ति पै मारी । हनुमानजी की माया कौ पिरभाव । मारत खैमइ वो लात चिपक गई । अब बो घबरायौ, हनुमानजी की पिराथना करी कि महाराज गलती है गई माँफ करौ । हनुमानजी नैं कही कै देख जो तू बामनऐ सौनौ देय तौ छेड़ूँ । बनिया नें हनुमानजी के अगारी तिरवाचा भरीं तब हनुमानजी नें वाय छोड़्यौ ।

(4) बुद्धवार

एक डोकरी हती । बाके एक छोरी बुधवार के दिना पैदा भई । सो बानै बाकौ नाम बुद्धौ धर दियौ । बो डोकरी भौत गरीब हती सो राजा के न्याँ चून पीसबे

जायौ करती । जबउ जाती तौ म्हाँते थोरौ सौ चून बचाय लाती । एक बार बु डोकरी बीमार परि गई तौ बानैं अपनी छोरीऐ राजा के न्याँ चून पीसबे भेज्यौ । पर छोरी पक्की ईमानदार ही। सो चून–फून चुराय कै नाँय लायी । डोकरी बापै रिस्याय गई और बोली कै च्यौं री चून नाँय लाई, तेरौ खसम दै जायगौ का । दारी ! तेरौ ब्याह कुत्ता के संग कर दूँगी । अब तो जब वो अपनी छोरी के ताईं छोरा देखवे निकसै तौ सब जगै बाय कुत्ताई दीखैं । झट्ट एक कुत्ता पकरि कै बाते अपनी छोरी बुद्धो व्याहि दई । पर भगवान की माया कौ खेलु वो कुत्ता एक चोखो सो छोरा बनि गयौ और बुद्धो चोखी तनइंयां रहबे लगी । बा डोकरी नैं घनौ दुख देख्यौ । बीमार है गई और बाके कोरा पर गये, खटिया पै ही पड़ी रहै । तौ बड़ी दुखी भई । एक बइयर नैं वा छोरी ते कही कै तूई जाकौ उद्धार कर सकै । छोरी नें भगवान ते माँफी मांगी और बुद्धवार कूँ बरती रही तौ जायकै बाकी मइया चोखी भई ।

(5) गुरुवार

एक धनवान साहूकार की बइयर कंजूस हती । वाके यहाँ एक बाबाजी आयौ करतो, पर वो वाय भिख्या नाय देती कह देती मोय फुरसत नांय मिलतुई । बाबाजी नैं कही कै तू रोटी बनाय कै चूल्हे के पीछै बरतनन्नै औंधे धरि देऔ करि और घर वारेन ते कह दीजौ कै बिस्पित कूँ बार बनवायौ करैं और साँझ निकर जायबे पै रात कूँ दियौ जरायौ करियो, तोय खूब फुरसत मिलैगी । वा बइयर नैं ऐसौ ई कर्‌यो, भगवान की माया । अब तौ बू गरीब है गयी, ब्यौपार ठप्प हैगौ । बाबाजी फिर आयौ तौ बानैं कई कै बाबा मेरौ तौ धन खतम है गयौ, अब तौ न काम न धन्धौ मेरे बच्चा भूखे मरैं कहा करूं । बाबाजी बोल्यौ कै देख बाबरी विस्पित वार कूँ घर बारे वार नाँय बनवामें, घर के बरतंन कूँ सीधे चूल्हे के सामई रख्यौ करि । सांझ कूँ जल्दी दियौ जराय दियौ करियौ । जब बानैं ऐसौ कर्‌यौ तौ बाकै नौ निद्ध–बारह सिद्ध है गये । फिर बो बाबाजी ऐ भीख डारवे लगी ।

(6) शुक्रवार

दो यार हते । साँझ कूँ एक यार दूसरे यार ते कहतौ कै मैं तौ आराम ते सोऊँगौ । सारे ! इकलौ तू पड़ि रइयौ । वाने पूछी कै तू यौं काहे कूँ कहै है । वो बोलौ कै मेरै तो भऊ है जा मारे मोय अच्छी तरह रखैगी । तू ऐसेंई सोय जाइगौ । बानैं कही कै मैं अबई जाइकै बहूऐ लिवाय कै लाऊँगौ । सो बो अपनी भऊ कूँ लिवायबे गम्म अपनी सुसरार पहुँचौ । ससुरार में सबन्नें कही कै अबइ सूक डूब रह्यौ है । कछू दिना बाद लै जइयौ पर वो कहाँ मानै । बहू ऐ जबइ लैके चल्यौ तो रस्तइ मैं सुक्कर भगवान मिल गये । बोले अबइ तौ जापै मेरौ अधिकार है, तू कैसे लै जायगौ । आदमी जुरि गये उनकी पिराथना करी जब सुक्कर देवता ने सबन्ते कही कै अबइ सूक डूब रह्यो है जा मारे अबइ जे मेरी बइयर है । मैं लै जाऊँगौ । फिर उनकी बिनती करी तौ उनने कही कै पहले जाय अपने पीहर पहुँचाऔ, सूक ऊगि आवै तौ लै जइयौं । अब तौ बाते गाम वारेन नैं ऊ नाई कर दई सो बाय अपनी बहू पीहर फिर पहौंचामनी परी । सूक ऊगिबे के बाद बो अपने घर गई ।

(7) शनिवार

एक डोकरी हती । वो रोज गाय के खूँटा पै सरसौं कौ एक पीपा तेल चढ़ाती । एक दिना सनिवार कूँ बाकी भऊ नें वाते मना करि दई । वो घर ते तेल लैवे निकरि परी । बिना पइसा को तेल देय ? सनीचर भगवान मिल गये । बिन्नें एक पीपा तेल दै दियौ । डोकरी नें वो तेल चढ़ायौ । फिर वो वा डोकरी कूँ अपने घर लै गए । उनकी भउ हू वा डोकरी ते अच्छी तनंइयाँ रहै । डोकरी के घर पै चोरी है गई । भऊ बेटा दुखी है गए । बेटा डोकरी ऐ ढूँढवे गयौ । भऊ नें रोक्यौ पर वो नाँय रूक्यौ । ढूँढ़त ढूढत म्हाँहीं पौचौं ज्याँ डोकरी हती । बाने कही के मइया चल तौ डोकरी बोली बेटा सनीचर देवता कह दिंगे तौ चलूँगी । बाने सनीचर दैवता ते पूँछी तौ उनने मना करि दई । डोकरी ऐ सनीचर देवता न जान देय, बोले तू उतते खेंच मैं इतते खेंचूँ । बेऊ बाके बेटा बन गए । दोनों बेटा अपनी लंग ते वाय खैंचवे लगे तौ दो डोकरी है गयीं एक सनीचर जी के संग चली गई एक बाके संग चली गई । सनीचर देवता नें

किरपा करि दई ।

(8) भैयादौज

एक भैया ओ । बाकी भैनि बाते भौत दूर रहती । एक दिना बानै अपनी अम्मा ते पूछी कै अम्मा–अम्मा मेरी भैनि कहाँ पै रहै, अम्मा नै कई कै बेटा तेरी भैनि तौ याँते भौत दूरै, अबके दौज पै बाकै जइयो । भैया दौज के त्यौहार पै वो भइया अपनी भैनि से मिलिबे गयौ, भैनि ऐ बड़ी खुशी कै मेरौ भइया आयौऐ, बो एकु परौसिन ते पूछिवे गई कैं पहली पोत जब भैया आबै तौ कहा करनों चइयै । पारौसिन दारी बाते जरती सो बोली कै तेल कौ तौ लगइयौ चौका, औरु घी में करियो चामर । बानैं ऐसोई कर्‌यौ । अब न तौ तेल कौ चौका सूखै न घी के चामर रंधैं । बो दूसरी पारोसिन कै गयी, वा पारोसिन नै कई कै है लाली, तू तौ बाबरी ऐ । कहूँ तेल कौ चौका लगै । देख गोबर कौ चौका लगा, दूध में चामर राँधि । बानै ऐसौई कर्‌यौ । खूब खातिर करी भइया की । जब भैया जायवे लग्यौ तौ बानै धौताएँ ई भुकभुके से में चाकी में चून पीस कै लडुआ बनाए । भइया के संग बाँधि दये । भइया चल्यौ गयौ तौ बाय पतौ लग्यौ कै चून कै संग में एक स्यांपु की माजर पिस गई है । अब तौ बो घबराय कै भागी–भागी भइया के पीछैई गई, माँ पै देख्यौ तौ भैया एक पीपर के पेड़ के नीचै सोय रह्यौ, भैनि गई तौ भइया नें पूछी कि तू च्यों आइ गई । कै भइया मोय उन लडुअन कूँ दैदै बो तेरे काम के नाँय । भइया ऐ बड़ौ दुक्ख भयौ, बोलौ लै जा तेरे लडुआ , मोय नाँय खाने । भैनि लडुआ लैकै चलवे लगी तौ रस्ता में बाय बैमाता मिली । बो कछू गढ़ि रही ई । भैनि नें बाते पूछी कै मइया जे कहा करै, बो बोली कै इकलौते पूत कूँ जे स्यॉपिन खावैगी । भैनि नें पूछी कै तौ बो कैसे बचि सकै । बैमाता बोली कै बाकी भैनि बा भइया के संग हर समै रहै । भइया की सुहाग राति के दिनां एक स्यॉपिन आबैगी या समै चार पाम हुंगे तौ खाय जायगी, छः पाम हुंगे तौ नहीं खायगी । बाय मारि देय तौ जि बचि सकै । अब तौ भैनि बाबरी सी है गयी, वाके संग रहबे लगी । बाई के संग परि गई । भैनि बा भइया ऐ गारी दैबे लगी । भइया की सगाई

आई तौ बोली पहले मरी सगाई करौ । लगुन आई तौ बोली पहले मेरी झेलौ । सबरे काम भइया ते पहले करे । ब्याह हैबे लग्यौ तो बोली, बारात के आगें–आगें चलूँगी । सो आगे ही आगे गयी । अब तौ भइया की सुहागराति के दिना बोली कै भइया–भाभी के संगइ मैं सोऊँगी । सबन्ने कही, सोय जान देऔ, बाबरी ऐ । रात कूँ बानै एक कटोरा में दूध भरिकै धरि दियौ । भइया–भाभी तौ सोइ गये पर बो जगती रही । आधी रात कूँ बारह बजे सीक स्याँपिन आई । दूध पियौ, जबई भइया ऐ खायबे लगी तौ भैनि नें स्यापिन पै खैंचि के तरवार मारी, स्याँपिन मरि गई । भैनि सोय गई सबेरै उठी तौ सबन्ते कही कै सबरे मेहमान–पामनेन्ने बुलाऔ, घर बारेन नें कही कै अब जनैं कहा करैगी जि पनमेसुरी । बुलाए । जब बानै कही कै देखौ, आज के दिना के ताई मैं बाबरी बनी ही, मैं बाबरी नहीं बनती तौ मेरौ भइया मर जातौ । हे भगवान, सबरे भइयन कूँ ऐसी ही भैनि दीजो ।

(9) शिव पार्वती

एक बइयर कै सन्तान नाई । वो दुखी रहती । एक दिना बानें संकरजी की पिराथना करी । संकरजी के पास पारवती हतीं । पारवती कूँ वापै दया आय गई तौ पारवती जी नें सिवजी ते कही कें जाय सन्तान देऔ । सिवजी नें बा बइयर ऐ एक बालक बारह बरस कूँ दै दियौ । बो बालक मामा के संग कासी पढ़बे गयौ । बई रस्ता में एक काने दूल्हे कौ ब्याह है रह्यौ । छोरी नें मना कर दई कै काने ते मैं ब्याह नाय करूँ तौ बाकी जगै मामा नें अपने भन्जे कौ बा छोरी ते ब्याह कराय दियौ । छोरी ऐ लेकैं घर आये । जब बाके बारह बरस पूरे हैवे वे पै आये तौ बानें बामन भोजन कराये । जबई बो मर गयौ । मामा, मइया बहुत दुखी भए । विननें पारवती जी की पिराथना करी । पारवती जी नें संकर जी पै बो जिन्दौ कराय दियौ । बोलौ सिव–पारवती की जै ।

(10) छठी माता

एक बइयर कै सन्तान नाई । सिव–पारवती बाय मिले । पारवती जिद्द

पकरि गई कि जाय संतान देऔ । सिवजी नें बाते कही कि मैं कोसिस करिकै तोय एक बेटा दै सकूँ । बो छठी मइया के पास गये । चौथ मइया के सात बेटा ऐ । रात कूँ जब बे सातौं काम पै ते घर आये तौ रोटी–पानी खबाय कैं सातौन्नें बू अपने चारों बगल में लैकें सोय रही । सिवजी नें कही कै जाय अपने बच्चान ते मोह भौत है, जनै देगी कि नांय । पर विनती करबे ते एक छोरा बानें दै दियौ, बोली, बारह बरस के काजैं ही मैं अपने छोराए दै सकूँ बाके बाद लै आऊँगी.। छोराऐ लैकै बइयर घर आई । छोराऐ बाकौ मामा ले गयौ । खूब प्यार ते रखै । एक दिना बाय नाँव पै बैठिकै घुमाइवे लै गयौ । तौ छोरा नें कही कि मेरौ मामा दूध निकारै माई खीर बनावै तौ मैं खाऊँ । लाड़ले भांजे कूँ ऐसौ ही कर्‌यौ । ऐसेई करत–करत बारह बरस निकरि गये । चौथ मइया नें बारह बरस कूँ ई वो दियौ हो। बारह बरस पूरे होंत खेंमई चौथ मइयां आई । बाते छोरा माँगौ । बाकी मइया नें कही कै हे मइया ! अब जाय काहे कूँ लै जाय । छठी मइया बोली कै जाही मारै मैं अपनौं बच्चा नाँय दै रही ही, अब तेरौ यापै मोह परि गयौ, खैर, ऐसौ करि, तू पल्ली बाँह पकरि कै खैंच, मैं उल्ली । जाकौ होयगौ बई पै आ जाइगौ । भगवान की किरपा ते दो छोरा है गये । एक–एक दोनों के संग चले गये।

(11) कार्तिक स्नान

एक बुढ़िया ही, वौ नित नैम ते जमुना अस्नान करती । रोज कृष्ण भगवान वाके पास आते, बाते कहते–मइया घंटरिया हलाऊँ एक लडडू पाऊँ । डोकरी भगवान जी कूँ लडुआ खवामती और आप भूखी रहती । कातिक स्नान पूरौ भयौ तौ भगवान नैं खुस है कै डोकरी सोलै बरस की कर दई । बाउनै अपनी मइयाऐ कातिक अस्नान करायौ । पर बाकी मइया ढोंग करती । कृष्ण भगवान आमते तौ लडुआ नाँय देती आपइ खाय जातीं । भगवान नें वो सूगरिया ब्रनाइ दई । बहू बड़ी दुखी भई । एक डोकरी नें उपाय बतायौ कै जो कातिक स्नान नैम ते करै बाके न्हामन के पानी ते जे न्हावै तौ ठीक है सकै । बा बहू नें सासू जी ते कही कै लाऔ माताजी, मैं तुम्हारी पीठ

मलूँ तुम न्हाऔ । सास नें कही कि आज तौ बहू बड़ी चोखी–चोखी सी बात करि रही है । बहू बोली नाँय सासू जी आज तो मोय तुम्हारि पीठ मलकैई न्हमामन देऔ । सास के न्हामन के पानी ते बाकी मइया न्हाई, जब ठीक भई । कोई ऐ देख कै कबऊ न जरै ।

(12) नाग पंचमी

सात दौरानी–जिठानी हीं । एकु दिना कहा भयौ कै वो सब लीपबे कूँ मट्टी खोदबे गईं । म्वाँ पै खोदते में एक स्याँपु निकरि आयौ । बड़ी बहू बाय मारिबे लगी, तौ सबन्ते छोटी बहू नें बो स्याँपु बचायौ । स्याँपु बापै खुस है गयौ, खूब पिरसन्न । बानैं कीनी कै आज ते मैं तोय अपनी धरम की भैनि मानूँगी । बइयर बोली जे तौ बड़ी अच्छी बाति ऐ । मेरे ऊ कोउ भइया नाओ । आज ते तुइ मेरौ भइया । स्याँपु बोल्यौ मैं तोय लैबे आऊँगौ । जब स्याँपु बाय लैवे आयौ तौ सासु नैं भेजि दीनी । स्याँपु बाय भिट्टें में है कै अपने महल में लै गयौ । महल बाकौ बड़ौ जड़ि रह्यो । हीरा–पन्ना जगिमगा रहे । म्वां पै स्याँपु की अम्मा ते वो अम्मा ई अम्मां बोलै, । सबरौ कुटुम्ब स्याँपु कौ वाय अपनी भैनि–बेटी मानें । जब बो जाइवे लगी तौ खूब सम्पत्ति दई, सोने–चाँदी के जेवर दिये । घर आई तौ जिठानी जरबें लगी । एक दिना बाकी जिठानी नें बाय बड़ौ तीखौ तानों मारौ कै ऐसोइ ऐ तेरौ भइया तो बापै सोने की झाड़ू मँगबा । ए बो स्याँपु तौ सोने की झाड़ू उ दैगौ । एकु दिना बो अपने सोने के हारै पहनि कै छत्ति पै डोलि रही । म्वां की राजकुमारी नें जब बु हारु देख्यौ तौ खटपाटी लैकें पड़ि गई कै मोकूँ तौ बुई हारु चइयै । राजा नें हारु मंगवाय दयौ, वो हारु स्याँपु कौ दियौ भयौ ओ, सो बाके गरे में स्याँपु इ स्याँपु है गये । राजकुमारी नैं बो उतारि दियौ तौ बो सोने कौ और हीरा पन्नान कौ है गयौ ।

(13) गाज की कहानी

एक राजा ओ, बाकी रानी ई । एक बार एक बामनी गाज लैकै आई तौ रानी नें गुमान ते बापै ते गाज नाँय लई । रानी की दासी नें बाते बो गाज लै लई वाय

समा के चामर दै दये । राजा कै जई बात ते विपदा आइ गई । राजा की सम्पत्ति खतम भई । राजा रानी जंगल में निकर परे । जंगल में राजा ऐ भूख लगी सो बानै एक तीतर भून्यौ तौ तीतर हू किस्मत कौ मारौ उड़ि गयौ । रानी ने कई मैने खाइ लियौ । मछली भूनी तौ पानी में चली गई । राजा नें कई मैनें खाय लई । राजा–रानी किस्मत के मारे अपने यार कै गये । यार के यहाँ कहा देखै कै एक खूँटी हार निगल गई । राजा नें सोची मोपै दोस आवैगौ सो वो चल दियौ । चल–चलामत, चल–चलामत अपनी बहिन के पहौंचौ । भैनि बाकी लालची ही, बानैं देखी कै हाय मेरौ भइया तौ नंगौ–भूखौ आय रह्यौ है । तौ बानें बाय पीछै के दरवज्जे ते बुलायौ । बाजरे की रोटी गुर ते खाइवे कूँ दई । राजा नें वो रोटी मई गाड़ दई । फिर राजा–रानी एक तेली के गये राजा तेली की घानी पेलौ करै । रानी बाकी टहल कियौ करै । तेली राजा बुद्धा के यहाँ चौपड़ खेलवे जातौ । वा राजा नें तरकीब बताई तौ बो तेली चौपड़ में बुद्धा राजा ते जीत गयौ । बुद्धा राजा नें बो राजा खेलबे कूँ बुलवायौ । राजा बाय देखतई पहचान गयौ कै जे तौ नल राजा है । नल राजा जीत गयौ । बुद्धा राजा नें अपनी छोरी वाके संग ब्याहि दई ।

(14) करवा चौथ

सात भइया ऐ । बिन की एक भैनि ई । वे सातौं बाय भौत प्यार करते । एक बार करवा चौथ कौ त्यौहार आयौ । बिनकी भैनऊ बा त्यौहार पै अपनी भौजाइन के संग बरती रही । रात कूँ जब चंदा निकसबे में देर है गई तौ भइयन नें सोंची कै भैनि बच्चा ऐ । कब तक भूखी रहैगी । बिन्नें का काम करौ कै एक भैया तौ दियौ जराय कै एक पेड़ के पीछै खड़ौ है गयौ एक भैया नें आगै चालनी लगाय लई । एक भैया नें भैनि ते कही कै देख चंदा निकरि आयौ सो भैनि नें कही कै चलौ भौजाइयौ चंदा देखि आमैं । बाकी भौजाई बोलीं कै जि तौ तुम्हारौ ही चन्दा है, हमारौ चन्दा तौ अबैरौ उगैगौ । भैनि विचारी बच्चाई, बु का जानें ? बानैं बोई चंदा पूजि लियौ । अब तौ बर्तु खण्डित है गयौ । ससुरार में ते खबरि आई कै तेरौ आदमी गुजर

गयौ । विचारी अपने ससुरार गई । पर बानें अपने मरद ऐ जरामन न दियौ । जंगल में एक झोपड़ी डारि कै बई में अपने आदमी ऐ लैकै रहबे लगी । वो ल्हास रखी–रखी सड़ गई हती सो वामें कीरा परि गये । बिन्नें बीनों करै । साल भर बाद करवा चौथ आई तौ बानै पिरार्थना करी कै मइया मेरौ सुहाग मोय दै । मैं तौ बच्चा हूँ । मोपै गलती है गई मेरौ सुहाग अमर करदै । मइया अब तौ मोय तेरौ ई आसरौ ऐ । चौथ मइया बापै खुश भई । बाते कही कै देख बेटा, तेरी सबत छोटी भाभी की कन्नी उंगरिया में इमरतु ऐ सो वापै उंगरिया चिरवाय कै अपने आदमी पै छिड़कवइयो । जे जिन्दौ है जाइगौ । बानैं ऐसोई कर्‌यौ । बाकी भौजाई नें अपनी कन्नी उँगरिया चीर कै बाकौ खून वापै छिड़क दियौ । जब बो जिन्दौ भयौ । हे चौथ मइया ! जैसे तैनें वापै किरपा करी ऐसेंई सबन पै करियो ।

(15) सकट–चौथ

दौरानी–जिठानी हतीं । दौरानी गरीब और जिठानी पइसा बारीई । दौरानी जिठानी के गोबर कूड़ौ करबे जायौ करती । एक बार सकट चौथ कौ त्यौहार आयो । वो विचारी दुखी भई कै सकट चौथ कूँ तौ मोय सकट देवता की पूजा करनी चाहिए, नौकरी कैसे करूँ । तौ वो जिठानी के नाँय गई । बाके मर्द नैं जई बात पै वाय मारौ, पीटौ । रात कूँ झट्ट देसीना सकट देवता आये, बिन्नें कही कै मोय भूख लगी ऐ, दौरानी बोली कै सूखी रोटी रखी है, खाय लै । फिर बिन्नें कई कै टट्टी जाऊँगी तौ बानै कही कै अब जाय टट्टा हू लगि आई घर के चारों कौनैन में करकै मो अभागिनी के कपार ते पौंछ दै गनेस जी नै बाके मूँड़ पै चूतड़ रिगड़ दिये । सबेरे तौ सब जगै सोनों चाँदी है गयौ । जिठानी ऐ जलन है गई । अगली साल बुऊ अपने मरद ते झूठ मूठ कूँ पिट कै बाहर बैठ गई पती ने खूब नाई करी कै बाबरी काहू की नकल नहीं करनी चहिऐ, पर बो न मानी । सकट देवता आये तौ बानैं कही कै महाराज खूब पकबान धरे हैं, चक्क खाऔ और टट्टी लगै तौ मेरे घर में टट्टी कर दीजों । मेरे म्हौं ते पौंछ दीजौं । सकट देवता नैं ऐसोई कर्‌यौ । बाके सबरे घर में बदबू ही बदबू फैलि गई ।

जब बाके खसम नें पीटी कै हरामजादी, जब तौ मैने तू नाँय पीटी पर अब मैं तोय जरूर पीटुंगो, वो विचारी गरीबु ई, जा मारै बानैं ऐसौ कर्‌यौ, परि तेरे पास पइसा होंत–सोंत ऊ तू ढ़ोंग करि रई । काई ऐ देख कै जलवे कौ जेई नतीजा होय ।

(16) गनेस जी की कहानी

एक दिना गणेश जी चौंटी में तीन चामर और खौंचि में दूध लै कै डोल रहै कै कोई खीर कर देओ कोई खीर कर देओ । एक डोकरी देखि रही । बानैं कही कै ला बेटा मैं करूँ तेरी खीर । जब बानें नैंक से बरतन में वो सामान धर्‌यौ तौ गनेसजी बोले कै खूब बड़ौ कढ़ाव चढ़ाय दै । बानैं खूब बड़े कढ़ाव में चामर और दूध धरि दिये । ए बो तौ उफन उफन कै सिगरौ कढ़ाव भर गयौ । वो भागी–भागी गनेस जी के पास गई कै चल बेटा तेरी खीर बनि गई, खाय लै । गनेस जी नें कहीं कै मइया मैंनें तौ खीर खाय लई । तेरी भऊ गर्भवती ऐ बानैं मेरौ नाम लैकै खीर खाय लई तौ मेरौ तौ पेट भरि गयौ । अब तौ वो खीर बीतैई ना । डोकरी नैं खूब बामन जिमाए, बाँट दई तऊ न बीतै, गनेस जी ते पिरार्थना करी कै हे गनेस जी महाराज ! अपनी माया कूँ समेटौ तौ गनेस जी नें अपनी माया समेंटी । फिर वा डोकरी के घर में धन इ धन करि दियौ । बोले, तेरे चारों कोनेन में धन गढ़ि रह्यौ है । तू और तेरी बहू खोदिंगी तौ धन और दूसरौ खोदैगौ तो कंकड़–पत्थर । डोकरी और बहू खोदि–खोदि कै धन निकार रहीं हीं । राजा ऐ मालुम परी तौ राजा नें अपने आदमी माँ खोदवे कूँ भेजे । पर राजा के आदमी खोदें तौ–तौ निकरै कंकर पत्थर और डोकरी और भऊ खोदै तौ धनसम्पत निकरै । राजा के दूतन्नें कही कै जितौ गनेस जी को माया ऐ जापै तौ गनेस जी टूटे हैं । जैसे वा डोकरी पै गनेस जी नें किरपा करी ऐसेई सबपै करैं ।

(17) भइया दौज

एक बार भइया दौज कौ त्यौहार आयौ । जमराज अपनी जमपुरी मैं ए । बिन्नें ऊ अपनी भैन जमुना जी की यादि आयी । बिन्नें सोची कै धरती पै भैनि ते मिलबे जलनौ चहियै । सो वे न्यां आये । जमुना मइया बड़ी खुस भई कै मैरौ भइया

आयौ ऐ । उनकी खूब खातिर करी । खूब खवायौ पिवायौ । रोरी चामर ते तिलक कर्‌यौ । जमराज नैं खुसी है कै जमना मइया ते कई कै भैना वरदान माँग, जो तू मांगैगी, बुई तोय दुंगो । जमना मइया नै कही कै भैया मोय कछू नाँय चइयै मेरे न्यां काऊ बात की कमी नाँय । जमराज बोले आज तौ तोय माँगनो ई परैगो मैं तोय कछू दिये बिना नाँय जाऊँगौ । जमना जी नै कई कै जो मेरे जल में अस्नान करै बाय तू जमलोक मति लै जइयो । जमराज नै कई ऐसे तौ मेरौ जमलोकइ खाली है जायगौ हाँ मैं तोय जि बरदान दऊँ कै जो भइया भैन, भइया दौज के दिना संग–संग न्हामिंगे विसराम घाट पै, और भइया भैन केई जैमेंगौ बाय मैं नाँय लै जाऊँगो । तब ते अब तलक सबरे देस के भैया–भैन दौज के दिना मथुरा में विसराम घाट पै संग–संग हाथ पकर कै अस्नान करैं ।

(18) अनन्त–चौदस

एक राजा ओ । बाकी रानी नें अनन्त चौदस पै अपने हाथ में अनन्त कौ डोरा बाँध्यौ । राजा जई बात पै रिस्याय गयौ । बानैं रानी के हाथ में ते डोरा खोल कै चूल्हे में डार दियौ । अनन्त भगवांन नें किरोध कियो । राजा कौ धन–खजानौ लुटि गयौ । बारह बरस कौ दुख झेलि लियौ । जब अनन्त भगवान आये, राजा ने छमा माँगी, महाराज गलती है गई । भगवान खुस है गए, बोले कै अब मेरी पूजा करियो । राजा नें पूजा करी । राजा की धन–दौलत जैसी ही, फिर वैसी है गयी । फिर अनन्त चौदस कौ डोरा बाँध्यौ राजा नें पूजा करिकै छमा मौंगी कै महाराज , मोपै गल्ती है गई, मोय माँफ करौ । जब अनन्त भगवान् पिरसन्न भये । फिरकत्ता रानी अनन्त भगवान कौ डोरा बांधबे लगी ।

(19) शिवरात्रि

एक बार एक चोर संकरजी के ऊपर बँधे पीतर के घण्टाऐ चुरायवे आयौ । घण्टा ऊँचौ हतो सो वु चोर संकरजी के पिंड पैई चढ़ि गयौ । बाकौ बापै चढ़नौ, और सिवजी कौ पिरसन्न होनौ । बोले भइया वरदानु माँगि । चोर नें कही कै

बाबा मैं तो चोरी करिबै आयौ हतौ, तू कैसे वरदान माँगिबे की कह रह्यौ ऐ । संकरजी नें कही कै रामन्नें तो मोपै अपनौ सीसई चढ़ायौ, तैनें तौ अपनौ सिगरौ सरीरइ चढ़ाय दीनौं । ज्या मारै मैं तोपै प्रसन्न हूँ, बोल, तोय कहा चहिऐ । बानें कही बाबा मोय कछू नाँय चहिऐ । तौ बाबा नें कही कै मेरौ पिरगट हौनों खाली नाँय जाय सकै । मैं तोय वरदानु दऊँ जा तू मरिवे के बाद मेरे लोक में आबैगो ।

(20) अहोई अष्टमी की कथा

एक बइयर कै छै द्यौरानी–जिठानी हीं । एक दिना बे सब संग–संग मट्टी खोदबे गई । मट्टी खोदते में बाके फावरे ते एक स्याहू के अंडा बच्चा कट गए । तौ अहोई मइया बापै रिस्याय गई । जब बाकें कोई बच्चा होय तौ बो बाके बच्चन कूँ लै जाय । बो हर समै रोती रहै कै कब तलक जि मेरे फूल से बच्चान कूँ लै जाती रहेगी । दौरानी जिठानीन नें वाकौ नाम सदरोमनी रख दियौ । एक पारोसिन नें वाय बतायौ कै देख अबकैं अहोई आठें कूँ निराहार बर्त करियो और बिटौरा में बेटा जनियो । नांद में कढ़ी , दूध भरकै रख दीजो, स्याहू मइया हू आवैगी । जब वो आबै तौ बाके जूँआ देखियो । फिर बाते बाके कान की तुरपुती माँग लीजो । वाने ऐसेइ सब कर्‌यौ । आधी रात कूँ अहोई मइया आई तौ बानें सब कछु वैसोई कर्‌यौ जैसौ परोसिन नें बतायौ हतो । फिर जुआँ देखेवे लगी । जब बानै कान की तुरपुती माँगी तौ मइया ने कही कै निकार लै, सोई कान में ते बाके सबरे बच्चा निकरि आये ।

(21) आसमाता की कथा

एक राजा कौ एक राजकुमार हो । वो बड़ौ बदमास ओ । जब बइयर कूआ पै ते पानी लातीं तौ बू सबनके मटकान कूँ फोर देतौ । राजा नें उनकूँ पीतर के मटका बनवाय दिये तौ राजकुमार सीसे के गिल्लन ते फोर्‌यौ करै । अब तौ सब बइयरन नै राजा ते सिकात करी कै राजा साहब तुम अपने या राजकुमार कूँ कछू सजा देओ, हम तौ याते आँती है गई , जो तुमने याय दण्ड नाय दियौ तौ हम गाम छोड़ कै चली जाएँगी । राजा नैं रिस्याय कै बाय देस निकारौ दै दियौ । वो जंगल में निकर

पर्‌यौ । म्यां पै वाय तीन डोकरी मिलीं । राजकुमार नें घोड़ा पैते चाबुक घुमाई तो तीनों बैस करिवे लगीं कि मोकूँ राम–राम करी है । कोई कहै मोकूँ करी है । राजकुमार नै पूछी कै च्यों भाई जि कैसा झगड़ा हैं, तौ उनने कही कै जे बताऔ कै तुमने कौन कूँ राम–राम करी है । तौ बानैं कही कै तुम सब अपनों अपनो नाम बताऔ । एक नैं भूख माई बतायौ, एक नैं नींद माई बतायौ और एक ने आसमायी बतायौ। पर राजकुमार नें कही कै मैने तौ आस माई ऐ राम–राम करीऐ । आसमाई खुस है गई । वाय चार कौड़ी दई कै जहाँ तू चौपड़ खेलैगौ म्वई जीत जायगौ । राजकुमार ते एक गाम कौ खेल्यौ तो राजकुमार जीत गयौ, जाते खेलै, बई ते जीत जाय । हल्ला है गयौ । म्वां के राजा नें सुनी कै एक अच्छौ खिलाड़ी आयौ ऐ तौ खेलबे कूँ बुलायौ । राजकुमार खेलवे गयौ और जीत गयौ । एक मन्तरी नें कही कै महाराज जाय अपनी बेटी व्याहि देउ । राजा की राजकुमारी ते बाकौ व्याह कर दियौ । कछु दिना म्वां पै रहकैं राजकुमार अपने देस चल्यौ गयौ खूब फौज के संग, खूब दहेज मिल्यौ हो । म्वां पै बाके बाप नें सोची कै कोई राजा मोपै चढ़ाई करिवे आयौ है । पर बो तौ बाकौई बेटा हो । राजा रानी विचारे बेटा के दुख में अंधे है गये ए । बेटा के आमत खैमई पट्ट बिनकूँ दीखवे लगि गयौ । जैसौ आसमाता नें वाय दियौ, वैसौ सबै देय ।

(22) दूबरी सातैं

एक साहूकार हतौ । बाके सात बेटा ऐ । पर जब वो काऊ बेटा कौ व्याह करतौ बोई बेटा मर जातौ । ऐसेंई करत–करत बाके सिगरे बेटन में ते एकई बेटा बच्यौ । एक दिना बाऊकी सगाई है गई, ब्याह जैसें–जैसें पास आवै, वैसेही वैसे उनके करेजा में धुकुर–धुकुर होय। मेहमान जुरि रहे ब्याह के । ब्याह के दिना जब बाकी बुआ आय रही तौ बाय एक डोकरी मिली । बो चाकी चलाय रही । वो बाते बोली कै डोकरी–डोकरी जे का करै, कै दीखै नाँय चाकी चलाय रही हूँ, कै का पीस रही है, कै दीखै नाँय का पीस रही हूँ, मैं चून पीस रही हूँ । मइया ! तू चून क्यों पीस रईए । बाने कही कै देखि, तू अपने भतीजे के ब्याह में जाय रही है, कै हाँ । बानें कही कै

तेरौ भतीजौ घर ते बाहर निकरतई दीवार गिरवे ते मरि जाबैगौ । म्वाँ ते बच गयौ तौ रस्ता में पेड़ गिर जायगौ, मऊँ ते बचि गयौ तौ ससुरार में किबार के गिरबे ते मर जायगौ । कै तौ जि कैंसें बचि सकै, उपाय बताऔ, बाने कीनी कै जो तू अपने भतीजे की बरात पीछे के दरवज्जे ते लै जाय, पेड़ के नीचै बारात न रुकन देय और फेरन के समै एक कटोरा में दूध भरिकै रख देय और ताँत कौ फाँसौ बनाय के रखै और जब स्याँप आवै तौ वाय बाँध देय और फिर बाकी स्यापिन अपने स्यांपै ढूँढबे आवै तौ वापै सबरे भतीजेन्नें जिन्दौ करबाय लेय तौ कछू है सकै । भूआ भाजी–भाजी गयी । बानै जिई सबरे काम करे । बरात के निकरतइ दरबज्जौऊ गिरौ, पेड़ऊ गिरौ, पर बो बच गयौ । स्याँपऊ आयो । स्याँपै बानैं बाँध दियौ । स्याँपिन आई तौ बापै अपने छेऔं भतीजे लै लिए । तबइते दूबरी मइया की पूजा करी जाय । वा डुकरिया कौ नाम दूबरी ओ । बोलो दूबरी मैया की जै ।

(23) भैया पाँचैं

एक बइयर हती बु गुलाब की पंखरी सी मलूक ही । बाकी सासु वाय दुख दैती, हर बखत कडुए बोल बोलती रहती । बाकै भइया नाऔ । एक बेटा हतो । एक दिना वा बेटा नै बुहारी की सींक फैलाय दई । बच्चई हतो सो बाकी दादी बाते रिस्याई । बहू ते बोली कै अपने छोराय सम्हार कै नाय रख सकै, ऊधम करतौ फिरै । तेरौ भइया का सौने की सींक दै जायगौ जो जे झाड़ू की सींक ऐसैई फैला दई । अब बो बिचारी रोबै । सास नें बाय बिना रस्सी के कूँआ ते पानी लैबे भेज्यौ । म्वां पै एक करियलु साँपु बाय पायौ । बानै कही कै अरी बहन तू च्यों रोबै । बानैं रोते–रोते कही, भइया मोकूँ-मेरी सास बहुत दुख देय, बाय सब हालु सुनाय दियौ । साँपु नें बो अपनी बहन बनाय लई । बोलौ–" आज ते तू मेरी बहन धरम की और मैं तेरौ भइया । तोय काहू बात की कमी नाँय । मैं रात कूँ तेरे घर की छत्त पै सौने की सींक धरि जाऊँगौ और तोय लैबे आऊँगौ । सास ते कहि दीजो कि जे मेरे चाचा कौ छोरा है । बानें ऐसोई कर्‌यौ । साँप बाय अपने बिल के ज्यौरै लै जाइके बोलौ मेरी पूँछ

पकरि लै । सो बो झट्ट देसीना बाके महल में चली गई । बाने अपनी मइया ते कही कि जे मेरी धरम की बहन है, याहि काहू बात की कमी नहीं होनी चहिए । साँपु की मइया बाते बेटी–बेटी कहती । एक दिना वो स्याँपिन के बच्चान कूँ दूध सीरौ करि रही, तौ वो दूध बच्चान पै गिर गयौ । बच्चा रिस्याय गये । मइया नें कही, देखौ ऐसे नाँय करैं, जि तुम्हारी बहन है जैसे जाय लाये बैसैई विदा करौ । खूब सम्पत्ति दैकै बिदा करी । घर आयी तौ खूब सोनौ–चाँदी, हीरा–पन्ना लैकैं आई, सास ते कही कै स्याँपु भइया कै ते आई हूँ । सास ने कही कै मोय दिखा तेरे बाप भइया कौ घर, पर जब बानै अपनी सासै म्वाँ पै लै जायकै दिखायौ तौ कछू न पायौ, भिट्टौ हू न मिल्यौ । ऐसैं स्याँपु नें भइया बन कै बा बइयर की रक्षा कीनी ।

(24) ओघ द्वादशी (1)

एक सास बहू हतीं । एक दिना ओघ द्वादसी कूँ सास नै कही कै भऊरी मैं पूजा कौ सामान लै आऊँ तू धानूरा–पानूरान्नें राँधि लीजौ, भऊ बाकी कछू ऐसी ही बहतल सी हती, बाने कहा काम करौ कै अपने दोऊ जैंगरा रांधि लिए । बाके जैंगरन कौ नाम धानूरा–पानूरा हतो । सासु आई तौ बाते पूछी कै च्यौं री बहू, धानूरा–पानूरा रांधि लिए का । कै हओ माताजी दोनों रांधि लिए । जब बानें देख्यौ तौ बड़ी दुःखी भई कै है अकलमंद, अब गाय आबैगी तौ का होयगौ, तैनें तो गजब करि दियौ । मैने तौ तोते धानि राँधिवे की कही ई ।

सासु नैं वो मरे भए जैंगरा एक घड़ा में धरि कै गाढ़ दये जामैं बो रंधि रहे हे और फिर पिराथना करी कै है भगवान अब मेरी गइया विचारी कैसें धीर बांधै । भगवान की माया, संजा कूँ जब गइया आई तो गइया रंभाई । झट्ट वे दोनूँ जैंगरा गढे भए घड़ा में ते अम्मा–अम्मा करते निकसि आये ।

(25) ओघ द्वादशी (2)

एक राजा की रानी ई । वो गाम ते दूर ओघ लैवे जायौ करती । म्वां पै सिगरी बइयर बानीन्नें बाते कही कै रानी जी तौ राजा साब ते कह कै अपने गाम मेंई

ताल खुदवाय सकौ । रानी बोली कै जि बात तौ ठीक है । रानी नै राजा ते कही और राजा ने झट्ट ताल खुदवाय दियौ । राजा कूँ कहा देर लगै । पर बामें पानी न निकरै । जब बड़े–बड़े पंडतन्नें कही कै जामें पहल–पैलौठी के बेटा बहू की बलि लगैगी जब जामें पानी आवैगौ । रानी नें कही है मेरे बहू बेटन्नें ले जाऔ बलि देवे कूँ पर ताल में पानी आमनौ चहियै । बलि दई गई, राजा ने बाके बहू–बेटान की बली दै दई, अब तौ तालाब पानी ही पानी ते भरि गयौ ।

अगली साल फिर जिइ बर्तु आयौ । रानी नें कही कै राजा साब–राजा साहब मोकूँ तौ तलाब के बीच में ते दूब लायकैं देऔ । राजा नें कही कै अभाल लै । सोई राजा गयौ, म्वाँ पै जाय कैं राजा नें जैसे ही दूब उखाड़ी सोइ दूब के संगई बाके बहू–बेटा खिंचे चले आये ।

(26) भैया दौज

एक बुढ़िया ही । बो अपने पीहर गई तौ अपनी बहू से कह गई कै नौनौ तौ जोड़ रखियो और पौनौ कात रखियो । बाकी बहू पेट से ही । सो नौने ऐ खाय जाती और पौने ऐ उड़ा देती । अब सास आई तौ बाय डर लग्यौ तौ बानै झूठ बोल दई कै नौने ऐ तौ कुत्ता खाय गए और पौनौ उड़ गयौ । कुत्तान्नें सोची कै यानैं हमारौ झूठौ नाम लगायौ सो हम भी याकौ झूठौ इलजाम लगाएँगे । तौ उननें राजा की मोचड़ी लायकैं बाके पास डाल दई । बुढ़िया ने सोची कै याके पास तौ राजा आवै । बानैं अपने लड़का से कही कै याय मार कैं याकी आँख लै आ । बो बाय लैकैं मारबे कूँ जाय रह्यौ तौ बाय महादेव–पारवती मिले । उन्नें कही जाय कहाँ लै जाय रहौ है । तौ बानैं सारी बात उन्नें बताय दई । महादेव जी ने कही, देख जाय मारे मति, ये मृग की आँख अपनी मैया कूँ दै दीजौ । और जाय विटौरा में बिठाय दीजौ । बानै ऐसौ ही करौ, बो लै जायकैं बिटौरा में बैठाय दई और मैया से कह दई कै अब मैं चार की जगह आठ रोटी खायौ करुंगौ । अब बो चार रोटी तौ खुद खा लैतौ और चार अपनी बहू कूँ दै आतौ । बाके बिटौरा में लड़का भयौ । बा बुढ़िया से बाके लड़का नै कह

दई कै मैया विटौरा में साँप बैठौ है तू बामें मति जइयो । दौज पै कुम्हारी कूड़ौ–कचरौ लैबे आई तौ बुढ़िया नै कह दई कै मेरे विटौरा में तौ साँप बैठौ है, तू ही निकार ला । बो गई तौ बामैं बाकी बहू ऐ बैठी दैख कै कही कै बुढ़िया बड़ी जान–जुगारी है, बिटौरा में जापौ कर्‌यौ है । तौ बुढ़िया बोली कै भैनी ! मैने तौ अपनी बहू अपने हाथन से मरवाय दई तौ कुम्हारी बोली देख तौ सही आय कै । देखते ही बुढ़िया खुस है गई और बाके पामन में गिर पड़ी ।

(27) सकट चौथ

एक मैया–बेटा हे । बाकी मैया सकट चौथ कौ ब्रत रखती तौ बाके लड़का कूँ कोई ने सिखाय दयौ कै तेरी मैया तौ खायबे कूँ गटक चौथ करै । बो लड़का नाराज है कै चलौ गयौ । बाकी मैया बोली कै बेटा ये जौ तू लै जा, जब तोपै संकट पड़ै तौ इन्नें काम में लै लीजो । बो इन्हें लैकै चल दीयौ । एक गाम में पहुँच्यौ वहाँ एक बुढ़िया रोय रही क्योंकै वा गाम में एक आदमी रोज बलि लगतौ । आज बाके लड़का कौ नम्बर हौ । बानै कही मैया रोय मति मैं चलौ जाऊँगौ । तेरे लड़का की जगह पै । मोय तू पुआ–मगौंड़ा पेट भर कै खबाय दै । बानै कही कै बेटा खाय लै । सुबह होते री राजा के सिपाही बाके लड़का कूँ लैबे आए । बुढ़िया नै बाय जगायौ । एक बार तौ बो उठौ नहीं, बो बुढ़िया अपने लड़का ऐ उठायबे लगी तौ बो उठकै बोलौ मैया मैं जाय रह्यौ हूँ । बो चल दीयौ । जब बाय जलते भए आवा में बैठायौ तौ बानैं अपने चारौं तरफ जौ डाल दए और बोल्यौ जो मेरी मैया सकट चौथ करती होयगी तौ मैं बच जाऊँगौ और जो गटक चौथ करती होयगी तौ मैं मर जाऊँगौ और बो बा जलते आबा में बैठ गयौ । जब बो आवा पक गयौ तौ बाय बो निकारबे लगे तौ बो बोल्यौ भैया धीरे से । सिपाही डर गए, कै जामैं तौ जितने मरे सब भूत बन गए । धीरे–धीरे बाय निकालौ तौ बो बड़े आराम से बैठ्यौ, बाके चारों तरफ जौ फैल रहे । झट्ट बाई समय बो अपनी मैया के पास आय गयौ । बाकी मैया सकट चौथ कौ ब्रत रहती तौ बाके प्रभाव से बो बच गयौ ।

(28) शनि देवता की कथा

एक बार नौ ग्रह आपस में एक दूसरे ते लड़ रहे कै हममें कौन बड़ौ है । सब अपने मन में बड़ौ बननौ चाह रहे । जब कोई निन्नें (निर्णय) न भयौ तौ जा बात पै एक मतौ भयौ कै उज्जैनी में राजा बीर बिक्रमाजीत रहै, बो बड़ौ सत्तबादी है, बइते जाय के पूछनौ चहिए । जा बातै सोचकै सब ग्रह राजा बीर बिक्रमाजीत के पास उज्जैनी नगरी में गए । जब सब ग्रह आए तौ राजा बड़ौ खुस भयौ कै आज मेरे कैसे भाग्य हैं कै सबरे ग्रह देवता मेरे घर पधारे हैं । राजा नै उनकौ खूब सत्कार कियौ । तब सब देवता बोले कै "राजा ! तू हमेशा सत्त बोलै, आज तू हमारौ न्याय कर कि हम सबमें सबन्ते बड़ौ कौन है ।" राजा बोलौ "महाराज ! मेरे लिए तौ तुम सब पूजनीय हौ, सब बड़े हौ मैं कौन कूँ बड़ौ कहूँ ।" देवतान्नें कही कै " राजा ! आज तौ हम तोपै जे न्याय करबाय कै ही जांगे ।" राजा विचारौ बड़ी परेसानी में पड़ गयौ । बानै कही "अच्छा भाई ! ऐसौ करौ कै सब अपने–अपने आसनन पै बैठ जाऔ ।" अब सबरे ग्रह अपने–अपने आसन निकार कै बापै बैठ गये । सूरज सौने के आसन पै, चंदा चाँदी के पै, जाइ तरह सब ग्रह अपने–अपने आसन पै बैठ गये । सनिचर देवता अपने लोहेके आसन पै बैठे । अब राजा ने अपने मन में विचार कियौ कै सबते छोटौ आसन तौ लोहे कौ होय । राजा ने तौ मन में सोची पर सनि देवता समझ गए । बु झट्ट राजा ते बोले कै राजा ! तैने मोय छोटौ जान्यौ, अब मैं तोय देख लुँगो । राजा बोलौ "महाराज" मैनें तौ कछू कही नहीं, मन में जिही सोच रहौ कै लोहौ सबते छोटी धातु है मैं आपकूँ कैसे छोटौ बताय सकूँ ।" परन्तु शनि महाराज तौ क्रोधित है गए । बाकी सब ग्रह तौ खुश हैते भए चले गए पर सनीचर देवता राजा ते कह गए कै " राजा, जा बात कौ फल तोय जरूर मिलैगौ ।" राजा नें कही "महाराज, जैसी आपकी इच्छा ।"

अब कछू दिना की छेटी दैकें सनीचर जी एक घोड़ा बेचन बारे कौ भेस बनाय कै आए । राजा अपने महलन में भोजन पै बैठ्यौ ही ओ । झट्ट नौकर नै कही

कै एक घोड़ा बेचबे बारौ आयौ है । आय कै देख लेऔ । राजा भोजन कूँ छोड़ कैं घोड़ा देखने गयौ । घोड़ा बारे नें कही कै महाराज सवारी कर कै तौ देखौ, कैसौ घोड़ा है । राजा नें एक बढ़िया कारौ घोड़ा छांट कै बापै सबारी करी । जैसे ही लगाम खींची, घोड़ा तौ हवा की रफ्तार ते भागवे लगौ । भागते–भागते बानै राजा कूँ एक बियाबान जंगल में गिराय दियौ । घोड़ा अन्तर्धान हैगौ । अब राजा म्हाँ भरी दुपहरी में पड़ौ । बाय प्यास लग रही, एक आदमी दीखौ तौ बाते कही कै, "भैया मोय कोई गाम कौ रस्ता बताय दै, मैं गैल भटक गयौ हूँ ।" बानै बाय रस्ता बताय दियौ । अब तौ राजा ने एक दुकानदार के यहाँ जाय कै बाते पानी माँग कै पियौ और सुस्तायबे लगौ तौ दुकानदार का देखै कै बाकी तौ बिक्री बढ़ गई । बानै राजा ते नाम पूछौ, राजा बोलौ, "भाई मेरौ नाम बीका ऐ ।" दुकानदार सेठ नै बाय नौकर रख लियौ । अब तौ बा सेठ कौ कारोबार चमक गयौ । खूब ठाठ है गयौ । राजा सेठ के यहाँ ही रहबे लगौ । एक दिना राजा बा सेठ के संग भोजन कर रह्यौ तौ का देखै कै एक दीबार पै एक काठ की मोरनी सेठानी के हारै निगल रही । राजा देखतौ रहौ । जब बु मोर पूरे हार कूँ निगल गई तौ सेठानी आई और बोली कै मेरौ हार कहाँ है । पूछ ताछ कर कैं सेठ नै राजा के ऊपर ही इलजाम लगायौ । राजा नै खूब मना करी पर कौन सुनै । म्हाँ के राजा के यहाँ न्याय पहौंचौ । राजा ने हुकुम दियौ के जाय चौरंगा कर देओ । अब तौ राजा जंगल मे चारों हाथ पाम बाँध कै कील ठोक कै डार दियौ । चील–कौआ आमैं और खोंट मार जाँय । सो बो टोंटौ और लँगड़ौ हैगौ । एक दिना एक तेली म्हाँ ते निकरौ तौ बाय बापै दया आय गयी । बानै राजा ते कही, " महाराज, आज्ञा होय तौ मैं बा चौरंगा कूँ लै जाऊँ, बैठौ–बैठौ घानी पेलौ करैगौ ।" राजा नै आज्ञा दै दई तौ बो बा चौरंगाऐ घर लै गौ । अब तौ बो चौरंगा घानी पै बैठौ–बैठौ घानी पैलै और मल्हार गावै । म्हाँ राजा की राजकुमारी नै जब बो मल्हार सुनी तौ सखियन ते खोज करबाई कै देखौ इतनी अच्छी मल्हार जे कौन गाय रह्यौ है । सखियन नै तलास करकै कही कै " बो चौरंगा गा रहौ है । " अब तौ बो खटपाटी

लैकैं पड़ गई कै ब्याह करँगी तौ चौरंगा तेई ।" राजा बड़ौ परेसान कै, " जो तेरी ओर आँख उठाय कै देखै, आँख फोड़ दऊँ, कछू कही होय तौ म्हौं पजार दऊँ । पर जा जिदै छोड़ । " पर राजकुमारी की जिद्द के आगे बाकी कछू नाँय चली और चौरंगा तेही बाकौ ब्याह करनौ पड़ौ । रात में जब चौरंगा राजकुमारी के संग सोयौ तौ सनी महाराज नै सपनौ दियौ कै, "बोल राजा कैसौ दुख पायौ ? राजा बोलौ ! महाराज अब मोय माफ कर देओ और जेसौ दुख मोय दियौ है, बैसौ काहू कूँ मत दीजों ।" सनी महाराज नै बाय अच्छौ कर दियौ । अब तौ बानै राजकुमारी कूँ सब बात बताई और बाते कही कै, "मैं उज्जैनी कौ राजा बीर बिक्रमाजीत हूँ । " तौ राजकुमारी बड़ी खुस भई । सबेरे म्हाँ के राजा ऐ जब मालुम पड़ी तौ बो बहौत सरमिन्दा भयौ कै मैने आपकूँ कैसौ दुख दियौ । सेठ कूँ मालुम पड़ी तौ सेठ भागतौ–भागतौ आयौ कै, " महाराज जो सजा दैनी होय, मोय दै देओ । " राजा बोलो, "भाई जे तौ सनी महाराज की दसा ही, तू प्रसन्न रह, कोई बात नहीं है ।" सेठ बोलौ, "नाँय महाराज मोय तौ जब सन्तोस आबै जब मेरे घर भोजन करबे पधारौ और मेरी बेटी ते ब्याह करौ ।" राजा बोलौ, " अरे भाई मैने तौ ब्याह कर रखौ है " तौ सेठ नै कही, "महाराज कछू भी समझौ, मैं तौ जबही सन्तोस कर पाऊँगौ ।" सेठ की विनती राजा कूँ स्वीकार करनी पड़ी । झट्ट दो–दो ब्याह करकैं अपने नगर कूँ पहौंचौ । म्हाँ पै जाय कै नगर में प्रवेस करबे ते पहले ही सनी भगवान की पूजा करी । फिर अपनी नगरी मैं गयौ । सनी देबता खुस भए और बाकूँ बाकौ राजपाट सौंप दियौ । राजा कूँ फिर बोही आनन्द भए । बालौ सनीचर देवता की जै ।

(29) हनूमान जी पै सनीचर की दसा

एक बार सनीचर जी हनूमान जी ते बोले कै मैं तुम पै लदूँगो । हनूमान जी नें कही कै भैया, मोपै लदैगौ तौ पछताबैगौ । सनीचर जी नाँय माने तौ बिन्ने कही, "ठीक है भैया, जैसी तेरी मरजी खूब सौक ते चढ़ जा । " झट्ट सनीचर देवता ने हनूमान जी पै अपनी चढ़ाई कर दई । बे हनूमान जी के मूँड़ पै बैठ गए । हनूमान

जी नै का काम करौ कै एक पहाड़ उखाड़ कै अपने मूँड़ पै बैठे सनीचर जी पै रख दियौ । अब तौ सनीचर जी घबराए बोले, " भैया जे का धर दियौ, मैं दबौ जाऊँ जल्दी उतार ।" हनूमान जी बोले कै नाँय बैठौ रह । सनी देवता बोले, " अरे नाँय भैया मर जाऊँगो, जल्दी उतार ।" झट्ट हनूमान जी नै जैसे ही पहाड़ हटायौ । सनी महाराज कूद कै नीचै आय कै हाथ जोर कै ठाड़े है गए । हनूमान जी नै कही, " देख मेरे भगत पै कभी मत अइयो । " जब तेई जो हनूमान जी की पूजा करै, बापै सनी की दसा नाँय लगै ।

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

संस्कृत–ग्रन्थ :

1. दामोदर सातवलेकर–ऋग्वेद संहिता, चतुर्थ संस्करण, स्वाध्याय मण्डल, पारडी (गुजरात)
2. श्यामाचरण पाण्डेय–विष्णु शर्मा प्रणीतं पञ्चचतन्त्रम् , 1988 ई0 मोतीलाल–बनारसीदास, जवाहर नगर, नई दिल्ली ।

हिन्दी ग्रन्थ :

1. कृष्णदेव उपाध्याय–लोक–साहित्य की भूमिका,1965 ई0 साहित्य भवन, इलाहाबाद ।
2. तुलसीदास (गोस्वामी)–रामचरित मानस, 1942 ई0 गीता प्रेस, गोरखपुर ।
3. बलदेव उपाध्याय–वैदिक कहानियाँ, 1979 ई0 चौखम्भा ओरियण्टलिया, वाराणसी
4. मंगलदेव शास्त्री–भाषा विज्ञान, 1951 ई0 इण्डियन प्रेस लिमि0 प्रयाग
5. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी–ब्रज–लोक–साहित्य और संस्कृति, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. राहुल सांकृत्यायन–हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, 1979 ई0 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
7. श्याम परमार–भारतीय लोक–साहित्य, 1954 ई0, राजकमल पब्लि0 लिमि0, बम्बई

8. श्याम सुन्दर दास –भाषा विज्ञान, 1950 ई0
इण्डियन प्रेस लिमि0, प्रयाग
9. सत्येन्द्र– ब्रज की लोक–कथाएँ, 1947 ई0
ब्रज साहित्य मंडल, मथुरा
10. सत्येन्द्र– ब्रज–लोक–साहित्य का अध्ययन, 1948 ई0
साहित्य रत्न भंडार, आगरा
11. सरोजनी रोहतगी–अवधी का लोक–साहित्य, 1971 ई0
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

कोश :

1. जे0 काल्सन–एनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी, 1964 ई0
आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन
2. महेन्द्र चतुर्वेदी व भोलानाथ तिवारी–व्यावहारिक हिन्दी अंग्रेजी कोश
नेशनल पब्लि0 हाउस, नई दिल्ली
3. रामप्रसाद त्रिपाठी–हिन्दी विश्व कोश, 1968 ई0
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
4. आर0 सी0 पाठक–भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश, 1981 ई0
भार्गव बुक डिपो, चौक बनारस
5. वामन शिवराम आप्टे–संस्कृत हिन्दी कोश, 1966 ई0
मोतीलाल–बनारसीदास, दिल्ली
6. श्याम सुन्दर दास– शब्द सागर, भाग–8, 1971 ई0
नागरी मुद्रण, वाराणसी

पत्र–पत्रिकाएँ

1. अगरचन्द्र नाहटा–सम्मेलन पत्रिका, भाग 46,
2. भगवान सहाय पचौरी–ब्रज भारती, वर्ष–35, अंक–2
3. भगवान सहाय पचौरी–ब्रज भारती, वर्ष–35,
संयुक्तांक–3–4